Vol.36, Issue 4 | Price ₹35 | Annual Subscription ₹420

@NewsRotary /RotaryNewsIndia

October 2018

रोटरी
समाचार

Rotary

आत्मविश्वास की पुनःस्थापना

ROTARY SERVICE PROJECTS

VIDEO CONTEST

2018-19

Calling all **Rotary clubs in Zones 4,5 & 6A** to participate in this contest and win exciting cash prizes.

Club Presidents/Secretaries can submit one video (not more than **three minutes)** of the club's service projects implemented in the year, under The **Rotary Foundation's Six Areas of Focus:**

- **Peace and conflict prevention/ resolution**
- **Disease prevention and treatment**
- **Water and sanitation**
- **Maternal and child health**
- **Basic education and literacy**
- **Economic and community development**

The contest will be judged by an esteemed panel convened by RID C Basker.

The **top 3 entries** (from each of the **RI Zones of 4, 5 & 6A** India) will win the following cash awards:

1st Prize: INR 100,000

2nd Prize: INR 50,000

3rd Prize: INR 25,000

Rotary

The last date of submission of videos is **May 31, 2019.**

Video entries may be sent to **rotaryprojectsvideo@gmail.com** or mailed to **Rotary News Trust, Dugar Towers, 3rd Floor, 34, Marshalls Road, Egmore, Chennai - 600 008, Tamil Nadu.**

Alternatively, clubs can upload the video on **YouTube** and share the URL link to the above mail id.

Please include the following too:
Club Name and District, Contact Person and Email Id/Phone number, Name of the Video/Project and the URL Link.

Only Hi-res videos will be accepted. Videos can be in the format: **MOV, MP4 (MPEG4), AVI, WMV, FLV, MKV, VOB.**

विषयसूची

12 केरल की मदद के लिए रोटरी की त्वरित कार्यवाही
पूरे देश और दुनिया भर से रोटेरियन केरल में बाढ़ पीड़ितों की मदद को आये।

20 एक नया हाथ
जम्मू-कश्मीर में रोटरी द्वारा आयोजित किया गया कृत्रिम हाथ फिटनेस शिविर उन लोगों को जिन्होंने अपने हाथ खो दिया है, उन्हें एक नया जीवन प्रदान कर रही है

28 समय आ गया है कि रोटरी टी बी की चुनौती ले
रोटरी नेतृत्व भारत में यक्ष्मा पर स्पॉटलाइट डालते हुए विषय पर चर्चा करता हैं।

32 रोटरी-रोटारेक्ट तालमेल ज़रूरी
रोटरी नेताओं ने खास डीआरआरों के लिए दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम में उन्हें उतेजित किया।

42 चेन्नई के विद्यार्थियों ने किया नासा का दौरा
रोटरी क्लब मद्रास ईस्ट सरकारी स्कूल के बच्चों की प्रतिभा कि सराहना करता है और उन्हें दुनिया को देखने का अवसर प्रदान करता है।

52 उत्तर पूर्व में रोटरी का जादुई स्पर्श
पूर्वोत्तर में अन्य रोटरी क्लब राज्य समुदायों को वैश्विक अनुदान के माध्यम से बदल रहे है।

62 कथक - संस्कृतियों का एक संगम
इस प्राचीन शास्त्रीय नृत्य पर एक लेख।

68 एक पार्क जहाँ आप स्पर्श, महसूस और सीख सकते हैं
रोटरी क्लब मंजेरी ने नेत्रहीन बच्चों के लिए उपन्यास पार्क विकसित किया।

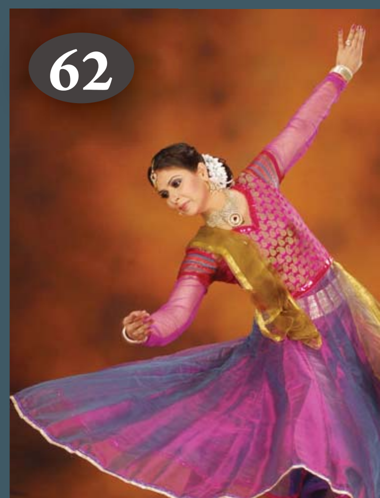

कवर परः वहीद खान, रोटरी क्लब जम्मू आस्था और जम्मू मिडटाउन, मंडल 3070 द्वारा आयोजित कृत्रिम हाथ शिविर के एक लाभार्थी।

एक प्रेरणादायक दान

TRF को 100 करोड़ का दान देने वाले रोटेरियन डी रविशंकर की उदारता पर उत्कृष्ट कवरेज के लिए बधाइयाँ। रविशंकर के परिवार जैसे परिवार से हम जिंदगी में केवल एक बार ही संयोग से मिलते है। भगवान उन्हें हमेशा स्वस्थ और खुश रखे।

रोबर्ट फ्रेंक्लिन रिगो
रोटरी क्लब बाजपे - मंडल 3181

एक बुजुर्ग व्यक्ति होने के नाते, मैं नियमित रूप से पत्रिका नहीं पढ़ता हूँ, लेकिन शीर्षक TRF के लिए *₹100 करोड़ का दान* ने मुझे आकर्षित किया। मैं रविशंकर के विचारों और धारणाओं से इतना अधिक प्रभावित हुआ कि मैंने इस लेख की प्रतियाँ अपने बच्चों और पोते/पोतियों को भेजी।

त्रिलोचन सिंह
रोटरी क्लब दिल्ली - मंडल 3011

रविशंकर के जीवन की कहानी चौंका देने वाली है और उससे मिला सन्देश यह है कि देना लेने से अधिक महत्वपूर्ण है। उन्होंने अपने आदर्श दान द्वारा रोटरी जगत को हिला कर रख दिया है।

अरुण कुमार दास
रोटरी क्लब बारीपदा - मंडल 3262

प्रत्येक रोटेरियन को डी रविशंकर को उनके द्वारा दिए गए ₹100 करोड़ के दान और उनकी सादगी के लिए सलाम करना चाहिए। यह कई लोगों को संस्थान के लिए मजबूती के साथ दान करने हेतु प्रेरित करेगा। उन पर इतना शानदार लेख लिखने के लिए बधाइयाँ। लेख आपके गवर्नरों से मिलिए दिलचस्प है। केन्द्रीय पृष्ठ पर नव-निर्वाचित डीजीयों की तस्वीरें भारत के नक़्शे पर प्रदर्शित करना एक नवीन और उपयोगी विचार है।

एस. रंगराजन,
रोटरी क्लब तिरुनेलवेली सबअर्ब्स - मंडल 3212

डी रविशंकर द्वारा संस्थान को दिए गए अनुपम योगदान के लिए आपने 8 पन्नों का कवरेज पेश किया है। वह कहते है, ''मैं केवल एक सहकर्मी हूँ और नेताओं का नेतृत्व नहीं कर सकता;'' जो रोटेरियनों के लिए एक महान सन्देश है। 14 वर्षों से एक रोटेरियन, मैं इस नेतृत्वकर्ता को सलाम करता हूँ जो पूर्वोत्तर और पाकिस्तान के लोगों तक पहुँच गया।

के देवराजन
रोटरी क्लब कोयम्बटूर ईस्ट - मंडल 3201

रविशंकर की कहानी ने मुझे हिला कर रख दिया! केवल उनके द्वारा दान किये गए ₹100 करोड़ ही नहीं, बल्कि उनके जीवन का सिद्धांत भी अत्यंत प्रेरणादायक है। मैं उन्हें और उनके परिवार को शुभकामनाएं देता हूँ।

अतुल भिड़े
रोटरी क्लब ठाणे हिल्स - मंडल 3142

डी रविशंकर के प्रेरणादायक भाव प्रदर्शन का एक शानदार कहानी के माध्यम से सुस्पष्ट विवरण पेश किया गया। सीखने के लिए सबक; हम में से बाकि लोग क्या कर सकते है।

नीलांजन डे,
रोटरी क्लब कलकत्ता भवानीपुर - मंडल 3291

रविशंकर द्वारा TRF को ₹100 करोड़ का दान दिए जाने पर लिखे गए एक बहुत ही भावनात्मक और असाधारण लेख को पढ़कर ख़ुशी हुई।

जी पी कैप्टेन देओधर
रोटरी क्लब नासिक - मंडल 3030

रविशंकर का योगदान प्रेरणात्मक है, और यह रोटरी के आदर्श वाक्य स्वयं से ऊपर सेवा को वास्तव में प्रदर्शित करता है। भगवान उन पर और उनके परिवार पर अपना आशीर्वाद बनाए रखे।

टी एन नज़ीमुद्दीन
रोटरी क्लब तेल्लीचेरी - मंडल 3202

शानदार विषय वस्तु

रोटरी न्यूज़ विषय वस्तु पढ़ने योग्य और पत्रिका उच्च क्षमता वाली प्रतीत होती है। शक्ति सिन्हा ने जिस तरह से अटलजी को चित्रित किया है उसके लिए उन्हें सलाम। रोटरी क्लब मदुरई नेक्स्ट जेन की नियोक्ताओं के साथ नौकरी तलाश करने वालों को जोड़ने की पहल का बड़े शहरों के उत्कृष्ट क्लबों द्वारा अनुकरण किया जाना चाहिए। रोटरी क्लब ग्रेटर तेजपुर द्वारा शुरू की गई जीवन का उपहार परियोजना, प्रशंसनीय है क्योंकि यह सीमाओं, जाती, पंथ और धर्म से परे है। शीला नाम्बियार द्वारा *क्या आपका प्रशिक्षक आपके लिए उपयुक्त* है फिटनेस के दीवानों के लिए आँखे खोल देने वाला है। यह जानकर अच्छा लगा कि 150 से भी अधिक देशों ने स्मारक रोटरी टिकटों को प्रकाशित किया है। इस कठिन समय में केरल के लोगों को दी गई सहायता प्रशंसनीय है।

एम टी फ़िलिप
रोटरी क्लब त्रिवेंद्रम सबअर्बन - मंडल 3211

RIPN सुशील गुप्ता से एक निवेदन

मैं RIPN - पद्द नामित सुशील गुप्ता से रोटरी की मानवीय परियोजनाओं को बढ़ाने का विनम्र निवेदन करता हूँ क्योंकि मानव संबंध कठिन दौर से गुजर रहे है। रोटरी हमारे प्रेम के बंधन, स्नेह और पारस्परिक सम्मान को मजबूत कर सकता है। मैं उनकी सफलताओं की कामना करता हूँ।

डॉ एनआरयूके करथा
रोटरी क्लब त्रिवेंद्रम सबअर्बन - मंडल 3211

60 वर्षों से एक धर्मार्थ नेत्र अस्पताल चलाने के लिए रोटरी क्लब चांदौसी को सलाम। लेकिन मुझे लगता है कि अस्पताल को गरीब मरीजों से 1000 से अधिक नहीं लेना चाहिए, क्योंकि इसके पास पर्याप्त आरक्षित निधि है। हम प्रतिवर्ष प्रति रोगी के लिए 1200 के हिसाब से 200 IoL प्रत्यारोपण कर रहे है।

पीडीजी शिवराज भार्गव,
रोटरी क्लब आगरा - मंडल 3110

2020-21 के लिए रो ई अध्यक्ष प्रत्याक्षी चुने जाने के लिए सुशील गुप्ता को बधाई। जब रो ई अध्यक्ष रेसिन मजबूत क्लबों से ''अधिक अच्छा'' करने के लिए कहते है, तो हमें युवा सदस्यों के साथ अधिक उत्साह पैदा करने के लिए और अधिक नए क्लबों की आवश्यकता है। *भारत से खसरा और रूबेला को खत्म करना* लेख सूचनात्मक। *मंडल गतिविधियों* अद्भुत है। रंगबिरंगे पृष्ठों के साथ एक गुणवत्तापूर्ण प्रकाशन के लिए संपादक के दल को सलाम।

पीआरएन चंद्र मौली

रोटरी क्लब बेरहामपुर मिडटाउन - मंडल 3262

एक अभिनव परियोजना

लेख *जल चक्की पानी पहुँचाने के कार्य को आसान बनाती है* ने हमें प्रभावित किया। रोटेरियन अमरीश दफ्तरी के नेतृत्व में एक बढ़िया, नवीन और उत्पादक परियोजना ने उन ग्रामीणों की ज़िंदगियाँ बदल दी जिन्हें बहुत लंबी दूरी तय करके पानी लाना पड़ता था। आपके संपादन में, *रोटरी न्यूज़* बढ़िया प्रगति कर रही है।

प्रमेश देव चौधरी

रोटरी क्लब गौहाटी साउथ - मंडल 3240

एक अद्भुत सम्मेलन लेख

लेख *टोरंटो में हर जगह रोटरी* (अगस्त अंक) के लिए धन्यवाद, जो एक स्पष्ट शैली में लिखा गया है और पढ़ने में अद्भुत प्रतीत हो रहा है। मैंने लेखक के साथ ब्रेकआउट सत्रों, हाउस ऑफ़ फ्रेंडशिप और रोटरी मैत्री का जश्न मनाने वाले संपूर्ण आयोजन स्थल की यात्रा की। 178 देशों का रंगीन ध्वज मार्च देखना और प्रसिद्ध वक्ताओं को सुनना आनंदप्रद था।

गीती बुजरबरुआह

रोटरी क्लब गौहाटी साउथ - मंडल 3240

बिगड़ा हुआ लिंग अनुपात

वर्तमान डीजीयों को प्रदर्शित करती हुई केंद्रीकृत तस्वीर में 40 अद्भुत डीजीयों के मध्य केवल दो महिलाओं को देखना परेशान करने वाला था। रोटरी को इस बिगड़े लिंग अनुपात को सुधारने के लिए कुछ करना चाहिए। हमारे क्लब में अगले कुछ वर्षों में क्लब के अध्यक्ष का पदभार संभालने के लिए दो महिलाएं तैयार है। हमें मंडल स्तर पर भी इसी तरह के परिवर्तन की आवश्यकता है।

वी जी देओधर

रोटरी क्लब नासिक - मंडल 3030

एक मर्मस्पर्शी सम्पादकीय

अगस्त अंक की संपादकीय *दिल टूटने का और उदारता का मौसम* गहरी पहुँच वाली है। रो ई अध्यक्ष बेरी रेसिन का सन्देश कि एक मजबूत संगठन के निर्माण की शुरुआत घर से करें, हमें रोटरी के सिद्धांतों का पालन करने एवं सबसे सम्मानपूर्वक व्यव्हार करने की याद दिलाता है। रो ई निदेशक भास्कर का सन्देश प्रेरणादायक था। रविशंकर द्वारा TRF को दिए गए ₹100 करोड़ के दान ने मेरे दिल को छुआ। अगस्त अंक सराहनीय था।

ओम प्रकाश मोदी

रोटरी क्लब रायगढ़ स्टील सिटी - मंडल 3261

रो ई सम्मेलन के साथ क्लब की विधान परिषद

अप्रैल अंक के लेख *परिकल्पना की तलाश* ने हमें झलक दिखाई कि रो ई अध्यक्ष बेरी रेसिन क्या सोचते है और क्या करना चाहते है। जब वह कहते है कि विधान परिषद (CoL) जैसी है वह रोटरी के लिए एक चुनौती है, तो वह उचित कहते है। परिवर्तन लाने के लिए पांच साल का इंतजार करना आज की इस तेजी से प्रगति कर रही दुनिया में अस्वीकार्य है। पिछली CoL में एक स्वीकार्य परिवर्तन लाया गया जब प्रस्तावों को अलग कर दिया गया और अब वे वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से वार्षिक स्तर पर लिए जाएंगे। पहले की तरह ही, रो ई सम्मेलन के साथ-साथ CoL को भी वार्षिक बैठक बनाया जा सकता है। यदि समस्याओं का समाधान करने के लिए यह वार्षिक बैठक होती है तो काम का बोझ काफी कम हो जाएगा। मंडल या ज़ोन स्तरीय प्रस्तावों/अधिनियमों की संख्या को सीमित करने और वीडियो कांफ्रेंस एवं अन्य तकनीकों का इस्तेमाल करने से बड़ी मात्रा में पैसे और समय की बचत होगी।

पीडीजी राजकुमार वैयापुरी - मंडल 3201

> ### सुधार
>
> सितंबर अंक के लेख *जयपुर रोटरी द्वारा एकजुटता का प्रदर्शन*, में फिजियोथेरेपी और डायलिसिस केंद्र की लागत गलती से ₹2 करोड़ की जगह ₹2 लाख वर्णित की गई थी।

सदस्यता अवरोधन महत्वपूर्ण है

हमारी सदस्यता में वृद्धि करने के लिए, अवरोधन महत्वपूर्ण है। क्लब छोड़ने वाले प्रत्येक सदस्य की सूचना मंडल समिति को दी जानी चाहिए और छोड़ने के कारणों का विश्लेषण किया जाना चाहिए। अक्सर सदस्य अन्य सदस्यों के साथ मतभेद होने के कारण क्लब छोड़कर चले जाते है। रोटरी में शामिल होने वाले पति-पत्नियों को 50 प्रतिशत की छूट दी जानी चाहिए।

राकेश भाटिया

रोटरी क्लब बेलूर - मंडल 3291

निदेशक सी भास्कर का सन्देश प्रेरणादायक है। रोटरी क्लब हैदराबाद गाचिबौली की छात्राओं को साइकिल देने और जरूरतमंदों को सिलाई मशीन देने की परियोजना उतनी ही प्रशंसनीय है।

नवीन आर गर्ग

रोटरी क्लब सुनाम - मंडल 3090

बेरी रेसिन के लिए रोटेरियन डी. रविशंकर द्वारा TRF के लिए ₹100 करोड़ का दान देना एक बढ़िया खबर है। यह प्रत्येक भारतीय के लिए गर्व की बात है।

एस मोहन

रोटरी क्लब मदुरई वेस्ट - मंडल 3000

अपने विचार संपादक को भेजें: rotarynews@rosaonline.org; rushbhagat@gmail.com **पर ई-मेल करें।**

Governors Council

RI Dist 2981	DG	S Piraiyon
RI Dist 2982	DG	Nirmal Prakash A
RI Dist 3000	DG	RVN Kannan
RI Dist 3011	DG	Vinay Bhatia
RI Dist 3012	DG	Subhash Jain
RI Dist 3020	DG	Guddati Viswanadh
RI Dist 3030	DG	Rajiv Sharma
RI Dist 3040	DG	Gustad Anklesaria
RI Dist 3053	DG	Priyesh Bhandari
RI Dist 3054	DG	Neeraj Sogani
RI Dist 3060	DG	Pinky Patel
RI Dist 3070	DG	Barjesh Singhal
RI Dist 3080	DG	Praveen Chander Goyal
RI Dist 3090	DG	Dr Vishwa Bandhu Dixit
RI Dist 3100	DG	Deepak Jain
RI Dist 3110	DG	Arun Kumar Jain
RI Dist 3120	DG	Stuti Agrawal
RI Dist 3131	DG	Dr Shailesh Palekar
RI Dist 3132	DG	Vishnu S Mondhe
RI Dist 3141	DG	Shashi Sharma
RI Dist 3142	DG	Dr Ashes Ganguly
RI Dist 3150	DG	Ramesh Vangala
RI Dist 3160	DG	Konidala Muni Girish
RI Dist 3170	DG	Ravikiran Janradan Kulkarni
RI Dist 3181	DG	Rohinath P
RI Dist 3182	DG	Abhinandan A Shetty
RI Dist 3190	DG	Suresh Hari S
RI Dist 3201	DG	A Venkatachalapathy
RI Dist 3202	DG	Dr E K Ummer
RI Dist 3211	DG	E K Luke
RI Dist 3212	DG	K Raja Gopalan
RI Dist 3231	DG	C R Chandra Bob
RI Dist 3232	DG	Babu Peram
RI Dist 3240	DG	Dr Sayantan Gupta
RI Dist 3250	DG	Kumar Prasad Sinha
RI Dist 3261	DG	Nikhilesh M Trivedi
RI Dist 3262	DG	Bhabani Prasad Chowdhury
RI Dist 3291	DG	Mukul Sinha

Board of Permanent Trustees & Executive Committee

PRIP	Rajendra K Saboo	RI Dist 3080
PRIP	Kalyan Banerjee	RI Dist 3060
PRID	Sudarshan Agarwal	RI Dist 3011
PRID	Panduranga Setty	RI Dist 3190
PRID	Sushil Gupta	RI Dist 3011
PRID	Ashok Mahajan	RI Dist 3141
PRID	Yash Pal Das	RI Dist 3080
PRID	Shekhar Mehta	RI Dist 3291
PRID	P T Prabhakar	RI Dist 3232
PRID	Dr Manoj D Desai	RI Dist 3060
RID	C Basker	RI Dist 3000
TRF Trustee	Gulam A Vahanvaty	RI Dist 3141
RIDE	Dr Bharat Pandya	RI Dist 3141
RIDE	Kamal Sanghvi	RI Dist 3250

Executive Committee Members (2018–19)

DG Rajiv Sharma Chair – Governors Council	RI Dist 3030
DG Pinky Patel Secretary – Governors Council	RI Dist 3060
DG Subhash Jain Secretary – Executive Committee	RI Dist 3012
DG A Venkatachalapathy Treasurer – Executive Committee	RI Dist 3201
DG Shashi Sharma Member – Advisory Committee	RI Dist 3141

ROTARY NEWS / ROTARY SAMACHAR

Editor	Senior Assistant Editor
Rasheeda Bhagat	Jaishree Padmanabhan

Send all correspondence and subscriptions to

ROTARY NEWS TRUST
3rd Floor, Dugar Towers, 34 Marshalls Road, Egmore
Chennai 600 008, India. Phone : 044 42145666
e-mail: rotarynews@rosaonline.org
Website : www.rotarynewsonline.org

Printed by P T Prabhakar at Rasi Graphics Pvt Ltd, 40, Peters Road, Royapettah, Chennai - 600 014, India, and published by P T Prabhakar on behalf of Rotary News Trust from Dugar Towers, 3rd Flr, 34, Marshalls Road, Egmore, Chennai 600 008. Editor: Rasheeda Bhagat.

The views expressed by contributors are not necessarily those of the Editor or Trustees of Rotary News Trust (RNT) or Rotary International (RI). No liability can be accepted for any loss arising from editorial or advertisement content. Contributions – original content – is welcome but the Editor reserves the right to edit for clarity or length. Content can be reproduced, but with permission from RNT.

केरल में सब से आगे रोटरी की मानवीय भावनाएँ

अभी महीने भर पहले ही तो हमारे पास बैंगलोर से ये सनसनीखेज खबर आई थी, एक रोटेरियन - डी रविशंकर द्वारा द रोटरी फाउंडेशन को ₹100 करोड़ का शानदार दान, इस महीने हमारे पास दिल छू लेने वाली खबर है, तत्परता और रफ़्तार की, जिसमें केरल के और बाहर के रोटेरियनों ने इस दक्षिणी राज्य में आई शताब्दी की सबसे भयानक बाढ़ से तबाह हुए हजारों लोगों को भोजन, सहायता और राहत सामग्री लाने का काम बड़ी मुस्तैदी से किया।

मेरी सहयोगी जयश्री बाढ़ से प्रभावित सबसे खराब क्षेत्रों जैसे कुट्टानाद, कोट्टयम, कुमारकोम और एलेप्पी की दो दिवसीय यात्रा पर गई, जिसे 3211 के आगामी मंडल अध्यक्ष ल्यूक द्वारा आयोजित किया गया था, उन क्षेत्रों में हुए विनाश, दुःख और पीड़ा देख कर वह भाव विह्वल हो उठी । टूटे हुए मकान, मिट्टी के कटाव के कारण झुके हुए या पूरी तरह से साफ़ हो गए मकान; बाढ़ का पानी कम होने के बाद लोग वापस अपने घर लौट रहे थे, ताकि वे बाढ़ में बह गए या मलबे के नीचे दबे सामान को ढूंढ सकें जो शायद बेकार हो गए होंगे। अमूमन तो शेष भारत केरल में मुख्य रूप से इसके बैकवाटर का आनंद लेने के लिए जाता है और यहां हाउस बोट पर एक दो दिन बिताने का तो कहना ही क्या । लेकिन जयश्री की कष्टदायक विडंबना यह थी कि इस बार, विनाश का सर्वेक्षण करने के लिए उन्हीं नावों का उपयोग करना पड़ा था और केरल के रोटेरियन फिर से ज़िंदगी की शुरुआत करने में किस प्रकार लोगों की मदद कर रहे थे।

बाढ़ राहत की जिला समन्वयक, टीना एंटनी और उन के साथ कार्य कर रहे अन्य रोटेरियनों ने जयश्री को बताया कि कई दिन पहले जिन मछुआरों ने बाढ़ में मछली पकड़ने के जाल के बह जाने के साथ अपनी आजीविका खो दी थी, वे भी बाढ़ में फंसे लोगों को बचाने के लिए तुरंत अपनी नाव ले कर चल दिए। मनुष्य के लालच और बहुमूल्य पारिस्थितिक तंत्र के विनाश के साथ प्रकृति का क्रोध राज्य के असहाय लोगों पर कहर बन कर बरपा और लोगों को राहत शिविरों में स्थानांतरित किया गया, मंडल 3211, 3201 और 3202 के रोटेरियन तुरंत काम में लग गए। टीना कहती हैं ''जैसे ही लोगों को सुरक्षित जगह ले जाया गया, खाद्य पैकेट, पानी की बोतलें और सूखे कपड़ों के साथ सबसे पहले पहुँचने वाले व्यक्ति रोटेरियन ही थे। हम हर जगह थे,'' चाहे वह सफ़ाई संचालन हो या राहत सामग्री का वितरण जैसे दवाइयां, सैनिटरी नैपकिन, डायपर,कपड़े या फिर चिकित्सा शिविर। तहस-नहस हुए क्षेत्र में हर तरफ रोटरी पदचिह्न ही नज़र आ रहे थे। पूर्व रो ई अध्यक्ष कल्याण बेनर्जी के नेतृत्व में ट्रस्ट का गठन किया जा रहा है, जो विनाश का सर्वेक्षण करने के लिए इस क्षेत्र का दौरा कर चुके है, खासतौर से घरों का नुकसान। 2001-2002 में गुजरात के कच्छ क्षेत्र में आये भूकंप में, कम लागत वाले आश्रयों के निर्माण के अनुभवी, बनर्जी ने स्थानीय रोटरी क्लबों को वैश्विक अनुदान के लिए आवेदन करने की सलाह दी है क्योंकि रोटरी ने यहां कम लागत वाले 3,000 आश्रय बनाने का ज़िम्मा लिया है।

महिला रोटेरियन, एन्स और एनेट्स अपनी कमर कस, कंधे से कंधे मिला कर रोटेरियन पुरूषों के साथ बाढ़ प्रभावित लोगों की तकलीफ कम करने और आंसुओं को पोंछने का काम कर रहे हैं, जैसे एक गांव में सैनिटरी नैपकिन के पैकेट पहुंचाना या दूसरे गांव में वयस्कों के डायपर देना। ये सब देख कर आप सोचने पर मजबूर हो जाते हैं कि संगठन में अधिक महिलाओं को लाने के लिए रोटरी इंटरनेशनल और रोटरी इंडिया में इतना अधिक ज़ोर क्यों दिया जा रहा है। संगठन के बारे में अधिक प्रेरित होने और गर्व करने के लिए पढ़ें *केरल की मदद के लिए रोटरी की त्वरित कार्यवाही* पृष्ठ 12 पर।

रशीदा भगत

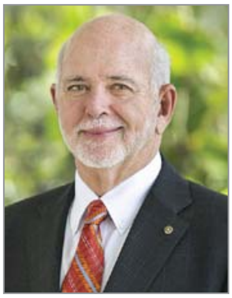

विश्व पोलियो दिवस मनाएँ : 24 अक्टूबर

BE THE INSPIRATION

प्रिय साथी रोटेरियनों,

प्रत्येक गुरुवार की सुबह, मुझे विश्व स्वास्थ्य संगठन से पोलियो उन्मूलन की स्थिति पर ईमेल के माध्यम से अपडेट मिलती है। उसमें जानकारी का भंडार होता है, देश ब देश में: कहाँ और कैसे टीकाकरण अभियान आयोजित किये जा रहे है, कितने मिलियन बच्चों का टीकाकरण किया जा रहा है, और कहाँ पर पर्यावरण आवेक्षण को वायरस के फैलने के प्रमाण मिले है। लेकिन हर हफ्ते, जब वह ईमेल मेरे इनबॉक्स में आता है, मेरा दिल कुछ क्षणों के लिए तब तक रुक जाता है जब तक मैं शुरुआती कुछ लाइनें पढ़कर यह नहीं जान लेता कि कोई बच्चा उस हफ्ते उस भयानक पोलियो वायरस का शिकार तो नहीं हुआ।

मेरे दोस्तों, आज हम पोलियो उन्मूलन के कार्य में यहीं पर है। उस संदेश को खोलते ही मेरे दिमाग में जो प्रश्न आता है वह यह नहीं होता कि एक वर्ष में हमें कितने हजार मामले देखने को मिलेंगे, क्योंकि अभी हमें ज्यादा वक्त नहीं हुआ, या कितने सैकड़ों मामले देखने को मिलेंगे। इसके बजाए, प्रत्येक गुरुवार जब विश्व स्वास्थ्य संगठन का वह ईमेल आता है, तो एकल, युग्मक प्रश्न जिसका वह उत्तर देता है: क्या इस हफ्ते कोई नया मामला सामने आया या नहीं?

तीस साल पहले, प्रति दिन 1,000 बच्चे पोलियो से पीड़ित होते थे। तब से, साल दर साल, हफ्ते दर हफ्ते हमने अपनी प्रगति को चिन्हित किया है। जैसे ही देश पर देश, क्षेत्र दर क्षेत्र पोलियो मुक्त घोषित हुए हमने उत्सव मनाया। जैसे-जैसे हम अपने लक्ष्य के करीब आए है, और मामलों की संख्या दिन पर दिन कम हुई है, बच्चों को प्रतिबिंबित करने वाली वे संख्याएँ कम होती चली गई। जब मैं गुरुवार के उस ईमेल को खोलता हूँ, मुझे इस बात की हैरानी नहीं होती कि मैं कौनसी संख्या देखूँगा। मैं इस बात से हैरान होता हूँ कि उस हफ्ते कोई बच्चा पोलियो से ग्रस्त हुआ या नहीं?

हम उन्मूलन के बहुत करीब है - लेकिन अभी भी बहुत काम करना बाकि है।

इस माह, मैं प्रत्येक रोटरी क्लब से 24 अक्टूबर को विश्व पोलियो दिवस को चिन्हांकित करने के लिए एंड पोलियो नाउ की सहायता करने के लिए कहता हूँ। पिछले साल, विश्व भर में हजारों रोटरी क्लबों ने पोलियो उन्मूलन के लिए जागरूकता फैलाने और धन एकत्रित करने के लिए कार्यक्रम आयोजित किये थे। इस साल, हम विश्व पोलियो दिवस पर पहले से कहीं अधिक कार्यक्रमों का पंजीकरण देखना चाहते है। यदि आपके पास कार्यक्रम नियोजित है, तो उसका पंजीकरण करना ना भूलें और *endpolio.org* पर जाकर उसका प्रचार करें ताकि अधिक लोग उसमें हिस्सा ले सकें। यदि आपने अभी तक कोई योजना तैयार नहीं की है, तो अभी भी देर नहीं हुई है - विचारों के लिए, इस वर्ष की लाइव स्ट्रीम की जानकारी के लिए और एक सफल कार्यक्रम को आयोजित करने में आपके क्लब के लिए संसाधनों को ढूँढने के लिए *endpolio.org* पर जाएं।

क्लबों के पास उनके अपने समुदाय में, रोटरी और पोलियो उन्मूलन के लिए हमारे ऐतिहासिक कार्य पर प्रकाश डालने के लिए विश्व पोलियो दिवस एक बड़ा अवसर है। बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन की चुनौती का लाभ उठाने का भी यह एक शानदार तरीका है: पोलियो उन्मूलन के लिए रोटरी द्वारा एकत्रित किये गए प्रत्येक डॉलर के लिए गेट्स संस्थान दो डॉलर और देगा। 24 अक्टूबर को विश्व पोलियो दिवस पर, मुझसे और सभी जगह के रोटेरियनों से जुड़िये - और एक पोलियो मुक्त दुनिया के लिए *प्रेरणा बनिए।*

बेरी रेसिन

अध्यक्ष, रोटरी इंटरनेशनल

रो ई निदेशक
का संदेश

समुदायों को सशक्त बनाना

प्रिय रोटेरियनों,

महात्मा गांधी - हमारे राष्ट्रपिता अक्सर कहा करते थे कि सच्ची स्वतंत्रता का आनंद केवल तभी लिया जा सकता है जब समुदायों को मजबूत बनाया जाता है और निर्धनता को जड़-मूल समाप्त किया जाता है।

यहाँ मैं आपके साथ चेतना के सफलता की कहानी साझा कर रहा हूँ, जो कि मुंबई में एक मध्यम-वर्गीय परिवार में पली-बढ़ी थी, और पश्चिमी महाराष्ट्र के एक सूखा-प्रभावित क्षेत्र से आती थी एयर जिसका विवाह एक किसान और प्रमुख स्थानीय सामाजिक कार्यकर्ता हुआ था। उसने अपने फाइनेंस में विश्वविद्यालय से प्राप्त डिग्री का सही उपयोग किया। उसने देखा कि स्थानीय महिलाएं, अंगूर की खेती करने या सब्जियां बेचने जैसी आजीविका से संबंधित कार्यों का स्वयं कर रही हैं। वर्ष 1992 में, उसने सभी महिलाओं को स्व-सहायता और बचत समूहों में आयोजित करना शुरू किया, जिससे उन्हें तकनीकी ज्ञान साझा करने, थोक खरीद के माध्यम से अपनी लागत को कम करने और अपने पैसे को बेहतर तरीके से प्रबंधित करने में मदद मिली।

लेकिन चेतना ने तुरंत महसूस किया कि महिलाओं को व्यवसाय ऋण की भी आवश्यकता है। हालांकि, पारंपरिक बैंक उनकी कम आय के कारण उन्हें ऋण को तैयार नहीं थे। इसलिए वर्ष 1994 में, उन्होंने 500 ग्रामीण महिलाओं की तरफ से बैंक संचालित करने के लिए लाइसेंस के लिए आवेदन किया। भारतीय रिजर्व बैंक ने आवेदन को खारिज कर दिया क्योंकि, चेतना को छोड़कर, सभी महिलाओं ने अपनी पहचान के लिए अंगूठे का निशान लगाया था जबकि आरबीआई के दिशानिर्देशों के अनुसार, बैंक के निदेशकों को साक्षर होना अर्थात पढ़ना और लिखना जानना अनिवार्य है। इससे बिना विचलित हुए, चेतना,जिसकी उस समय आयु 40 वर्ष थीं, ने महिअलों को साक्षर बनाने के लिए कक्षाएं आयोजित करना शुरू किया और यह कार्य महिलाओं को सरल शब्द पहचानना सिखाने से कही आगे बढ़ गया। महिलाओं को मूलधन पर ब्याज की गणना करना भी सिखालाया गया था। वह याद करते हुए कहती है, ''हमने तीन वर्षों के बाद आरबीआई को फिर से आवेदन दिया और लाइसेंस प्राप्त किया। इसी तरह माणदेशी महिला सहकारी बैंक ने 500 महिलाओं और क्रेडिट पूल में लगभग ₹5,00,000 के साथ कार्य करना शुरू किया।'' बैंक को पूरी तरह से स्थिर होने में तीन वर्षों का समय लगा। आज, इसके पास 1.4 लाख से अधिक ग्राहक और ₹3.78 करोड़ से अधिक की जमा राशि है।

यदि ग्रामीण महिलाओं ने कोई औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं की है तो निर्धनता के दुश्चक्र को तोड़ने के लिए उन्हें कुछ छोटे ऋणों की आवश्यकता है। चेतना का कहना है कि बैंक उत्तरदायित्व को लेकर विनम्र है, प्रत्येक तिमाही में आंतरिक लेखा-परीक्षा आयोजित की जाती है, सहकारी विभाग द्वारा वार्षिक लेखा-परीक्षा आयोजित की जाती है और प्रत्येक चार वर्षों के बाद केंद्रीय बैंक द्वारा निरीक्षण किया जाता है। चेतना की कहानी बहुत प्रेरणादायक है। हमारे बीच अनेक चेंतानाएं रह रही हैं। आवश्यकता उन्हें केवल हमारे जैसे लोगों और संगठनों से प्रोत्साहन और समर्थन की है।

रोटरी स्वैच्छिक कार्यवाही के माध्यम से समुदाय की सेवा पर ध्यान केंद्रित करता है। रोटरी की मुख्य विशेषता मानवीय-स्पर्श है। रोटेरियन का समर्पण, समुदाय के साथ उनके संबंध, उनके द्वारा किए जाने वाले कार्यक्रमों में लचीलापन और समस्या निवारण के लिए नवीन सोच अपनाने के कारण उन्हें अधिक से अधिक सफलता प्राप्त होगी।

प्रेरणा बनें । एक-दूसरे को प्रेरित करें और आइए एक साथ मिलकर दुनिया को बदल दें।

C. B...

सी भास्कर
निदेशक, रोटरी इंटरनेशनल

District Wise TRF Contributions as on August 2018

(in US Dollars)

District Number	APF	PolioPlus	Other Restricted	Endowment Fund	Total Contributions	EREY Donors (in numbers)	EREY %
			India				
2981	12,849	605	0	8,000	21,454	79	1.7
2982	3,334	59	0	0	3,393	55	1.9
3000	9,200	1,000	4,961	4,265	19,426	47	1.0
3011	27,584	0	16,347	4,928	48,859	42	1.3
3012	122,684	0	130,200	800	253,684	39	1.2
3020	1,569	0	0	0	1,569	6	0.2
3030	1,551	0	0	0	1,551	1	0.0
3040	2,009	0	88	0	2,098	4	0.2
3053	25,457	0	0	0	25,457	2	0.1
3054	(29,239)	0	30,000	0	761	3	0.1
3060	(15,464)	0	28,841	0	13,377	177	4.3
3070	30,668	300	0	0	30,968	86	3.0
3080	14,308	2,077	4,735	0	21,120	16	0.5
3090	12,180	0	0	0	12,180	30	1.5
3100	4,845	0	0	0	4,845	11	0.7
3110	11,499	499	1,835	0	13,832	18	0.5
3120	5,088	0	0	0	5,088	7	0.2
3131	71,727	602	64,653	8,203	145,184	203	4.0
3132	5,478	0	0	20,000	25,478	40	1.1
3141	359,767	6,582	103,820	1,000	471,169	247	4.9
3142	130,071	0	0	0	130,071	294	9.3
3150	17,343	0	25,807	195,467	238,616	219	6.3
3160	3,742	580	0	0	4,322	12	0.5
3170	21,163	909	4,679	0	26,750	116	2.2
3181	13,694	441	0	0	14,135	55	1.8
3182	8,441	0	6,516	0	14,958	7	0.2
3190	34,903	3,512	1,163	1,449,275	1,488,853	171	3.6
3201	16,530	0	62,633	0	79,163	54	1.0
3202	7,029	317	0	0	7,346	6	0.1
3211	12,800	0	0	1,515	14,316	145	3.3
3212	38,662	(468)	0	2,000	40,194	36	0.9
3231	909	0	0	0	909	11	0.4
3232	67,542	100	6,085	1,000	74,727	69	1.6
3240	23,408	110	0	0	23,518	41	1.4
3250	2,339	0	0	0	2,339	6	0.2
3261	4,233	0	0	0	4,233	6	0.2
3262	6,928	0	900	3,000	10,828	22	0.7
3291	37,644	0	7,924	800	46,368	74	2.0
India Total	**1,124,478**	**17,225**	**501,188**	**1,700,252**	**3,343,143**	**2,457**	**2.0**
3220 **Sri Lanka**	13,899	0	0	5,000	18,899	39	2.2
3271 **Pakistan**	5,200	10,867	0	0	16,067	3	0.2
3272 **Pakistan**	986	268	0	0	1,254	4	0.1
3281 **Bangladesh**	28,584	1,100	0	0	29,684	31	0.6
3282 **Bangladesh**	3,250	300	0	0	3,550	7	0.2
3292 **Nepal**	31,982	4,462	26,367	0	62,811	102	2.3
South Asia Total	**1,208,379**	**34,222**	**527,555**	**1,705,252**	**3,475,409**	**2,643**	**2.0**
World Total	**15,064,307**	**3,044,276**	**2,492,479**	**3,894,472**	**24,495,534**		

Source: RI South Asia Office

TRADITIONAL CRAFT

The german kitchen.
Since 1898.

Head Office and Showroom:
A- 248, Mahipalpur Extension, NH-8,
Delhi-Gurgaon Road, New Delhi-110037
[T] +91-11-46102000 [E] info@hacker-kitchens.com

Häcker
kitchen.germanMade.

www.haecker-india.com
www.haecker-kuechen.com

AHMEDABAD	BANGALURU	CHENNAI	COIMBATORE	DELHI
9879538977	9740999350	9442081111	9500210555	9313134488

HYDERABAD	INDORE	JAIPUR	KOCHI	LUDHIANA	MUMBAI	MANGALURU	THRISSUR
9700058285	9425803599	9414058718	9895058285	9815048222	9322987229	7899119955	7025991000

केरल की मदद के लिए
रोटरी की त्वरित कार्यवाही

जयश्री

केरल का अभी उस बाढ़ से उबरना बाकी है जिसे 1924 से अब तक की सबसे बदतर बाढ़ के रूप में वर्णित किया गया है,'' और हजारों प्रभावित लोग अपनी उजाड़ ज़िंदगियों को नए सिरे से शुरू करने के लिए संघर्ष कर रहे है।

जुलाई-अगस्त के दौरान भारी बारिश के दो दौर ने लगभग 500 लोगों की जान ले ली और हजारों लोगों को बेघर कर छोड़ा। करोड़ो में संपत्ति का नुकसान हुआ; हजारों मवेशी और मुर्गियाँ बह गए एवं मत्स्य पालन केंद्र तबाह हो गए। राज्य के 54 बांधों में से 35 बांधों को खोलना पड़ा क्योंकि वे उनकी क्षमता तक भर चुके थे; इडुक्की बांध के सभी पांच अधिप्रवाह शटर एक साथ खोले गए, जिसके कारण पहाड़ी वायनाद एवं इडुक्की में भूस्खलन हुआ। लगभग सभी जिलों ने भारी नुकसान झेला।

सभी स्कूलों, कॉलेजों, सामुदायिक भवनों और पूजा स्थलों को राहत शिविरों में तब्दील कर दिया गया और हजारों की संख्या में लोग उनमें आते रहे। धनाढ्य लोगों ने बाढ़ प्रभावित लोगों को ठहराने के लिए अपने घरों के दरवाजे खोल दिए, और उन्हें खिलाया एवं उन्हें कपड़े भी दिए।

चूंकि रोटरी भारत राहत कार्यों एवं पुनर्वास नियोजन में मदद करते हुये तुरंत कार्यवाही के लिए आगे आई, मंडल 3211 के डीजी ई के ल्यूक, जो मुझे वहाँ के लोगों की व्यथा को रूबरू देखने के लिए ले गए, की मदद से मैंने कुट्टानाड, कोट्टायम, कुमाराकोम और अल्लेप्पी के बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का दो दिवसीय दौरा किया। ये जगह राज्यभर में तबाही मचाने वाली भीषण बाढ़ के कुछ नमूने मात्र थे।

घर टूटकर तबाह हो गए है या बह चुके है। मिट्टी के कटाव के कारण कुछ घर झुके हुए से प्रतीत हो रहे है। कई गाँव सड़कों से जाने योग्य नहीं बचे और केवल नावों द्वारा ही वहाँ पहुँचा जा सकता है। सहायक गवर्नर साजी मैथ्यूज़ और जित्तू सेबेस्टियन, एवं बाढ़ राहत के लिए मंडल मुख्य समन्वयक रोटेरियन टीना अंटोनी के साथ जब मैं कुट्टानाड, जिसके किनारे पर विभिन्न आकार और ढांचे की झोपड़ियाँ और कंक्रीट के घर है, के ठहरे हुये पानी पर नाव से गुजरती हूँ, तो उस उदार प्रकृति की यह विडंबना मुझे झकझोर देती है कि जिसने इस क्षेत्र को ऐसी आलीशान हरियाली और खूबसूरती प्रदान की, उसी ने इस राज्य और यहाँ के लोगों पर अपना प्रकोप बरसाया है।

फिर भी सबसे अधिक प्रभावित लोगों ने एक सुखद मुस्कान के साथ हमारा सत्कार किया और जब हम उनके तबाह हो चुके घरों के अवशेषों में गए तो उन्होंने हमें निर्मल नारियल पानी पेश किया।

किनारे पर हम कुट्टानाड के छोटे गांवों में से एक में एक असहाय सी दिखने वाली शांता की देहलीज़ पर रुके। वह हाल ही में राहत शिविर से लौटी है और हमें अपने घर के अवशेष दिखाती है। छत गायब हो गई है और उसकी जगह छेद वाली नीली रंग की प्लास्टिक की शीट है। टीन की चादरों से चारों ओर की दीवारें बनी हुई है और वहाँ कोई फर्श नहीं बचा है। उसका लकवाग्रस्त पति एक कोने में लकड़ी की एक खटिया पर सो रहा है, जिसके पाए टूट गए है और उसे ईंटों के खोखले गुटकों द्वारा सहारा दिया गया है।

रोटेरियनों को देखकर, उसका चेहरा चमक उठा। कोट्टायम के रोटरी क्लबों के सदस्यों ने इन ग्रामीणों को बचाया था और अब वे उनके पुनर्वास के कार्य में लगे हुए है। ''मैं अपने घर को देखकर चौंक गई, जिसे मैं पहचान भी नहीं सकी। मेरे पास जो थोड़े बहुत बर्तन थे वे बह गए,'' वह रोते हुए कहती है।

हालाँकि यह मिट्टी के घरों की स्थिति थी, कंक्रीट के घरों की कहानी अलग थी। टेलीविज़न सेट, गद्दों और अन्य घरेलु उपकरणों को सुखाने के लिए धूप में रखा गया था। जैसी ही जल स्तर बढ़ा निवासी जितना संभव हो सकता था घरेलु सामान बचाते हुए पहली मंजिल पर या छत पर चले गए।

''कुट्टानाड, वेम्बनाद झील से पुनर्निर्मित भूमि, बाढ़ के लिए प्रवण है क्योंकि यह समुद्र तल से 7-10 फीट नीचे है। यहाँ के लोग प्रत्येक मानसून में बाढ़ झेलने के आदि थे, लेकिन इस प्रलय से वह अनजान थे। बहाव बहुत अधिक था और पानी इतना अधिक था कि समुद्र भी इसे समाहित नहीं कर सका, और उसने इसे सीधा धरती की तरफ धकेला,'' सेबेस्टियन समझाते है।

वह कहते है कि जल स्तर कई जगहों पर नौ फीट तक बढ़ गया था और लोगों को सुरक्षित स्थानों तक ले जाने के लिए नावों की मदद लेनी पड़ी। जब बारिश बंद हो गई और लोग अपने घरों की तरफ लौटने लगे, तो रोटेरियन कुट्टानाड और अन्य जगहों के परिवारों को देने के लिए बर्तन और राशन, गद्दे, कम्बल और कपड़े लाए ताकि वे अपनी जिंदगी दोबारा शुरू कर सकें। यह पूरा राज्य का

रोटेरियन टीना एंटनी (दाएँ) द्वारा संचालित स्वयंसेवक बाढ़ के बाद घरों की सफाई में लगे हैं।

बाढ़ से क्षतिग्रस्त घर।

परिदृश्य था जिसमें रोटेरियन प्रभावितों की हर संभव रूप से मदद कर रहे थे।

जैसे ही हम नाव से आगे बढ़ते है, मैथ्यूज़ मुझे तट के घरों के पीछे एक विशाल जल श्रोत दिखाते है। ''यह कोई झील नहीं है; यह कई एकड़ में फैले धान के खेत है जो अभी तक जलमग्न है।'' लोगों द्वारा बीज बोये जाने के तुरंत बाद ही बारिश हुई और अब सब कुछ खत्म हो गया है। यहाँ के आसपास के लोग किसान है जिनके पास 2-5 एकड़ ज़मीन है। मत्स्य पालन यहाँ पर एक अन्य विशाल व्यवसाय है। ''दुर्भाग्यवश, दोनों ही गतिविधियाँ बुरी तरह से प्रभावित हुई और उनमें से कई लोग मछली पकड़ने नहीं गए क्योंकि उन्होंने अपने मछली पकड़ने के जाल खो दिए है,'' वह कहते है।

जैसे ही हम एक अन्य घर पर रुकते है, तो हम यह जानकार चकित होते है कि 13 वर्षीय आरती एक नाव में कूदकर पानी के इस पार से उस पार अपने घर स्वयं नाव चलाकर जा रही है। वह उसकी स्कूल यूनिफार्म में है और चूंकि पुल टूट गया है और सड़क मार्ग अगम्य है, तो यह उस क्षेत्र में उसके जैसे कई बच्चों के लिए स्कूल जाने और वापस आने का वैकल्पिक तरीका है।

यह क्षेत्र रिसोर्ट और हाउसबोट्स से भरपूर है ''लेकिन इस व्यवसाय को पहले निपाह वायरस और अब बाढ़ के चलते बुरी मार झेलनी पड़ी,'' टीना बताती है। वह कहती है कि मछुआरों ने ऐसे घरों तक पहुँचने में अहम भूमिका निभाई है जहाँ पर सड़क मार्ग या वायु मार्ग से पहुँचना संभव नहीं था। वे असली नायक है। ''वे राज्य के विभिन्न हिस्सों से बचाव कार्यों के लिए उनकी नावों के साथ आए, बारिश से बिना डरे। चूंकि अधिकांश घरों की छते ढलवां थी, और ऊपर से केबल के तार आड़े-तिरछे गए हुए थे, तो कुछ स्थानों पर हेलीकॉप्टरों के लिए लोगों को सुरक्षित निकालना असंभव था।''

अल्लेप्पी में, रोटरी क्लब अल्लेप्पी कोयर सिटी की विजयलक्ष्मी नायर और अध्यक्ष अंटोनी फ़र्नान्डिस मुझे चुनाम, 610 घरों वाला एक इलाका, ले गए जो बुरी तरह बर्बाद हो गया था। पल्लाथुर्टी का ईडीएलपी स्कूल निराशा की एक तस्वीर व्यक्त करता है। कंप्यूटर मरम्मत करके ठीक होने लायक नहीं बचे है। बच्चों की तर-बतर किताबें और अभ्यास पुस्तिकाएं एवं शिक्षकों की रेफरेंस सामग्री धूप में

बेबी, एलेप्पी की निवासी अपना TV धूप में सुखाती हुई।

सुखाई जा रही है। ''कृपया स्कूलों के लिए कुछ कंप्यूटरों की व्यवस्था करें,'' स्कूल की प्रधान अध्यापिका विजयलक्ष्मी से अनुरोध करती है। वह मंडल राहत संग्रह केन्द्रों की संपर्क अधिकारी है और मंडल के विभिन्न रोटरी क्लबों को प्राप्त होने वाली राहत सामग्रियों का वितरण करने की प्रभारी है।

रोटरी का जादुई स्पर्श

जब बारिश हुई और राज्य द्वारा राहत शिविर स्थापित किये गए, तो मंडल 3211, 3201 और 3202 के रोटेरियन कार्यवाही के लिए आगे आए। जैसे ही लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुँचा दिया गया तो सबसे पहले रोटरी ही उनके लिए खाने के पैकेट,

रोटेरियन निशा मणि, एक ऑटिस्टिक रोगी जोसिमोल जोस से मिलते हुए। जोसिमोल को बाढ़ के दौरान बचाया गया था।

पानी की बोतलें और सूखे कपड़े लाई थी। हम हर जगह थे,'' टीना कहती है।

ऐसे भी लोग थे जो कई दिनों से भूखे थे, उनकी इमारतों की पहली मंजिल या छतों पर सिमटे बैठे हुए थे। ''जब हम लोगों को बचाने के लिए जाते थे तो हम अपने साथ खाने के पैकेट रखते थे,'' निशा मणि कहती है, जो रोटरी क्लब पाला की एक सदस्य और पीडीजी जॉन नेरोथ की बेटी है। एक प्रशिक्षित जीवन रक्षक और एक दृढ़ संकल्पित समाज सेवी होने के कारण वह कुमाराकोम के आसपास के समुदायों में काफी प्रसिद्ध है। वह जोर देकर मुझे एक 'खास दोस्त' से मिलवाने के लिए एक घर में ले जाती है जहाँ एक उत्तेजित संध्या (30) उनका गर्मजोशी के साथ स्वागत करती है। व्हीलचेयर तक सीमित उस स्वलीन महिला, और उसकी बूढ़ी माँ को निशा और अन्य रोटेरियनों द्वारा बचाया गया था और नाव से एक सुरक्षित स्थान पर ले जाया गया था। ''वह शाम का समय था और मूसलाधार बारिश हो रही थी। उस समय सभी जगह लगभग चार फीट पानी था। ऐसे स्थान पर लगभग 100 लोगों को बचाने के लिए हम आधी जगह पानी में चले, आधी जगह नाव चलाकर गए। इसमें शामिल खतरे ने हमें तब हिला दिया जब हमने दिन के उजाले में उस स्थान को देखा,'' वह कहती है। सड़क के बगल में एक चौड़ी नहर थी और घर निचले इलाकों में बने हुए थे। निशा द्वारा विचारपूर्वक संध्या को उसकी माताजी के लिए कुछ वयस्क डायपर के पैकेट सौंपने के बाद हम संध्या के घर से चले गए।

निशा आगे कहती है, ''बहुत से घरों में खुली नालियां है। लेकिन बाढ़ के दौरान, हम में से किसी को भी चारों ओर फैली गंदगी का ख्याल नहीं आया। हमारा ध्यान केवल फंसे हुए लोगों को निकालने पर था।''

जल प्रलय के बाद

''हमारा असली काम बारिश के बाद ही शुरू हुआ,'' टीना कहती है। उतरते पानी द्वारा पीछे छोड़ी गई

RIDE कमल संघवी, मंडल 3202 के DGE ए कार्तिकेयन, डीजी डॉ इ के उमर और PDG डॉ ई के सगादेवन शेल्टर किट के लाभार्थियों के साथ।

डीजी इ के ल्यूक, PDG गण जॉन सी नेरोथ, के एस शशी कुमार, रोटरी क्लब त्रिवेंद्रन केपिटल के अध्यक्ष संतोष कुमार, रोटेरियन के बाबूमोन, AG शिवाकुमार और रोटेरियन विजयलक्ष्मी नायर, नागरिक आपूर्ति राज्य मंत्री पी थिलोत्तमन (बाएँ से दूसरे) बाढ़ पीडितों को राहत सामग्री प्रदान करते हुए।

गंदगी और कीचड़ को साफ करना सबसे बड़ी चुनौती थी। ''हमने कई टन ब्लीचिंग पाउडर वितरित किया, और फर्श को साफ करने में मदद की।'' प्रत्येक क्लब ने 1,000 घरों की देख-रेख करने का जिम्मा लिया और सफाई सामग्री, बाल्टियों, पोछों, मग्गे, नए कपड़े, चादरें और अन्य जरूरी सामग्रियों की किटें बांटी। वहाँ कोई बिजली नहीं थी, इसलिए रोटेरियन जनरेटर साथ लेकर चलते थे।

अल्लेप्पी में डीजी ल्यूक मुझे एक वितरण कार्यक्रम में भाग लेने के लिए आमंत्रित करते है जहाँ रोटरी क्लब त्रिवेंद्रम सेंट्रल ने लोगों को एक लकड़ी की मेज़, प्लास्टिक की कुर्सियाँ, पोछा, बाल्टी, झाड़ू, एक गैस चूल्हा, बर्तनों आदि की किटें प्रदान की।

RIDE कमल संघवी शेल्टर किट प्रदान करने के बाद एक बाढ़ पीड़ित के साथ बातचीत करते हुए।

बाढ़ पीड़ितों की मदद के लिए, सीमाएं तोड़कर दुनियाभर से, देशभर से और मण्डल के हर एक कोने से रोटेरियन एक साथ आए। क्लबों के मध्य तालमेल इतना अच्छा था कि उन्होंने एक दूसरे को बुलाया और चीज़ों को उन जगहों पर शीघ्रता से पहुँचाया जहाँ उसकी कमी थी। विभिन्न क्लबों से ट्रक भरकर सामान आए। ''चेन्नई के नंगानल्लुर के रोटरी क्लब ने केवल ट्रक भरकर सामान ही नहीं भेजा बल्कि उसके साथ तीन रोटेरियन भी मनोबल बढ़ाने के लिए अल्लेप्पी आए।'' पम्पा नदी से मन्नार बुरी तरह प्रभावित था और रोटरी क्लब मन्नार के 13 रोटेरियनों के घर क्षतिग्रस्त हो गए थे। ''उसके बावजूद भी वे मैदान में आकर दूसरों की मदद कर रहे थे,'' टीना कहती है।

''एन्स और एनेट्स भी राहत कार्यों में शामिल हुई,'' क्लब के सदस्य डॉ फिलिपोस की बेटी, डॉ रेबेका फिलिपोस (21), की ओर संकेत करते हुए रोटरी क्लब कोट्टायम की सूसन कोशी कहती है। यह क्लब कोट्टायम के आसपास बड़े पैमाने पर कार्य कर रहा है।

लोगों को त्वचा के संक्रमण, बुखार, खांसी के लिए उपचार प्रदान करने और महामारी के प्रसार

शेल्टर किट की सामग्री।

को रोकने के लिए विभिन्न क्षेत्रों में क्लबों द्वारा चिकित्सीय शिविर आयोजित किये जा रहे है। इस भीषण तबाही के बाद, अवसाद से जूझ रहे लोगों के उपचार के लिए एक मनोचिकित्सक भी कुछ दलों में शामिल थे।

'दिल से एक्ट फॉर केरल' बेघरों को घर प्रदान करने के लिए एक वैश्विक अनुदान के तहत रोटरी क्लब कोचीन मिडटाउन और रोटरी बन्दर सुंगई पेटानी, मंडल 3300, मलेशिया, द्वारा कार्यान्वित पहली आवास परियोजनाओं में से एक है। RIDE कमल सांघवी ने विभिन्न मंडलों के डीजीयों के साथ मिलकर एक आश्रय किट परियोजना का नेतृत्व किया, जिसके अंतर्गत राज्य के विभिन्न हिस्सों में 1,000 किटें प्रदान की गई। प्रत्येक किट में चार लोगों के एक परिवार के लिए एक तम्बू, कुछ बर्तन और कपड़े होते थे।

प्रोजेक्ट होप यूके और केरल के रोटरी क्लबों की एक संयुक्त पहल है, जिसके माध्यम से मंडल 1120 ने राज्य के स्कूलों को पानी के फ़िल्टर प्रदान किये, जबकि मंडल 1220 ने 500 घरेलु और सामुदायिक फ़िल्टर भेजें। रोटरी क्लब कलामसेरी रोटरी क्लब कांडी, मंडल 3220, श्रीलंका के साथ मिलकर वैश्विक अनुदान के माध्यम से छोटे उद्यमियों की ज़िंदगियों को दोबारा शुरू करने में मदद कर रहा है। एक गद्दे निर्माता को एक औद्योगिक सिलाई मशीन प्रदान की गई, एक ऑटोरिक्शा चालक को एक नया वाहन मिला और एक साड़ी-विक्रेता को साड़ियों का नया स्टॉक मिला। जहाँ रोटरी क्लब कोचीन मिलन के रोटेरियन बर्तन दान कर रहे है, वहीं रोटरी क्लब कोचीन कॉसमॉस का ध्यान निःशक्तजनों के लिए व्हीलचेयर, वॉकर, कृत्रिम पैर, श्रवण सहायक और जल शैया प्रदान करने पर है।

रोटरी क्लब कोयम्बटूर साईं सिटी, मंडल 3201, ने ट्रक भरकर ₹30 लाख की कीमत का किराना भेजा। कैटरिना लेंग्रोवा, रोटरी क्लब कोयम्बटूर द्वारा आयोजित युवा विनिमय में चेक गणराज्य से आई एक छात्रा, जो रोटेरियनों की स्वच्छंदता से प्रेरित हुई, ने बाढ़ राहत के लिए अपने वेतन का योगदान दिया, डीजी ए वी पेथी कहते है। विदेश में और देशभर के विभिन्न मंडलों में अनुदान संचयन समारोह आयोजित किये गए, और राहत कार्यों के लिए योगदान आ

घर जाने के लिए बाढ़ के पानी को पार करती हुई आरती।

मिशन न्यू लाइफ के तहत एक गोदाम में फर्नीचर का नवीनीकरण होते हुए।

रहे है। रोटारेक्टर और इंटरेक्टर भी अपनी भूमिका निभा रहे है।

पुनर्वास की चुनौती

डीजी ल्यूक के साथ झठखझ कल्याण बैनर्जी ने पहले अल्लेप्पी और कुट्टानाड के बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का दौरा किया था। बाद में बैनर्जी, निदेशक सी भास्कर के साथ, मंडल 3211, 3201 और 3202 के गवर्नरों - ई के ल्यूक, ए वी पेथी और ई के उमर - से मिले और सुझाव दिया कि एक न्यास का सृजन किया जाना चाहिए जो व्यापक स्तर पर पुनर्वास कार्यों के लिए निधि एकत्रित करे। इसे तीन गवर्नरों द्वारा संयुक्त रूप से प्रबंधित किया जाएगा। ''न्यास का पंजीकरण हो चुका है और अब तक मंडलों को जो भी पैसा प्राप्त हुआ है वह सब इसमें जाएगा। तीनों मंडलों में पुनर्वास कार्यों के लिए ₹100 करोड़ का बजट निर्धारित किया गया है। PRIP बेनर्जी ने कहा है कि मंडल कम लागत वाले 3,000 आश्रयों, प्रत्येक लगभग 300 वर्ग फीट के, के निर्माण हेतु वैश्विक अनुदान के लिए आवेदन कर सकते है,'' ल्यूक कहते है।

''हमने कुट्टानाड जैसी कुछ जगहों की पहचान की है जहाँ पर घरों की त्वरित आवश्यकता है। शुक्र है, अधिकतर ग्रामीणों के पास भूमि के लिए मान्य स्वामित्व विलेख है,'' टीना कहती है। एक क्षेत्र में घरों को ''एक साथ समाहित करके हम एक रोटरी गाँव का निर्माण करेंगे ताकि यह प्रत्यक्ष प्रभाव डाल सके,'' ल्यूक कहते है।

मिशन नई जिंदगी

वह पीडीजी रघुनाथ थे जिन्हें तिरुवनंतपुरम में ऐसा विचार आया था। हर जगह लोगों ने अपने घरेलु उपकरण, गद्दे और फर्नीचर खो दिए है। इसलिए उनके घरों को सुसज्जित करने में उनकी मदद करने के लिए, मिशन नई ज़िंदगी तैयार किया गया, जहाँ हम लोगों द्वारा दान किये गए फर्नीचरों/उपकरणों का नवीकरण करके उन्हें जरूरतमंदों को प्रदान करते है। हमारे पास मंडलों में बढ़ईयों, विद्युत्कारों और तकनीशियनों का एक पूरा दल है। वे सामानों की मरम्मत करके उसे दोबारा उपयोग किए जाने लायक बनाते है, टीना कहती है, आगे कहते हुए कि क्लब ने अगले दिन अल्लेप्पी के सिद्धांत को लोकप्रिय बनाने के लिए एक रोडशो आयोजित करने की योजना बनाई थी।

स्टेनली, एक प्रमुख फर्नीचर निर्माता, मिशन नई ज़िंदगी के लिए बड़े पैमाने पर फर्नीचर दान कर रहा है, रोटरी क्लब त्रिवेंद्रम के एम सी जैकब कहते है।

खुशनुमा पल

निशा ने मुझे कुछ खुशनुमा क्षणों के बारे में बताया जो उस समय स्थिति की गंभीरता में खो गए थे। वह कुट्टानाड के किसी इलाके में एक नाव पर थी और जैसे ही उसने एक आदमी को नाव पर चढ़ाने के लिए हाथ बढ़ाया, तो उस आदमी ने उनके हाथ में एक बकरी थमा दी, और उनसे उस बकरी को बचाकर उसकी पत्नी को सौंपने के लिए कहा ''जो किसी शिविर में थी।'' बहुत समझाने के बाद, वह आदमी नाव पर चढ़ा, लेकिन यह सुनिश्चित करने के पहले नहीं कि उसकी बकरी भी उसके साथ आएगी। ''इस प्रक्रिया में, उस बकरी ने मेरे पूरे मुँह पर पेशाब कर दिया, जिसके कारण मेरे दोस्त मुझ पर टिप्पणी कर रहे थे कि यह एक अच्छा फैशिअल है!''

एक अन्य अवसर पर उन्होंने एक शिविर में एक छोटे बच्चे को हाथ में सांप पकड़े देखा। उन्होंने उससे वह लिया और उनके पास रखी टोकरियों में से एक में उसे डाल दिया और धीरे से उस टोकरी को अपनी कार के गियरबॉक्स में रख दिया, बिना अपने दोस्तों को बताए जो उनके साथ यात्रा कर रहे थे। ''मैं धीरे से टोकरी सरकाकर सरसरी निगाह से देख रही थी कि वह नया साथी ठीक है या नहीं।'' अपने दोस्तों को छोड़ने के बाद, वह उस सांप को जंगल में छोड़ने के लिए जंगल के एक अधिकारी के पास ले गई। ''वह मुझसे बहुत चिढ़े हुए थे। तुम इसे मेरे पास क्यों लेकर आई हो? अब यह मेरी जिम्मेदारी है, वह रिरियाते रहे। कुछ देर तक उनको मनाने के बाद मैंने उस सर्प को उन्हें सौंप दिया, और एक हस्ताक्षरित रसीद प्राप्त करने में भी सफल हुई!''

हानि, वीरता और प्रेम की कहानियों से भरा यह क्षेत्र संकट के समय में मानवता का लघु रूप है। प्रत्येक व्यक्ति के पास सुनाने के लिए एक कहानी है और जहाँ लोगों की स्मृतियों में इतना अधिक विनाश हमेशा रहेगा, वहीं दूसरी ओर उन्हें फरिश्तों की संवेदना और हमदर्दी भी हमेशा याद रहेगी। जैसा कि सूसन टिप्पणी करती है, ''उन सभी ने मानवता के लिए निस्वार्थ भाव से अपनी जी-जान लगा दी।''

चित्र: जयश्री

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

एक नया हाथ

रशीदा भगत

जम्मू से लगभग 212 कि.मी. दूर, किश्तवार की रहने वाली एक सात साल की चमकीली आँखों वाली एक खूबसूरत लड़की, अफ़शा तबस्सुम, एक बिल्कुल नया हाथ मिलने के बाद ख़ुशी से उछल पड़ी, जो उस हाथ का प्रतिस्थापन था जो उसने एक वर्ष की उम्र में एक जलने की दुर्घटना में खो दिया था। जब उसे LN-4 हाथों, उसे मिले नए हाथ की प्रतिकृति, की मदद से दो पहिया वाहन चलाते हुए लोगों का वीडियो दिखाया गया तो वह बहुत खुश हुई और उसने दृढ़ निश्चय के साथ कहा: 'एक दिन मैं इस नए हाथ से कार चलाऊँगी'।

इस कृत्रिम हाथ का सबसे कम उम्र का प्राप्तकर्ता कश्मीर के बुद्गाम का छह वर्षीय रज़ा अज़मत खान, जिसे एक जन्मजात दोष था और वह दाहिने हाथ की पूरी हथेली के बिना पैदा हुआ था, अपने नए हाथ को देखकर स्तब्ध था और उसे लगातार देखे जा रहा था।

वह वास्तव में कोई मेला नहीं था, लेकिन रोटरी क्लब पूना डाउनटाउन, रो ई मंडल 3131, के साथ साझेदारी में जम्मू आस्था और जम्मू मिडटाउन के रोटरी क्लबों द्वारा की जा रही एक परियोजना जिसमें उन लोगों को ऊपरी हाथ फिट करना था जो वर्षों से हाथ की जगह केवल ठूंठे के साथ जी रहे थे, के लिए आयोजित किए गए शिविर का वातावरण त्यौहार जैसा था।

मानव-हितों की कहानियों की कोई कमी नहीं थी और इन क्लबों द्वारा सावधानीपूर्वक सुनियोजित 'न्यू हैंड्स फॉर हैण्डलेस' नामक परियोजना को लागू करने के लिए ''आयोजित शिविर में आंसू और ख़ुशी दोनों थे। इस उपहार को पाने वालों की उम्र 6 से 90 के बीच थी। मेंधर, पुंछ से एक सात वर्षीय लड़का आशिद हुसैन, जिसने कुछ माह पहले एक बारूदी सुरंग विस्फोट में अपना हाथ गंवा दिया था, एक हाथ प्राप्त करके बेहद खुश है क्योंकि वह अब उससे खेल सकता है और दैनिक जीवन के सभी कार्य कर सकता है। साथ ही, हमारे साथ एक वरिष्ठ नागरिक, 90 वर्षीय परमानन्द थे, जो जम्मू के कठुआ के कोरे पुन्नू से एक किसान है, जिन्हें नए हाथ का एक तोहफ़ा मिल

अफ़शा तबस्सुम आपने नए हाथ की सराहना करती हुई।

LN-4 शिविर में रोटेरियन रक्षा बंधन मनाते हुए।

रहा था जिसे उन्होंने करीब 34 साल पहले अपने खेत पर काम करते वक्त खो दिया था, LN-4 हैंड्स शिविर,'' जम्मू के परियोजना निदेशक सुमिल गोयल कहते है।

वह शिविर के भावनात्मक रूप से आवेशित माहौल को याद करते है जहाँ लोग बहुत खुश थे मगर साथ ही उनकी आँखों में आंसू भी थे। लड़कियों में से एक, आरती, LN-4 हाथ मिलने के बाद रोना बंद नहीं कर सकी क्योंकि वह शिविर में अपने माता-पिता को शिविर के बारे में बताए बिना आई थी। किरण भारती ख़ुशी से चिल्लाई क्योंकि वह अब अपने दोनों हाथों का इस्तेमाल करके लैपटॉप संचालित कर सकती है, जिसमें उसे शिविर में प्राप्त हुआ बिल्कुल नवीन बायां हाथ भी शामिल था।

''हम सभी इन भावनाओं से द्रवित थे जिसने सभी स्वयंसेवकों और रोटेरियनों पर एक स्थायी प्रभाव छोड़ा और वे रोटरी के सिद्धांत: स्वयं से ऊपर सेवा को पूरा करने के लिए अपना समय और सेवा देकर प्रसन्न थे,'' उन्होंने आगे कहा।

जम्मू से एक सात वर्षीय लाभार्थी अफ़शा तबस्सुम ने जब चित्र में एक व्यक्ति को LN-4 हाथ से गाडी चलते हुए देखा तो उसने कहा 'एक दिन में भी गाडी चलाऊँगी'।

शुरुआत

हरियाणा, पंजाब से आए 29 लोगों सहित उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, बिहार जैसे दूर दराज के इलाकों से आए 123 लोगों ने शिविर में हिस्सा लिया जिसकी जड़े रोटरी क्लब पूना डाउनटाउन द्वारा 4 फरवरी, 2018 को सभी रोटरी क्लबों को भेजे गए 250 ईमेलों में से एक में थी, और उस ईमेल ने रोटरी क्लब जम्मू आस्था के गोयल का ध्यान अपनी ओर खींचा जो उस समय मंडल 3070 के सहायक गवर्नर थे। वह कहते है, मेल में LN-4 कृत्रिम हाथ का एक परिचय था (बक्सा देखें)। जिज्ञासावश, उन्होंने इस कृत्रिम अंग को लेकर यूट्यूब

पर अनेक वीडियो देखें, और इसके द्वारा की जा सकने वाली भलाई से प्रभावित होकर, उन्होंने अपने क्लब की बैठक में इस तरह की परियोजना को करने की सम्भावना पर चर्चा की।

''लेकिन हमारे क्लब के सदस्यों की मुख्य परेशानी यह थी कि करीब ₹3 लाख की परियोजना करना उचित नहीं होगा जो केवल कुछ ही लोगों को लाभान्वित करेगी। लेकिन उन्हें आश्वासित किया गया कि यदि वे कड़ी मेहनत और लगन के साथ काम करेंगे, तो इतनी ही लागत में यह परियोजना लगभग 150 लोगों को लाभान्वित कर सकती है, वह याद करते है।

दानकर्ता

यह संभव था क्योंकि भले ही भारत में प्रत्येक कृत्रिम अंग की कीमत लगभग ₹30,000 पड़ती है, LN-4 हाथों को यूएस के एलेन मीडोज प्रोस्थेटिक हैंड्स फाउंडेशन से मुफ्त में मंगवाया जाता है। इस कृत्रिम हाथ को एक अमेरीकी जोड़े एर्नी और मार्ज मीडोज द्वारा डिज़ाइन करके दान किया गया था। रोटरी क्लब पूना डाउनटाउन के LN-4 परियोजना समिति के अध्यक्ष, अनिल चड्ढा कहते है: ''एर्नी मीडोज एक औद्योगिक डिज़ाइनर है जिनके पास अनेक वर्षों का अनुभव है और वह एक कार्यात्मक, सस्ता, कोहनी के नीचे का कृत्रिम हाथ बनाने का कार्य करते है जिसे आज हम LN-4 के नाम से जानते है। मूल रूप से भूमि खानों के युवा पीड़ितों के लिए डिज़ाइन किए गए इस हाथ ने वास्तविक उद्देश्य के परे जाकर सैकड़ों लोगों, बच्चों और वयस्कों को लाभान्वित किया।'' उनके नेतृत्व में LN-4 हैण्ड समिति ने 3,300 से अधिक हाथ से वंचित लोगों को हाथ प्रदान करने के लिए पूरे भारत में इस तरह के 34 शिविर आयोजित किये है।

मूल रूप से अर्नी मीडोज, एक अमेरिकन, द्वारा भूमि खानों के युवा पीड़ितों के लिए डिजाइन किया गया LN-4 हाथ ने सैकड़ों लोगों को लाभान्वित किया है, बच्चे और वयस्कों, को मूल मंशा से परे।

अनिल चड्डा, अध्यक्ष
LN-4 परियोजना समिति, रोटरी क्लब पूना डाउनटाउन

बाद में, LN-4 कृत्रिम को एलेन मीडोज, ''उनकी बेटी जो 18 साल की कम उम्र में एक ऑटोमोबाइल दुर्घटना में चल बसी थी, की स्मृति का सम्मान करने के लिए बनाया गया। LN नाम एलेन का संक्षिप्त रूप है। उनकी वेबसाइट पर प्रदर्शित उनका आदर्श वाक्य कहता है: ''हमारा लक्ष्य व्यक्तियों को सशक्त बनाकर दुनिया में एक परिवर्तन लाने का है ताकि वे जरूरतमंद लोगों को हल्का, टिकाऊ, कार्यात्मक कृत्रिम हाथ देकर उनकी सहायता कर सकें। हमारे LN-4 हाथ दुनियाभर में प्राप्तकर्ताओं को मुफ्त में वितरित किए जाते है। हम तब तक नहीं रुकेंगे जब तक इसकी जरूरत वाले किसी भी व्यक्ति को यह मिल ना जाए।''

जम्मू से प्रेम नाथ अपने कृत्रिम हाथ से स्कूटर चलाते हुए।

जम्मू कश्मीर MLC रमेश अरोडा (ग्रे जैकेट में) जम्मू के LN-4 हैंड शिविर के उद्घाटन में।

एक शिविर का विचार उत्पन्न हुआ

यूएस से जम्मू वापस आते हुए, जब रोटरी क्लब जम्मू आस्था के सदस्य इस परियोजना द्वारा लाए जा सकने वाले प्रभाव से आश्वस्त हो गए, तो 26 अगस्त, रक्षाबंधन के पावन अवसर पर जम्मू में एक शिविर आयोजित करने का निश्चय किया गया। शहर में अग्रवाल धर्मशाला की उपलब्धता के आधार पर तिथि का अंतिम निर्णय लिया गया जो अमरनाथ यात्रा के बाद खाली थी और रोटेरियनों को मुफ्त में दी गई थी।

अप्रैल से, इस परियोजना के लिए काम शुरू किया गया ''जिसे चड्डा के अनुभवी मार्गदर्शन के तहत सतर्कतापूर्वक योजनाबद्ध किया गया था,'' गोयल कहते है। हालाँकि उनके क्लब ने कार्य शुरू कर दिया था, फिर भी एक अनमोल साझेदारी का प्रारंभ हुआ जब जून अंत तक उनके पास केवल 43 पंजीकरण हुए थे। इस प्रकार रोटरी क्लब जम्मू मिडटाउन आगे आया और धन एकत्रित करने और लाभार्थियों को खोजने की बाधाओं को दूर कर लिया गया। शिविर का उद्घाटन जम्मू कश्मीर की विधान परिषद के सदस्य, रमेश अरोरा द्वारा किया गया।

दोनों क्लबों के रोटेरियनों द्वारा एक उचित तालमेल, फिर चाहे वह लाभार्थियों को खोजने में हो या फिर भोजन की व्यवस्था करने से लेकर रोटरी की सार्वजनिक छवि को बढ़ाने के लिए एक अच्छा मीडिया कवरेज सुनिश्चित करने के लिए परामर्श सेवाओं जैसी विभिन्न सेवाओं के लिए शिविर में स्वेच्छा से काम करने में हो, के साथ काम करने से शिविर एक बड़ी सफलता बन गया। ''यह जम्मू में दो क्लबों के बीच उत्कृष्ट समन्वय का दुर्लभ उदाहरण था, LN-4 परियोजना के संस्थापक रोटेरियन प्रदीप मुनोट कहते है।

अनुमानित लागत

प्रत्येक हाथ की अनुमानित लागत पर, गोयल कहते है, ''हम एक LN-4 कृत्रिम हाथ की प्रत्यक्ष लागत 200-250 डॉलर तक होने का अनुमान लगा सकते है। यह केवल प्रत्यक्ष लागत का अनुमान है और इसमें कोई अन्य मूल्य वृद्धि शामिल नहीं है। भारत में सबसे सस्ते हाथ की कीमत 30,000 से अधिक है और वह केवल सुन्दरता बढ़ाने वाला है। LN-4 हाथ में बड़ी कार्यक्षमता है क्योंकि यह टूथब्रश,

LN –4 हाथ में बड़ी कार्यक्षमता है, जैसा कि यह टूथब्रश, कांटा, चम्मच, कलम, मग, आदि जैसे किसी वस्तु को पकड़ सकता है।

सुमिल गोयल
परियोजना निदेशक, LN–4 हैंड शिविर, जम्मू

वड़ा-पाव का चमत्कार!

प्रदीप मुनोट

सितंबर 2013 के आसपास, हमारे रोटरी क्लब पूना डाउनटाउन की ङ्गगतिशीलता का उपहार समितिफ की एक बैठक रोटेरियन शब्बीर जामनगरवाला द्वारा संचालित की गई थी। मैं शब्बीर भाई की बैठकों में 100 प्रतिशत होने की कोशिश करता हूँ, क्योंकि यह हमेशा एक वड़ा-पाव बैठक होती है जिसमें कभी-कभी मूंग दाल के भजिये भी शामिल होते है।

हमेशा की तरह शब्बीर गंभीर थे। इंटरनेट पर सर्फिंग करने के दौरान उन्हें कृत्रिम LN-4 हाथ का पता चला। वह बहुत अधिक प्रभावित थे और चाहते थे कि हम उस परियोजना को करें। मेरी रीति हमेशा से ही विरोध करने की रही है। मैंने निष्ठापूर्वक विरोध किया। मेरी दलील थी, हमें अपने दायरे में रहकर कार्य करना चाहिए। हम इतनी बड़ी परियोजनाओं को करने के लिए तैयार नहीं है। लेकिन शब्बीर, हमेशा की तरह, अटल और दृढ़ संकल्पी बने रहे, और हम सब ने अनिच्छा से पालन किया।

कई बैठकों, पत्र-व्यवहारों, फ़ोन पर बातचीतों के बाद, हमने अंततः 11 और 12 जनवरी, 2014 को हमारे पहले LN-4 शिविर की घोषणा की। परंतु हम घबराए हुये थे। हालाँकि शब्बीर के आग्रह पर, हम सब ने LN-4 की वेबसाइट और यूट्यूब पर वीडियो देखे, तब भी हम विश्वस्त नहीं थे और चिंतित थे क्योंकि यह पूरी तरह से एक नया क्षेत्र था। हमारे अनुरोध पर दो प्रशिक्षित व्यक्तियों को बैंगलोर से हमारी सहायता के लिए भेजा गया। शिविर एक बड़ी सफलता साबित हुआ। 74 चेहरों पर मुस्कुराहट इतना बड़ा इनाम थी कि हमने 20 अप्रैल, 2014 को एक और शिविर आयोजित करने का निश्चय किया।

अगला वर्ष मार्च और जून में दो छोटे शिविरों के साथ थोड़ा मंदा था, लेकिन इन शिविरों ने कभी ना सोची गई बड़ी सफलता की गाथाओं के लिए मार्ग प्रशस्त किया। इंदौर के एक सक्रिय युवा रोटेरियन तरुण मिश्रा से मेरा परिचय करवाया गया। तरुण और तत्कालीन डीजीई संजीव गुप्ता हमारे प्रस्तुतीकरण से इतने अधिक प्रभावित थे कि उन्होंने इसे उनके मंडल की परियोजना के रूप में शुरू करने का निश्चय किया। इसे उनके PETs में प्रस्तुत किया गया और प्रतिक्रिया जबर्दस्त थी। हमने रोटरी क्लब इंदौर अपटाउन, मंडल 3040 के साथ हाथ मिलाया, और नौ स्वयंसेवियों के साथ इंदौर में अगस्त 2015 में आयोजित हुये शिविर में सेवा दी। मंडल 3131 से हमारे डीजी सुबोध भी इंदौर में हमारे दल से जुड़े। शिविर में 155 हाथ लगाए गए। हमने इंदौर के स्वयंसेवियों को प्रशिक्षित किया और उन्होंने बाद में स्वतंत्र रूप से कई और शिविर आयोजित किये।

बाद में जामनगर द्वारा इसका अनुकरण किया गया। जामनगर की उनकी निजी यात्रा के दौरान, शब्बीर जामनगर के रोटेरियनों से मिले और इंदौर की सफलता को दोहराया गया। जामनगर के दल ने भी स्वतंत्र रूप से कई शिविर आयोजित किये और हर माह में एक रविवार को हाथों के वितरण की व्यवस्था करके इस गतिविधि को जारी रखा है।

एक लाभार्थी लिखने का प्रयास करते हुए।

पिछले वर्ष से हमारी समिति के अध्यक्ष अनिल चड्ढा ने पूरे भारत के रोटरी क्लबों के अध्यक्षों और सचिवों को बड़े पैमाने पर मेल भेजकर उन्हें इस अनूठी परियोजना के बारे में बताना शुरू किया। और हमें संपूर्ण भारत से प्रतिक्रियाएं प्राप्त हो रही है।

हमने अभी तक महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, गुजरात, राजस्थान, तमिलनाडू, बिहार, कर्नाटक, उत्तरप्रदेश, तेलंगाना, जम्मू-कश्मीर जैसे राज्यों में, इंदौर, दोंदैचा, जामनगर, कोपरगाँव, लातूर, अचलपुर, उदगीर, कल्याण, वापी, कुली (जयपुर), सतारा, नंदुरबार, पनवेल, शिर्डी, मदुरई, दरभंगा, भागलपुर, रायचुर, अलाहबाद, निज़ामाबाद, चेन्नई, सोलापुर, त्रयंबकेश्वर और जम्मू जैसे स्थानों पर 34 LN-4 शिविरों का आयोजन किया है। हमारे दल के एक सदस्य विक्रमजीत मेहमी टिप्पणी करते है कि इतिहास में पहली बार पेशवा बाजीराव के बाद, पुणे का नाम इतनी सारी जगहों पर रोशन हुआ है!

हमने 23 रोटरी क्लबों - इंदौर अपटाउन, दोंदैचा सीनियर्स, जामनगर, पुणे सरसबाग, पुणे इन्स्पिरा, लातूर होराइजन, अचलपुर, उदगीर सेंट्रल, कल्याण, वापी, जयपुर, जयपुर मेजेस्टी, पनवेल मिडटाउन, मदुरई मल्लिगई, दरभंगा, विक्रमशिला पिंक, कॉटन सिटी रायचुर, अलाहबाद नार्थ, निज़ामाबाद, मद्रास सेंटेनरी कॉममेमोरेशन, सोलापुर, जम्मू आस्था, जम्मू मिडटाउन, सतारा के एक इनरव्हील क्लब, एक लायंस क्लब - कोपरगाँव और महाराष्ट्र आरोग्य मंडल, विवेकानंद हॉस्पिटल और भारत विकास परिषद् जैसे गैर सरकारी संगठनों के सहयोग से काम किया।

पुणे, कल्याण, जयपुर, वापी, जामनगर, निज़ामाबाद में स्थायी ढ्ढछ-4 केंद्र स्थापित किये गए है और रायचुर एवं लातूर में स्थापित किये जाएँगे। अभी तक फिट किये गए हाथों की कुल संख्या 3,310 है।

2013 में शुरुआत से ही, बैंगलोर के पूर्व अध्यक्ष के. वी. मोहनकुमार द्वारा हमें निर्देशित और समर्थित किया गया और हम उनके आभारी है। वह और एलेन मीडोज संस्थान दोनों इस विशाल, अद्वितीय उपस्थिति और विशेषरूप से इंदौर, जामनगर और जयपुर में 'तरंगनुमा' प्रभाव के कारण अत्यंत खुश और प्रशंसात्मक थे। हमारा क्लब उनकी प्रतिष्ठित 'साझेदारों की सूची' में सम्मिलित है।

पिछले साल मुझे और शब्बीर को एलेन मीडोज संस्थान द्वारा 'विशिष्ट सेवा पुरस्कार' प्रदान किया गया। हम सहयोगी क्लबों - इंदौर अपटाउन, जामनगर, जयपुर मेजेस्टी - से घनिष्ठ संपर्क बनाए हुए है और उनसे नवाचार साझा करते है।

टीम LN-4 रोटरी क्लब पुणे डाउनटाउन के सभी सदस्यों के निरंतर समर्थन के लिए उनकी आभारी है। मैं टीम LN-4 के अपने साथियों, जिसमें बड़ी संख्या में गैर-रोटेरियन शामिल है, को सलाम करता हूँ और हमारे नेतृत्वकर्ता शब्बीर के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। यह उनकी परिकल्पना और दृढ़ संकल्प है जिसने हमें इतनी शानदार संतोषजनक यात्रा की ओर अग्रसर किया। इस परियोजना ने हमें पूरे देश में अनेक दोस्त दिए है। लेकिन प्राप्तकर्ताओं के चेहरों पर प्रसन्नता देखकर अपार संतोष की प्राप्ति होना ही असली इनाम है।

और, मेरा यकीन मानिये, इस सब की शुरुआत वड़ा-पाव के साथ हुई!

लेखक रोटरी क्लब पूना डाउनटाउन की LN-4 हाथ समिति के एक सदस्य है।

हमने अभी तक 34 LN-4 शिविरों का आयोजन किया है। हमने 23 रोटरी क्लबों के सहयोग से काम किया।

प्रदीप मुनोत
सदस्य, LN-4 हाथ समिति

कांटा, चम्मच, पेन, मग, इत्यादि जैसी चीज़ों को पकड़ सकता है। सूची अंतहीन है।''

यह वास्तव में कैसे कार्य करता है पर, वह कहते है कि LN-4 को लाभार्थियों के ठूँठे पर बांध दिया जाता है जो कोहनी के नीचे होता है। उनके पास छोटे ठूँठे (2.0-3.5 इंच) के 12 विशेष मामले थे और ऐसे मामलों के लिए रोटरी क्लब पूना डाउनटाउन ने एक सार्वभौमिक विस्तारक तैयार किया है जिस पर ढ्ढछ-4 हाथ फिट किया जाता है। इसकी कीमत केवल ₹800 है। हालाँकि 12 लाभार्थियों के इस तरह के विस्तारक के साथ हाथ फिट किये जा चुके है, अन्य 18 लाभार्थी इस तरह के स्थानीय स्तर पर निर्मित उचित विस्तारकों के फिट होने की प्रतीक्षा कर रहे है, वह आगे कहते है।

हालाँकि इस शिविर में कार्य करने वाले रोटेरियनों की सूची यहाँ पर शामिल करने के हिसाब से बहुत लंबी है, गोयल कहते है पुणे से रोटेरियनों के दल के ठहरने के लिए होटल, आयोजन स्थल, भोजन, इत्यादि जैसी अनेक चीज़ों के लिए प्रायोजन के कारण, परियोजना की लागत ₹2.5 लाख से 3 लाख के बीच ही आई।

इस शिविर की सफलता से उत्साहित होकर, जहाँ स्वयंसेवियों द्वारा लाभार्थियों और अन्य लोगों की कलाई पर राखी बांधी जाने के साथ ही माहौल किसी मेले की तरह प्रतीत हो रहा था, दोनों क्लबों ने एक स्थायी परियोजना - जम्मू में एक LN-4 हाथ फिट करने का केंद्र - स्थापित करने का निश्चय किया है, दोनों मेजबान क्लबों के अध्यक्ष निर्मल गुप्ता और राखी सिंगल ने घोषणा की।

''उन अद्भुत क्षणों, जब कृत्रिम हाथ स्थापित किये जा रहे थे, का हिस्सा बनने पर मैंने अभिभूत

हमारे साथ एक वरिष्ठ नागरिक, 90 वर्षीय परमानन्द थे, जो जम्मू के कठुआ के कोरे पुन्नू से एक किसान है, जिन्हें नए हाथ का एक तोहफा मिल रहा था जिसे उन्होंने करीब 34 साल पहले अपने खेत पर काम करते वक्त खो दिया था।

एक लाभार्थी जिसे कृत्रिम हाथ लगा हैं, खेती करते हुए।

महसूस किया; इस पहल के लिए दोनों क्लब प्रशंसा के हक़दार है। मुझे यकीन है कि यह एक स्थायी परियोजना बनेगी और मंडल 3070 में विकलांग व्यक्तियों को लाभान्वित करेगी,'' मंडल 3070 के मंडल सचिव, डॉ यू एस घई ने टिप्पणी की, जो अपने मंडल में इस तरह की पहली परियोजना में भाग लेने के लिए जालंधर से आए थे।

मंडल 3070 के डीजी ब्रजेश सिंघल ने आगे कहा, ''रोटरी क्लब जम्मू आस्था और रोटरी क्लब जम्मू मिडटाउन सबसे हटके परियोजना करने के लिए प्रशंसा का हक़दार है। रक्षाबंधन के शुभ अवसर पर बिना हाथ वालों को हाथ प्रदान करने से बेहतर और क्या हो सकता है?''

लाभार्थियों की पहचान करने के लिए, व्हाट्सएप और फेसबुक जैसे सोशल मीडिया का सन्देश भेजने के लिए उपयोग करने, और पंजाब में ज़िला अस्पतालों के चिकित्सा अधिकारियों और सर्जनों, जम्मू और कश्मीर के सामाजिक कल्याण विभाग के साथ-साथ खण्ड विकास अधिकारियों से व्यक्तिगत रूप से संपर्क करने जैसी जागरूकता गतिविधियों की एक विस्तृत श्रृंखला ने पूर्व-पंजीकरण की संख्या को 184 तक पहुँचा दिया। कुछ स्वयंसेवी सीमावर्ती इलाकों के दूर-दराज के गाँवों में मोटरसाइकिल से भी गए और लोगों के पंजीकरण करवाए। प्रमुख हड्डी के सर्जनों से ऊपरी हाथ छिन्नांगों की सूची प्राप्त की गई। बस अड्डों, रेलवे स्टेशनों, मन्दिरों, गुरुद्वाराओं इत्यादि जैसे सार्वजनिक स्थानों पर फ्लेक्स बैनर लगाए गए। स्थानीय बसों और सरकारी कार्यालयों में पैम्फ़लेट रखे गए। ''हालाँकि, जम्मू-कश्मीर के पहाड़ी इलाकों में भूस्खलन और अन्य व्यक्तिगत कारणों से, लगभग 50 पंजीकृत लोग शिविर वाले दिन नहीं आ पाए और उनको जल्द ही LN-4 हाथ फिट किये जाएँगे,'' गोयल कहते है।

अपने अध्यक्ष सुबीर गुहा के नेतृत्व में रोटरी क्लब पूना डाउनटाउन के 12 स्वयंसेवियों का एक दल उस परियोजना के लिए एक महत्वपूर्ण कड़ी साबित हुआ जिसने जम्मू और पुणे जैसे दूरस्थ क्षेत्रों के क्लबों के मध्य आदर्श सहयोग प्रदर्शित किया। ''उन्होंने परियोजना के लिए कुछ 30 कार्य दिवस दिए और हालाँकि वे जम्मू गए, फिर भी उन्होंने द्वितीय एसी ट्रेन के किराए की केवल 50 प्रतिशत प्रतिपूर्ति करने का निवेदन किया,'' एक कृतार्थ परियोजना निदेशक गोयल कहते है।

मैं अब तक एक हाथ से क्रिकेट खेलता था। लेकिन रोटरी ने मुझे एक कृत्रिम हाथ प्रदान किया। अब मैं दुनिया का सबसे बड़ा क्रिकेटर बनूँगा।

जयेश सावंत, एक लाभार्थी

LN-4 हाथ समिति के सदस्यों को प्राप्त हुए सर्वश्रेष्ठ पुरस्कारों में से एक था 12 वर्षीय जयेश सावंत का एक पत्र, जिसने मराठी में लिखा था: ''मैं अब तक एक हाथ से क्रिकेट खेलता था। लेकिन रोटरी ने मुझे एक LN-4 कृत्रिम हाथ प्रदान किया। अब मैं दुनिया का सबसे बड़ा क्रिकेटर बनूँगा। मेरा आधा सपना रोटरी द्वारा पूरा किया गया है, अब मैं शेष आधा पूरा करूंगा! आपका शुक्रिया, रोटरी क्लब!''

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

रो ई दक्षिण एशिया कार्यालय से संदेश

रोटरी इंटरनेशनल दक्षिण एशिया कार्यालय, पुल्मैन/नोवोटेल कमर्शियल टॉवर,
प्रथम तल, एसेट न. 2, आतिथ्य मंडल, एरोसिटी (आईजीआई हवाई अड्डे के निकट), नई दिल्ली 110037

रोई दक्षिण एशिया कार्यालय से संदेश

रोटरी का नया अध्ययन केंद्र अब शुरू हो गया है!

रोटरी का नया अध्ययन केंद्र अब *rotary.org/learn* पर शुरू हो गया है। पाठ्यक्रमों का अन्वेषण करें और विभिन्न ऑनलाइन अध्ययन संसाधनों का लाभ उठाएं।

2018-19 रोटारेक्ट उत्कृष्ट परियोजना पुरस्कार नामांकन फॉर्म

2018-19 रोटारेक्ट उत्कृष्ट परियोजना पुरस्कार के लिए अपने रोटारेक्ट क्लब या मंडल की सर्वश्रेष्ठ स्थानीय या अंतर्राष्ट्रीय परियोजना का नामांकन करें। यह पुरस्कार रोई के मानवीय सेवा लक्ष्यों को आगे बढ़ाने और उनपर अधिक ध्यान केन्द्रित करने वाली असाधारण सामुदायिक या अंतर्राष्ट्रीय सेवा परियोजनाओं को सम्मानित करता है। 1 फरवरी, 2018 से 31 जनवरी, 2019 तक होने वाली परियोजनाएं पुरस्कार की पात्र है। नामांकन फॉर्म *https://rotary.qualtrics.com/jfe/form/SV_4USAyCAu9r9ZHut* पर उपलब्ध है।

- दस्तावेजों जैसे कि संदर्भ पत्र, बहुधा पूछे गए प्रश्नों, प्रक्रिया प्रवाह और वेबिनार के दौरान तैयार किये गए प्रस्तुतिकरण के लिए जयश्री जयरमन से *jayashree.jayaraman@rotary.org* पर संपर्क करें।

मंडल रोटरी संस्थान समिति अध्यक्षों की नियुक्ति

उन मंडलों में जहाँ DRFC का कार्यकाल 30 जून, 2019 को समाप्त हो रहा है, वहाँ के संबंधित DGE से अनुरोध है कि वे DGN और DGND से परामर्श करके DRFC उम्मीदवार के नाम भेजें। DGE को उन दोनों से चयनित DRFC के लिए लिखित पुष्टि पत्र प्राप्त करना होगा और स्वीकृति पत्र मंडल की फाइल में होना चाहिए। DRFC उम्मीदवार का विवरण 31 दिसम्बर, 2018 तक अन्य मंडल नियुक्तियों के साथ *MyRotary.org* के माध्यम से जमा करें। DRFC नियुक्ति प्रक्रिया से संबंधित किसी भी प्रश्न के लिए कृपया *DRFC@rotary.org* पर ईमेल करें।

2018–19 District-wise fundraising goals finalised by RRFCs at the DISHA meet

Zone 4 & 6A		Zone 5	
District	2018–19 Goal (in US$)	District	2018–19 Goal (in US$)
3100	106,000	2981	400,000
3011	1,310,000	2982	300,000
3012	925,000	3000	1,000,000
3030	500,000	3020	250,000
3040	300,000	3150	750,000
3053	250,000	3160	268,000
3054	641,000	3170	1,200,000
3060	1,030,000	3181	300,000
3070	215,000	3182	400,000
3080	600,000	3190	2,000,000
3090	100,000	3201	1,000,000
3131	1,200,000 +	3202	200,000
3132	165,000	3211	1,000,000
3141	7,000,000	3212	300,000
3142	1,000,000 +	3220	200,000
3110	425,000	3231	806,000
3120	400,000	3232	1,000,000
3240	400,000		
3250	360,075		
3261	200,000		
3262	500,000		
3291	410,000		
3292	730,000		
Zone 4 & 6A Total	**16,567,075**	**Zone 5 Total**	**11,374,000**
Grand Total (Zone 4; 5; 6A)			**27,941,075**
Fundraising Goal - India			**27,011,075**

समय आ गया है कि रोटरी टी बी की चुनौती का सामना करें

रशीदा भगत

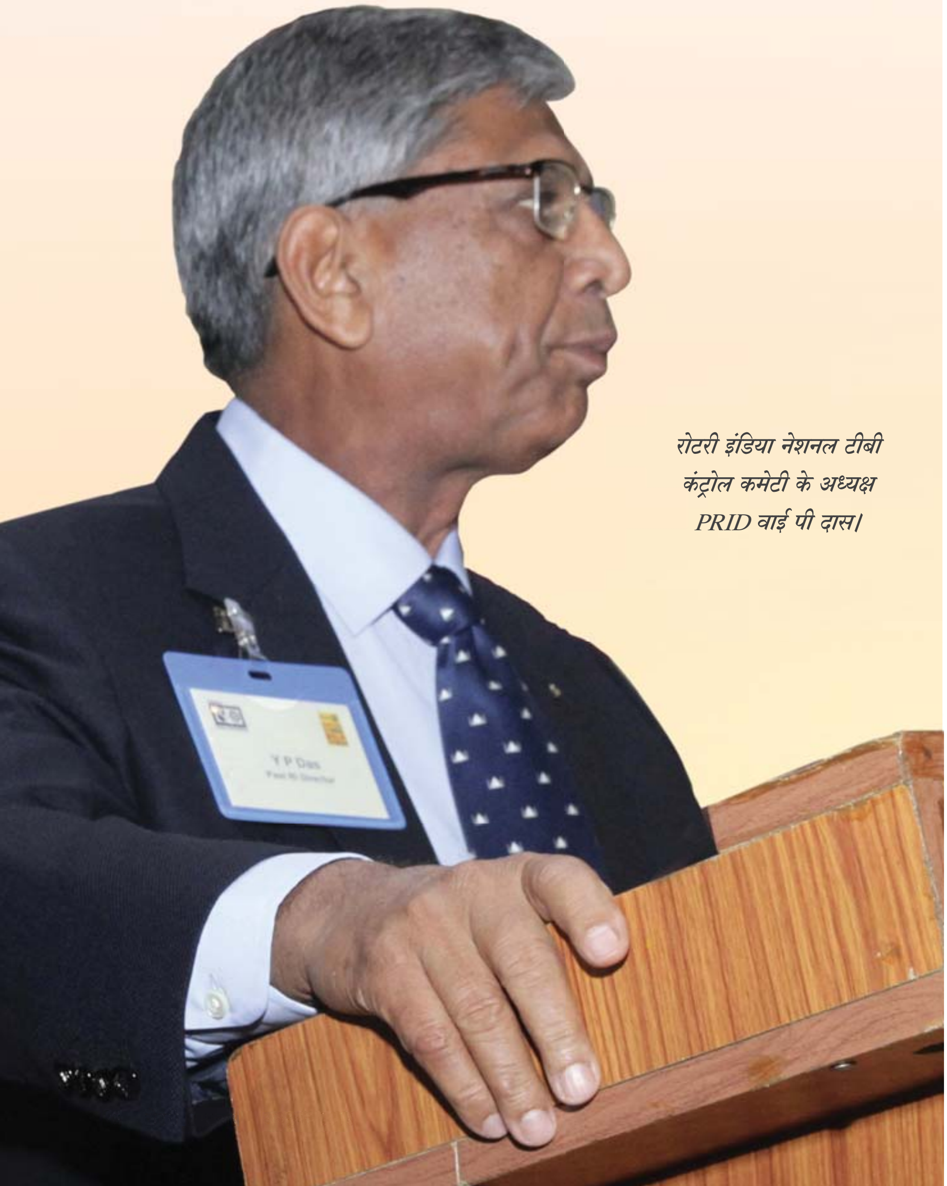

रोटरी इंडिया नेशनल टीबी कंट्रोल कमेटी के अध्यक्ष PRID वाई पी दास।

''क्या आप जानते हैं कि भारत में टीबी की वजह से प्रत्येक मिनट एक व्यक्ति की मृत्यु हो रही है? और विश्व में क्षय रोग के 25 प्रतिशत मामले भारत में हैं।'' रोटरी इंडिया नेशनल टीबी कंट्रोल कमेटी के अध्यक्ष पीआरआईडी वाई पी दास ने दिल्ली में भारत में टीबी के संकट पर ध्यान केंद्रित करने के लिए आयोजित बैठक को संबोधित करते हुए कहा।

पिछले 20 वर्षों से भारत इसका समाधान खोज रहा है कि इस बीमारी का सामना कैसे किया जाए। लेकिन सौभाग्य से, इस वर्ष मार्च में, प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि आओ, 2030 तक टीबी को 90 प्रतिशत तक कम करने के वैश्विक लक्ष्य से एक कदम और आगे बढ़ें। ''प्रधान मंत्री ने कहा लेकिन भारत में स्वयं को टीबी से मुक्त करने का यह लक्ष्य 2030 नहीं बल्कि वर्ष 2025 होगा। फिर क्या था सरकारी कार्यालयों में नीचे दबी, धूल खा रही फाइलें ऊपर नज़र आने लगीं और अब स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा टीबी को प्राथमिकता दी जा रही है।''

पीआरआईडी दास ने दोहराया कि माना ''हमारी प्राथमिकता पोलियो उन्मूलन है, लेकिन टीबी नियंत्रित करने के लिए, हमें अपने रोटेरियनों को, वे जो कुछ भी कर सकते हैं, उसके प्रति संवेदनशील बनाना होगा। हमें मालूम होना चाहिए कि टीबी का उन्मूलन नहीं किया जा सकता; इसे केवल नियंत्रित किया जा सकता है।''

हमेशा की तरह, इस क्षेत्र में भी, रोटरी ने इंटरनेशनल यूनियन फॉर टी बी एंड लंग डिज़ीज़; REACH और टाटा ट्रस्ट दोनों के साथ महत्वपूर्ण साझेदारी पर हस्ताक्षर किये हैं। अंत में 14 रोटरी क्लबों के साथ मिल कर नागपुर में सक्रीय मामलों की खोज के सन्दर्भ में एक पायलेट परियोजना शुरू की है, अगर यह सफल रही तो इसे पूरे देश में दोहराया जाएगा।

अमिताभ बच्चन जैसी सेलिब्रिटी ने टीबी के खिलाफ चल रही मुहिम में अपनी आवाज दी थी। ''वह स्वयं टीबी का दंश झेल चुके है, उन्हें रीढ़ की हड्डी में टीबी थी। बच्चन ने कहा कि अगर उन जैसे व्यक्ति को टीबी हो सकती है, जिसके पास सर्वश्रेष्ठ स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध हैं, तो आम लोगों की दुर्दशा का अंदाज़ा लगा सकते हैं।''

अगर मंडल अध्यक्षों ने ज़िम्मेदारी ले ली और अपने क्लबों को प्रेरित किया तो निश्चय ही टीबी नियंत्रित करने में काफी प्रगति की जा सकती है। दास ने कहा, ''जो लोग इसमें रूचि रखते हैं वह इस काम को ले सकते हैं। हम इसे आपके गले में नहीं बांधेंगे। इसमें रुचि रखने वाले मुझे ईमेल भेज सकते हैं जिसका जवाब मैं पांच मिनट में दूंगा ... हम आपको बहुत सारी जानकारी उपलब्ध करा सकते हैं।''

एक टीबी चैंपियन

बैठक को संबोधित करते हुए, जिसमें मंडल अध्यक्षों और कई अन्य वरिष्ठ रोटरी नेताओं ने भाग लिया था, एक टीबी चैंपियन नेहा सिंह ने बीमारी के साथ चली अपनी लंबी लड़ाई के बारे में बताया। ''जब मुझे टीबी हुई, तो मैं बहुत छोटी थी, मुझे और मेरे परिवार को नहीं पता था कि टीबी क्या है। हम नहीं जानते थे कि इससे कैसे निपटें।''

नौ महीने तक उसका इलाज़ चला पर उसके बाद भी खांसी नहीं गई और लगातार वज़न कम हो रहा था, इसलिए उसके माता-पिता उसे एक निजी डॉक्टर के पास ले गए, जिन्होंने बताया कि उसे दुबारा टीबी हो गई है। ''फिर से दस महीने इलाज हुआ लेकिन उससे भी ठीक नहीं हुई। मुझे एक विशेष सरकारी टीबी अस्पताल जाना पड़ा जहां डॉक्टरों ने कहा कि मुझे एमडीआर (मल्टीड्रग-प्रतिरोधी) टीबी है जिसमें टीबी की अधिकांश दवाइयां काम नहीं करती हैं।''

दो उपचारों की मानसिक यंत्रणा से गुजरने के बाद, अब उससे कहा गया कि दो साल और इलाज चलेगा। ''इसके लिए मैं कतई राज़ी नहीं थी; रोज़ाना एक इंजेक्शन और 15 तरह की दवाइयां, सात महीनों तक लेनी पड़ी।'' लेकिन इस कटु अनुभव से बच निकलने के बाद अब वह महसूस करती है कि टीबी के बारे में लोगों की कई मिथक और गलत धारणाएं हैं, खासकर लड़कियों के बारे में। ''अगर एक लड़की को टीबी है, तो उसके पास नहीं बैठना चाहिए। लोगों ने हमारे परिवार से दूरी बना ली थी और कोई भी यह नहीं पूछता था कि मैं ठीक भी हो रही हूँ या नहीं। अन्य बीमारियों में, कम से कम लोगों को सामाजिक समर्थन तो मिल जाता है लेकिन मुझे तो वो भी नहीं मिला।''

नेहा सिंह एक TB चैंपियन।

शुरुआत में ही बीमारी के सही इलाज की ज़रुरत पर ज़ोर देते हुए नेहा ने कहा, यदि तीसरी बार की बजाय पहली दफा में ही एमडीआर टीबी का इलाज किया जाता तो बहुत पहले ही वो ठीक हो जाती और काफी तकलीफ से बच जाती। उन्होंने रोटेरियनों से इस कार्य में सहयोग करने के लिए अपील की।

दास ने आगे कहा ''टीबी का सरकारी उपचार 100 प्रतिशत मुफ्त है। सरकार के पास पैसे की कमी नहीं है; इसे सिर्फ सही भागीदारों की जरूरत है और हम रोटेरियन इसे कर सकते हैं।''

डॉ इमरान सैयद, कंट्री डायरेक्टर, चैलेंज टीबी, इंटरनेशनल यूनियन अगेन्स्ट ट्यूबरकुलोसिस ने बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि पोलियो, खसरा आदि वायरस के कारण होते हैं जबकि इस के ठीक विपरीत, टीबी एक बैक्टीरिया की वजह से होती है। यह शरीर के लगभग सभी हिस्सों को प्रभावित करती है और इस के मुख्य लक्षण : बुखार, दो सप्ताह से अधिक खांसी, वजन घटना और रात में पसीने आना। उन्होंने बताया कि 2007-08 में मुरादाबाद में पोलियो में काम करने के बाद ही उन्हें पता चला कि पोलियो टीकाकरण हेतु लोगों को प्रेरित करने के लिए रोटरी ने कितनी अधिक मेहनत की थी।

उसी प्रकार, ''सबसे बड़े संक्रामक हत्यारे'' से लड़ने में आज रोटरी की मदद की ज़रुरत है; ''हर साल टीबी की वजह से लगभग 45,000 लोगों की मृत्यु हो जाती है। हम विश्व की आबादी का छठा हिस्सा हैं लेकिन टीबी के मामलों में हम एक चौथाई हैं। कुछ गणितीय विश्लेषणों का कहना है कि अगर हमने इस पर अभी कार्य शुरू नहीं किया, तो इस बीमारी के लिए हम 2050 तक 1.6 ट्रिलियन डॉलर गँवा देंगे।''

एक बार जब व्यक्ति को टीबी हो जाए, तो इसका इलाज 6 महीने तक करवाना पड़ता है; और अगर यह एमडीआर टीबी है तो 24 महीने तक। बगैर चिकित्सा बीमा के टीबी ग्रस्त व्यक्ति कुपोषण और गरीबी के दुष्चक्र में फंस जाता है। पहले तो काम करने की ऊर्जा नहीं रहती, ऊपर से कोई काम ही नहीं है, इसलिए खुद के और परिवार के भरण पोषण के लिए पैसा नहीं होता। ''हम कहते हैं कि भारत ने टीबी के लिए बहुत कुछ किया है ... लेकिन पिछले एक दशक में हमने जो कुछ किया वो ये है कि टीबी को पांचवें सबसे बड़े हत्यारे से सिर्फ छठे सबसे बड़े हत्यारे के स्थान पर खिसका दिया है।'' उन्होंने कहा, और सबसे खराब बात यह है कि जिस उम्र के लोग टीबी से सबसे अधिक प्रभावित होते

हैं वो है 15 से 35 साल का आयु समूह और यही आयु समूह सबसे अधिक उत्पादक है।

रोटेरियन कैसे मदद कर सकते हैं, इस पर उन्होंने बताया कि हां, मुफ्त निदान और उपचार की नीति सहित सरकारी धन भी उपलब्ध है, लेकिन जब जरूरतमंद लोगों तक ये सेवाएं पहुंचने की बात हो तो वहां अभाव महसूस होता है और अभी तक हम आवश्यक कवरेज के 30 प्रतिशत तक पहुंचने में भी कामयाब नहीं हुए है। इसलिए इन सुविधाओं को लोगों तक पहुंचाने के लिए जमीनी स्तर पर काम करने की आवश्यकता है, जब भी जहां भी ज़रुरत हो।

''और भी महत्वपूर्ण है, इसके प्रति जागरूकता; टीबी केवल गरीबों को ही नहीं होती; यदि आप एसी कार में ड्राइव करते हैं, तो आपका चालक जो एक झोपड़पट्टी में रहता है, आपको टीबी दे सकता है, या ऐसे ही आपकी नौकरानी से भी टीबी हो सकती है। आप तब तक सुरक्षित नहीं हैं जब तक आपके आस-पास के किसी भी व्यक्ति को टीबी है क्योंकि आप कभी भी इसकी चपेट में आ सकते हैं।''

रोटेरियन कैसे मदद कर सकते हैं, उन्होंने कहा कि क्लब इस कार्य को ले सकते हैं और प्रत्येक क्लब एमडीआर टीबी के तीन या चार रोगियों की पहचान कर सकता है और पूरे परिवार को पोषण संबंधी सहायता दे सकता है। ''जिस माँ को टीबी हो वो तब तक नहीं खाएगी जब तक उसके बच्चों के मुंह में निवाला नहीं चला गया हो। इसलिए, हमें 'पहले परिवार को भोजन' की अवधारणा को अपनाना है,'' डॉ सैयद ने कहा, चूंकि रोटेरियनों ने कई स्वास्थ्य शिविर लगाए हैं, इसलिए विशेषकर टीबी की पहचान के और उपचार के लिए वे शिविर आयोजित कर सकते हैं।

डॉ हिसामुद्दीन पापा, को - चेयरमैन (दक्षिण), रोटरी इंडिया टीबी कंट्रोल प्रोग्राम, ने सक्रिय मामले की खोज के बारे में प्रस्तुति देते हुए कहा कि डॉक्टरों को ''यह समझना चाहिए कि जब एक मरीज हमारे पास आता है, तो वह काफी समय तक पीड़ा भोगने के बाद आता है, अक्सर जिसका इलाज नीम हकीमों और अन्य ने किया है, और उसके बाद ही अंततः वह सरकारी अस्पताल में दाखिल होता है।''

'शुरु में ही मामले की पहचान' को परिभाषित करते हुए उन्होंने कहा कि यह 'आम जनसंख्या में टीबी मामलों का' पहले ही पता लगाना है... इनमें से 40 प्रतिशत, जो संक्रमित तो हैं लेकिन बीमारी से पीड़ित नहीं हैं। फिर वो हैं जो टीबी से पीड़ित हैं, पर संक्रामक नहीं हैं, लेकिन बाद में संक्रमित हो सकते हैं।''

उन्होंने कहा कि 2004 में रो इ मंडल 3230 में ''हमने कम्प्यूटरीकृत मोबाइल इकाई के साथ एक टीबी वैन बनाई थी और भारी जोखिम वाली आबादी की कई झोपड़ियों और गांवों में 55,000 लोगों की जांच की थी, इनमें पुलिसकर्मी, बीड़ी श्रमिक, कैदी, फैक्ट्री श्रमिक आदि शामिल थे।'' लक्षण मिलने पर लोगों को आगे की जांच के लिए टीबी क्लीनिकों में भेज दिया गया था।

पिछले साल, वैश्विक अनुदान के साथ, बेहतर उपकरणों से लैस एक बड़े वाहन को सेवा में लगाया गया था और अभी भी काम जारी है। ■

TRF की मदद से अच्छे कार्य

रोटरी बीमार लोगों को मुसकुराहट देती हैं।

टीम रोटरी न्यूज़

IPDG एन प्रकाश, मरीज़ों के साथ कैरम खेलते हुए। चित्र में अध्यक्ष पद्मनाभा कामत भी शामिल हैं।

शिवमोग्गा (शिमोगा) में शारान्या नामक एक धर्मशाला है जो मरणासन्न और बीमार मरीजों को आश्रय प्रदान करती है और उन्हें प्रशामक देखभालप्रदान करती है। शिमोगा के रोटरी क्लब, मंडल 3182, ने हाल ही में धर्मशाला में परिवर्तन करते हुए, उसे वार्ड फनीचर, मनोरंजक सुविधाएं, नैदानिक उपकरण, सुरक्षित पेयजल, एम्बुलेंस, इलेक्ट्रिक जनरेटर और सोलर लाइट आदि अनेक बुनियादी सुविधाओं के सुसज्जित किया है। क्लब ने वैश्विक अनुदान के अधीन रोटरी क्लब वेस्ट स्प्रिंगफील्ड, मंडल 7890, मैसाचुसेट्स और दिरोटरी फाउंडेशन के साथ भागीदारी में ₹2.6 मिलियन के इस परियोजना को लागू किया।

कर्नाटक में लगभग 1.5 लाख कैंसर रोगी हैं और इस सूची में प्रति वर्ष कम से कम 1,000 नए रोगी जुड़ते जाते हैं। यह एकमात्र धर्मशाला है जो शिमोगा और आसपास के बीमार मरीजों की जरूरतों को पूरा करती है। पीडीजी डॉ नारायण पांडेश्वर ने कहा, ''उनका उपचार नहीं किया जा सकता हैं लेकिन उन्हें अभी भी अपनी पीडा को कम करने के लिए बहुत सारी देखभाल, दवाओं और नर्सिंग सेवाओं की आवश्यकता होती है और हमने सोचा कि मरीजों के लिए बेहतर सुविधाएं और आराम प्रदान करना उनके दर्द को कम करने का एक तरीका है।'' वर्ष 2004 में अपनी स्थापना के बाद से धर्मशाला ने 3,000 से अधिक मरीजों की देखभाल की है। ■

फाउंडेशन न्यासी
अध्यक्ष का संदेश

हमारे शांति कार्यक्रम में हमारा साथ दें

1905 में इसकी स्थापना के बाद से ही, रोटरी शांति का समर्थक रहा है। 1914 के रोटरी सम्मेलन में एक प्रस्ताव को अपनाया गया कि हमारा संगठन ''दुनियाभर के राष्ट्रों के मध्य शांति बनाए रखने के लिए अपना प्रभाव उधार देता है।'' फिर, 1921 के सम्मेलन ने रोटरी के संविधान में उस लक्ष्य को शामिल किया जिससे रोटरी के सेवा के आदर्श में फेलोशिप के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय शांति और साख को बढ़ाने में सहायता की जा सके। 1945 में, रोटरी ने संयुक्त राष्ट्र के निर्माण में अहम भूमिका निभाई थी जब लगभग 50 रोटेरियनों ने सेन फ्रांसिस्को में आयोजित हुए संयुक्त राष्ट्र के चार्टर सम्मेलन में प्रतिनिधियों, सलाहकारों, या परामर्शदाताओं के रूप में सेवा दी थी।

आज, हमारे छह ध्यानाकर्षण क्षेत्रों में से एक है शांति को बढ़ावा देना। प्रत्येक रोटरी सेवा परियोजना, चाहे वह किसी मंडल अनुदान या वैश्विक अनुदान से वित्तपोषित हो, का शांति पर असर होता है। वह एक शांति परियोजना, एक जल एवं स्वच्छता परियोजना, एक बुनियादी शिक्षा एवं साक्षरता परियोजना, एक आर्थिक एवं सामुदायिक विकास परियोजना, या फिर हमारी मानव स्वास्थ्य से संबंधित कोई परियोजना - मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य या बीमारी की रोकथाम एवं उपचार - हो सकती है। इससे वास्तव में कोई फर्क नहीं पड़ता। अंतिम परिणाम प्रभावितों के लिए जिंदगियों को बेहतर बनाकर हमारी दुनिया में एक सकारात्मक योगदान लाता है, और वह सुधार शांति का एक तत्व है।

इसके अतिरिक्त, प्रति वर्ष हम रोटरी शांति निर्माताओं के लिए दुनिया भर से लगभग 100 पेशेवरों को चुनते है जिन्हें हमारे छह शांति केन्द्रों में पढ़ने के लिए फ़ेलोशिप प्राप्त होती है, और वे या तो मास्टर डिग्री या मानव अधिकारों, अंतर्राष्ट्रीय राजनीति, सार्वजनिक स्वास्थ्य, और विकास जैसे क्षेत्रों में एक पेशेवर विकास प्रमाण पत्र प्राप्त करते है। आज तक, 1,100 से अधिक लोग इस कार्यक्रम में भाग ले चुके है, और हमें सकारात्मक परिणाम मिलना शुरू हो गए है।

जब हम भविष्य की ओर देखते है, रोटरी संस्थान के न्यासी इस बात को लेकर चर्चा करते है कि कैसे हम इस कार्यक्रम और साथ ही साथ हमारे शांति के प्रयासों को बेहतर बना सकते है ताकि हमें अधिकतम संभव सकारात्मक प्रभाव प्राप्त हो सके। यदि आप मदद करना चाहते है, तो आप रोटरी पीस सेंटर्स मेजर गिफ्ट्स इनिशिएटिव में योगदान दे सकते है और शांति निर्माताओं की अगली पीढ़ी की सहायता कर सकते है।

रॉन डी बर्टन
फाउंडेशन न्यासी अध्यक्ष

संसार का प्रवेशद्वार

स्टेफन मयूसेर

जर्मनी के प्रमुख बंदरगाह के रूप में हैम्बर्ग की भूमिका ने सदियों से शहर के चरित्र को एक बेहतर आकार प्रदान किया है। हैम्बर्ग के रूप में अपने प्रारंभिक दिनों से लेकर - जब यह एक नदी के किनारे आठवीं शताब्दी में एक किला हुआ करता था और इसका निर्माण क्षेत्र में व्यापार को सुरक्षित रखने के उद्देश्य से किया गया था - आज तक हैम्बर्ग ने शहर-राज्य के रूप में अपनी स्वतंत्रता बरकरार रखी है जिसे आज भी 'हैम्बर्ग के आजाद और हंसियाटिक शहर'' के नाम से जाना जाता है। आज, इसके नागरिक स्वयं को ''हंससेटन'' कहते हुए गर्व महसूस करते हैं।

इस शहर की मध्ययुगीन ख्याति के दिनों में, शहर ने स्वयं को ''संसार के प्रवेश द्वार'' के रूप में स्थापित किया था - जो इसका आधिकारिक नारा भी था। 19 वीं और 20 वीं सदी में, यह 5 मिलियन प्रवासियों के लिए अपने गंतव्य स्थान की ओर प्रस्थान करने का बंदरगाह था, जिनकी कहानियां बॉलिन स्टैड इमिग्रेशन संग्रहालय में संग्रहित हैं। हैम्बर्ग के अंतरराष्ट्रीय समुद्री संग्रहालय में शहर का समुद्री इतिहास आज भी जीवंत हो उठता है।

वर्तमान समय में, हैम्बर्ग यूरोप के व्यस्ततम बंदरगाहों में से एक है, जहां से वर्ष 2017 में 136 मिलियन टन समुद्री माल का परिवहन किया गया। शहर क्रूज जहाजों के लिए भी एक गंतव्य स्थल के रूप में लोकप्रिय है, और यह बंदरगाह एक आकर्षक पर्यटक केंद्र भी है, जहां आप एक पेय या एक रूपांतिरत मालवाहक जहाज पर पेय और भोजन करने का आनंद उठा कसते हैं। या उपलब्ध अनेक नाव पर्यटनों में से किसी एक के माध्यम से बंदरगाह की सैर कर सकते हैं।

हैम्बर्ग स्वयं को वैश्वीकरण के संदर्भ में परिभाषित करता है: यह व्यापार, संस्कृति और तकनीक के लिए एक आधुनिक, बहुसांस्कृतिक केंद्र के रूप में उभर चुका है, जो एक दूसरे से जुडे संसार में केंद्रीय भूमिका निभा रहा है।

2019 HAMBURG

***www.riconvention.org* पर हैम्बर्ग में 2019 रोटरी सम्मेलन में शामिल होने के लिए पंजीकरण कराएं।**

रोटरी-रोटारेक्ट का तालमेल ज़रूरी

रशीदा भगत

पोलियो, खसरा, रूबेला और तपेदिक जैसे गंभीर विषयों पर चल रही दो दिवसीय बैठक के संपन्न होने के बाद वहां आये हुए उन युवाओं की मनोदशा को कई गुना हल्का करना ज़रूरी था जो रोटारेक्ट कॉन्क्लेव में भाग लेने के लिए दिल्ली आए हुए थे, जिसमें डीआरआर और डीआरसीसी (मंडल रोटारेक्ट अध्यक्ष) शामिल थे। निदेशक सी भास्कर ने बिलकुल वही किया और बोले, चूँकि अब इस अभियान की ज़िम्मेदारी वरिष्ठ रोटेरियनों से युवा कन्धों पर चली गई है, ''आइये हम सब आराम करें और लुत्फ़ उठायें।''

'सबको एक ही लाठी से हाँको' वह इस कहावत में विश्वास नहीं रखते, यह कह कर भास्कर ने वहां एकत्रित युवाओं से पूछा,फ क्या वे जानते हैं कि उन्हें इस बैठक में क्यों आमंत्रित किया गया था?

कुछ जवाब:

- विचारों का आदान प्रदान करने के लिए
- रोटारेक्ट और रोटेरियनों के समन्वय में सुधार के लिए
- बेहतर नेटवर्किंग के लिए
- एक दूसरे को प्रेरित करने के लिए
- रोटरी ने महसूस किया है कि यह रोटारेक्टर के बिना अधूरी है
- रोटरी का भविष्य बनाने और रोटरी को युवा बनाने के लिए।

रो इ निदेशक ने कहा, हालांकि इनमें से कुछ सही थे पर बाकी नहीं, ''हम चाहते हैं कि रोटरी के साथ सहभागिता कर, आप अपने आत्म-विकास और आत्म-सुधार के लिए इस अवसर का लाभ उठायें। रोटारेक्टर्स का आयु वर्ग 18 से 30 वर्ष है, यहां चल रहे रोटरी कार्यक्रमों को आप समझने आये हैं और रोटारेक्ट आंदोलन को अपने मंडल में कैसे मजबूत

रो ई निदेशक सी भास्कर, DRR ओं के साथ। चित्र में डीजी विनय भाटिया (बाएँ से दूसरे) और रोटरी समन्वयक अशोक गुप्ता (दाएँ से तीसरे) भी शामिल हैं।

किया जाये और किस प्रकार अधिक से अधिक संख्या में युवाओं को जोड़ा जाये ताकि वे नेटवर्किंग, खुद का विकास और नेतृत्व संचालन सीख सकें।

भास्कर ने उनसे बैठक में आये हुए मंडल अध्यक्षों के साथ मुलाकात और बातचीत के अवसर का फायदा उठाने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि पिछले साल निदेशक रहते हुए उन्होंने रो इ के 3 ज़ोन का (12 देशों से) प्रतिनिधित्व किया था। ''मैंने देखा कि कई कारणों से रोटेरियनों और रोटरेक्टरों के बीच आपसी सामंजस्य नहीं था। शायद डीजी अपने डीआरआर को पर्याप्त समय नहीं दे पा रहे थे या फिर डीआरआर रोटेरियनों से मिलने के लिए उत्सुक नहीं थे। इसलिए हमने रोटेरियनों और रोटरेक्टरों के बीच तालमेल बिठाने का फैसला किया और मैं आपको आश्वस्त कर दूँ कि ये निर्णय रो इ के अध्यक्ष बैरी रेसिन के कहने से पहले ही हो चुका था।''

यदि यह सामंजस्य स्थापित हो गया तो, भारत को युवाओं के ऐसे देश के रूप में प्रदर्शित किया जा सकता है, जिसके पास आर्थिक विकास की दिशा है, जो दूरदर्शी नेताओं का निर्माण करेंगे और हमारे समाज में मानवीय सेवाओं को देखेंगे।

इसलिए पिछले साल उन्होंने एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया था जिसमें क्षेत्रीय नेताओं, डीआरसीसी, डीआरआर और डीजी शामिल थे। उसकी सफलता के बाद, इस साल दिल्ली में भी इसी तरह की एक बैठक आयोजित की गई।

भास्कर ने कहा कि दुनिया में लगभग 2, 57,577 रोटारेक्टर्स हैं जिनमें से 1, 45,861 की ही सूचना मिली थी, भारत इस यथार्थ पर गर्व महसूस कर सकता है कि हमारे 45,041 रोटारेक्टर्स हैं। तो कुल रोटारेक्टर्स की एक तिहाई जनसंख्या के साथ, भारत को इस क्षेत्र के अग्रणी नेता बनने के लिए हमें एक रणनीति तैयार करनी होगी।

एक और आंकड़े का हवाला देते हुए उन्होंने कहा कि दुनिया के करीब 35,000 रोटरी क्लबों में से केवल 10,182 क्लबों ने ही रोटारेक्ट क्लब प्रायोजित किये हैं। हॉल में बैठे सभी डीजी की तरफ ''देखते हुए रो ई निदेशक ने कहा, ''कृपया अपने-अपने मंडलों में उन क्लबों को ढूंढें जिन्होंने कभी भी रोटारेक्ट क्लब प्रायोजित नहीं किये हैं और इस वर्ष उन्हें प्रायोजित करने के लिए प्रोत्साहित करें।''

भास्कर ने खुलासा किया कि जब रोटारेक्ट की बात आती है, तो रो ई दो आंकड़े बताता है - रोटारेक्टरों की सूचित संख्या (1,45,861) और अनुमानित संख्या (2,57,577)। सूचित संख्या वो है जो क्लब बता रहे हैं जबकि दुनिया भर में रोटारेक्ट की अनुमानित संख्या का मतलब सिर्फ अनुमान है। ''भारत में हमारे पास सूचित संख्या केवल 60 प्रतिशत है और हैदराबाद में पिछली बैठक में इसी पर चर्चा की गई थी। डीआरआर को रोटारेक्ट क्लब से बात कर, वर्तमान आधार पर डेटा बेस को अपडेट करना होगा। 2016-17 में भारत में सूचित संख्या के अनुसार केवल 25,000 रोटारेक्टर थे, लेकिन 2017-18 में यह संख्या 45,000 हो गई है। इससे पता चलता है कि 17-18 के डीआरआर ने बढ़िया काम किया है। आइए हम सब मिल कर उनकी प्रशंसा करें।''

उन्होंने कहा, हो सकता है, यह आंकड़ा भी सही नहीं हो। दक्षिण एशिया कार्यालय में वरिष्ठ समन्वयक,

रोटारेक्ट आंदोलन को अपने मंडल में कैसे मजबूत किया जाये और किस प्रकार अधिक से अधिक संख्या में युवाओं को जोड़ा जाये ताकि वे नेटवर्किंग, खुद का विकास और नेतृत्व संचालन सीख सकें।

रो इ निदेशक **सी भास्कर**

क्लब और डिस्ट्रिक्ट सपोर्ट, ''जोसेफ थॉमस कहते हैं कि शायद हमने केवल 60 -70 प्रतिशत सदस्यता पर ही पकड़ बनाई हो। पर इस वर्ष हमें 100 प्रतिशत से कम कुछ भी स्वीकार्य नहीं होना चाहिए। यही चुनौती है और अगर हम ऐसा कर लेते हैं ... तो कनेक्टिविटी के द्वारा एक ही मंच से आपके सदस्यों को हम अप्रत्याशित लाभ दे सकते हैं। आप जो भी महान कार्य या परियोजना करते हैं सिर्फ एक क्लिक से वह पूरे भारत में फैल सकता है।''

उन्होंने कहा, आज हमारे पास रोटारेक्टर्स का वास्तविक डेटा बेस नहीं है, इसलिए ना तो हम उन्हें प्रेरित कर सकते हैं ना ही इसके फायदे दिखा सकते हैं... वे यहां दोस्त बना सकते हैं, नेता बनने के लिए प्रशिक्षित हो सकते हैं, नौकरी और व्यापार के अवसर प्राप्त कर सकते हैं।

रो ई निदेशक ने कहा कि वह रोटरी में इसलिए शामिल हुए थे क्योंकि किसी ने उन्हें आमंत्रित किया था और उसके बाद मैंने कई नई चीजें सीखीं और यात्रा के अवसर भी मिले। मैंने जितना रोटरी को दिया है उससे कहीं ज़्यादा हासिल किया है। यही सच है ... आप यह बात अपने दिमाग से बाहर निकाल दें कि हम रोटरी को लाभ पहुंचाने के लिए रोटारेक्ट को मजबूत कर रहे हैं। यह सच नहीं है।''

उन्होंने विस्तार से बताया कि भारत दुनिया में सबसे अधिक युवा आबादी वाला देश है; हमारी 1.3 बिलियन आबादी के 30 प्रतिशत लोग 25 से कम आयु के हैं। कैसे हम उन्हें कौशल सिखा सकते हैं, नौकरी के लिए तैयार कर सकते हैं और दुनिया में उन्हें प्रतिस्पर्धी बना सकते हैं? इसलिए, आइए इसे हमारे समाज, हमारे देश की सेवा के रूप में लें,

डीजी गुस्ताद अंकलेरिया (दाएँ से तीसरे) रोटारेक्ट कान्क्लेव में अन्य प्रतिनिधियों के साथ।

दूसरों को व्यक्तिगत उन्नति और कौशल प्रबंधन के अवसर प्रदान करवाएं। कृपया अपने दिमाग से हटा दें कि रोटारेक्ट की सदस्यता रोटरी को मजबूत करने के लिए है बल्कि युवाओं का विकास कर इससे हमारे देश का निर्माण करना है।''

सत्र के बाद डीआरआर से उन्होंने एक पृष्ठ पर उनकी अवधारणा लिखने को कहा कि वे अपने वर्ष 2018-19 के दौरान क्या करना चाहते थे। लेकिन ''कुछ बड़ा करने की इच्छा करना, और किसी असंभव को संभव में बदलने की कोशिश करना। ठीक वैसे ही जैसे स्टीव जॉब्स तेजी से आगे बढ़ते हुए बटन दबाने से ले कर बड़े मॉडल से टचस्क्रीन तक पहुंचे थे। उन्होंने बताया कि ऐसा उन्होंने इसलिए किया क्योंकि 'मैं एक आम आदमी की ज़रुरत को समझता हूं।' और स्टीव ने यह भी कहा कि वह जो करता है उससे प्यार करता है। तो चाहे यह रोटारेक्ट आंदोलन हो या फिर आपका करियर, आप जो करना चाहते हैं उससे प्यार करना शुरू कर दें, आप ज़रूर सफल होंगे।''

पीआरआईपी राजेंद्र के साबू ने याद किया कि रो ई में उन्हें जो पहला कार्य सौंपा गया वह युवा गतिविधियों की समिति के सदस्य के रूप में था। ''रोटरी में अपनी यात्रा के दौरान मैं इतने नज़दीक से रोटारेक्ट आंदोलन में शामिल रहा हूं कि इस पर कम से कम एक घंटे बोल सकता हूं कि कैसे कई वर्षों में प्रशिक्षण कार्यक्रम विकसित किया गया और आज किस तरह यहां तक पहुंचा है।''

उन्होंने कहा रोटारेक्टर्स पहले से ही रोटरी परिवार का हिस्सा थे और ''स्वतःही उन्हें रोटरी में आना है, प्रतिबद्धता और आपसी संबंध की भावना के साथ। वहां इकट्ठे हुए डीआरआर को संबोधित करते हुए, दो रोटरी कोऑर्डिनेटर राजेंद्र राय और अशोक गुप्ता ने अधिक से अधिक युवाओं को रोटरी में लाने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया।

राय ने कहा, ''हम डीआरआर को मंडल अध्यक्षों और डीआरसी दोनों के साथ काम करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहते हैं। एक वक़्त था जब डीआरसी सिर्फ नाम के होते थे लेकिन अब समय बदल गया है।'' उन्होंने कहा कि रो ई अध्यक्ष बेरी रेसिन ने रोटारेक्ट आंदोलन को मजबूत करने और 'रोटारेक्ट से रोटरी तक का सफर' सुनिश्चित करने का आह्वान किया है। ''आज हम यहां एकत्रित हुए हैं तो इसका कारण यह है कि यदि हम साथ मिल कर काम करें और एकल शक्ति बन जाएँ तो समाज पर अधिक प्रभाव डाल सकेंगे।''

उन्होंने हॉल में उपस्थित वरिष्ठ रोटेरियनों से आग्रह किया की हर मौके पर रोटारेक्टर्स को रोटरी में शामिल होने के लिए आमंत्रित करें और ध्यान रहे कि 2016 में रो ई ने रोटारेक्ट में रहते हुए ही रोटारेक्टर्स को रोटेरियन बनने की अनुमति दे दी थी (ढील देते हुए दाखिले की उम्र 29 वर्ष की थी)।

गुप्ता ने डीआरआर से अपनी ऊर्जा और ध्यान 'वाश इन स्कूल' कार्यक्रमों पर केंद्रित करने का आग्रह किया क्योंकि इन कार्यक्रमों के भीतर हमारे समाज में एक बड़ा व्यावहारिक परिवर्तन लाने की क्षमता है।

चित्र: रशीदा भगत

रोटारेक्ट तथ्य

दुनिया में रोटरैक्ट क्लबों की संख्या - **7,942**

भारत में रोटरैक्ट की संख्या - **2,824**

दुनिया में रोटरैक्टरों की संख्या - **257,577** (अनुमानित)

दुनिया में रोटरैक्टर्स की सूचित संख्या - **145,861**

भारत में रोटरैक्टर्स की संख्या - **45,041**

स्वस्थ परिप्रेक्ष्य

संध्या राव

शीला नंबियार की पुस्तक इस विषय पर अंतिम पुस्तक नहीं है; कुछ चीजें जो वो बताती हैं या नहीं भी बताती उन पर स्वस्थ चर्चा के रस्ते खुले हैं। लेकिन फिटनेस क्या मायने रखती है,यह पुस्तक इसका एक व्यापक और विस्तृत विश्लेषण है, साथ ही बताती हैं कि फिटनेस की कमी हमें कैसे प्रभावित करती है। जो अच्छा स्वास्थ्य बनाये रखने के विभिन्न पहलुओं और कारकों का पता लगाती है, और इसी वजह से यह पुस्तक बाकि किताबों से हट कर है।

लाइफस्टाइल की प्रैक्टिशनर शीला नंबियार जो स्वयं एक प्रसूति विज्ञानी और स्त्री रोग विशेषज्ञ भी हैं, महिलाओं को जानती हैं, उनके शरीर को भली भांति समझती हैं। उन के पास विज्ञान और मनोविज्ञान दोनों हैं। इसीलिए उनकि टैगलाइन है, '*फ़ार ए हैल्दीयर, हैप्पीयर स्ट्रांगर यू*' के लिए यह टैगलाइन काफी है की है कि वह मांसपेशियों को मजबूत करने या मोटापा कम करने या सहनशक्ति बढ़ाने की बात क्यों नहीं कर रही है: वह सीधे शरीर, दिमाग और आत्मा को संबोधित करती हैं।

जब सीढ़ियाँ चढ़ते हैं तो क्या आप रेलिंग का सहारा लेते हैं, वह पूछती हैं। जब आप कुछ उठाने के लिए झुकते हैं तो क्या आपकी पीठ में खिंचाव होता है ? जैसे जैसे आप बड़े होते हैं शीला अपने साधारण तर्क, बुनियादी प्रश्नों और ठोस उत्तरों के माध्यम से आपके शरीर को तंदरुस्त रखने की ठोस वजह बताती है । वह आपको अपने शारीरिक फिटनेस स्तर का ईमानदार मूल्यांकन करने में मदद करती है और स्पष्ट रूप से आपके शरीर में हो रहे परिवर्तन के चिकित्सकीय कारण बताती है - पर एक बात, किताब की छपाई बहुत हल्की है जिस वजह से पढ़ने में मुश्किल होती है । वह आपको वज़न बढ़ने के विभिन्न कारणों से अवगत कराती है कि लचीलापन, संतुलन और अन्य चीजों पर काम करने के साथ साथ, वेट ट्रेनिंग भी उतनी ही महत्वपूर्ण क्यों है, और इस बात पर ज़ोर देती है फिटनेस की दिनचर्या शुरू करने की कोई उम्र नहीं होती।

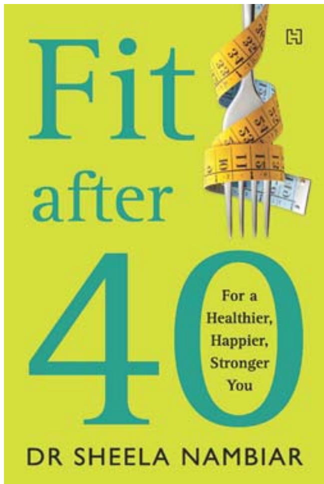

फिट आफ्टर 40 : फॉर ए हैल्दीयर, हैप्पीयर, स्ट्रांगर यू - डॉ शीला नंबियार, हैचेट, 2018पीपी335, ₹399

लेकिन वह सिर्फ भौतिक शरीर की बात नहीं कर रही है। शीला का कहना है, बढ़ती उम्र में तंदुरुस्ती का आकलन करने में वह व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक, भावनात्मक और सामाजिक स्वास्थ्य के साथ ही उसका वातावरण के साथ सामंजस्य, दूसरो के साथ मेलजोल, तनाव से निपटने को भी ध्यान में रखती है। दर असल, यह सब जीवन की गुणवत्ता के बारे में है। असल में, भावनाओं से परे है लेकिन विचारों से भरपूर यह एक स्वयं सहायता पुस्तक है। दूसरे शब्दों में, 'फिटनेस' का मतलब 'मोटापे' से सम्बंधित नहीं है ; यह उसके प्रति जागरूक होने के बारे में है। कौन बहस कर सकता है जब वह कहती है कि, ''जब आप भूखे हों तो कभी खरीदारी मत करो क्योकि आप गलत चीजें चुन सकते हैं।'' या जब वह कहती है, ''मुझे कभी-कभी डर लगता है भोजन की बुनियादी समझ ही नहीं है। वास्तव में आप सीधे सीधे अपने स्वास्थ्य की ज़िम्मेदारी किसी और हाथों में सौंप रहे हैं ... ''

वह जीवन के उन पहलुओं को छूती है जो हमारे दिल के करीब हैं, उनमें से रजोनिवृत्ति, एक भयानक स्थिति है और निश्चित रूप से इससे निपटने के तरीके बताती है। उनकी सलाह की सबसे अच्छी बात है ''इसमें हास्य ढूंढो।'' सामाजिक दबाव सहित वह उन विभिन्न कारणों की जांच करती है कि लोग ज़रूरत से ज्यादा क्यों खाते हैं। उनमें से एक, वह बताती है और यह सच भी है, ''बुफे। आज कल शादी की दावतों में ज्यादातर बुफे ही होते हैं। क्या आपने लोगों को ज़्यादा खाना कहते हुए नहीं देखा? यहां शीला सावधान करती है, बुफे, अधिक भक्षण से होने वाली की बीमारी का एक नायाब नुस्खा है।'' हालांकि, यहां ये ज़रूर कहना चाहूंगी कि व्यायाम दिखाने वाले और अन्य चित्र बहुत स्पष्ट नहीं हैं।

ज़्यादातर हम लोग आसन्न जीवन जीते हैं। तो लेखिका कहती हैं, चलते रहो। यह एक अक्लमंद सलाह है। हालांकि, मुझे आश्चर्य है कि यह आकस्मिक गति हमारे भीतर पसरी हुई स्थिरता के साथ क्या करेगी । लेकिन जब वह तनाव से निपटने की बात करती हैं तो देखते ही बनता है और अकेले इसी वजह से मैं इस पुस्तक की सिफारिश करती हूं।

फिट आफ्टर 40: जीवन पर सर्वांगीण परिप्रेक्ष्य बताती यह पुस्तक एक व्यावहारिक और आसान मार्गदर्शिका है । आप इसके सभी सुझावों से सहमत हों या ना हों, लेकिन एक बात तय है कि स्वस्थ जीवन शैली जीने के लिए आप प्रयास अवश्य करेंगे। कोर्टिसोल, ग्लूट के गहरे खिंचाव और मस्तिष्क से निकले न्यूरोट्रोफिक दिमाग की नसों के कारक और मांसपेशियों जैसे पात्रों के साथ आपके करीबी और व्यक्तिगत रिश्ते भी बन जाएंगे और फिर आप समझेंगे कि वास्तव में ये कौन हैं!

शीला नंबियार, *रोटरी समाचार* की फिटनेस स्तंभकार हैं। ■

लैंगिक की भागीदारी को बढ़ावा देना और समुदायों में लचीलापन का निर्माण करना: हेलेन क्लार्क

जयश्री

लैंगिक समानता से लेकर चिरस्थायी विकास के लिए समुदायों में लचीलापन के निर्माण के बारे में रोटरी के फोकस पर, न्यूजीलैंड के पूर्व प्रधान मंत्री हेलेन क्लार्क ने टोरंटो में आरआई सम्मलेन में प्रतिनिधियों के साथ शामिल हुए क्योंकि उन्होंने आरआई अध्यक्ष इयान रिसले के साथ अपने विचारों को साझा किए। उनके वार्तालाप का अंश इस प्रकार है:

रिसले: आप ऐसे समय में राजनीति में आई जब राजनीति में महिलाओं का पदार्पण अपवाद माना जाता था क्योंकि जब आप वर्ष 1991 में संसद के लिए चुनी गई थी, तो वहां 100 सांसद थे जिनमें से केवल 8 महिलाएं थीं। आपने कैसा महसूस किया था?

हेलन: यह उससे कही अधिक खराब था। वहां 92 एमपी थे और उनमें केवल 8 महिलाएं थी; जो 10 प्रतिशत से भी कम था। इसलिए, हमें एक अकेला छोटा समूह समझा जाता था। और वह संख्या पहले के चुनाव के तुलना में दुगुनी थी। इसलिए लोग कहने लगे कि महिलाएं धीरे-धीरे स्थानों पर कब्जा कर रही है। परंतु हमसे अधिक की अपेक्षा नहीं की गई थी, क्योंकि बहुत ही कम महिलाएं संसद की सदस्य रही हैं। यह स्थिति इस तथ्य के बावजूद मौजूद थी कि न्यूजीलैंड दुनिया के पहले देशों में से एक था जिसने 125 वर्ष पहले महिलाओं को वोट देने के अधिकार की लड़ाई लड़ा था। लेकिन हमें एक नवीनता माना जाता था क्योंकि ऑकलैंड, जो सबसे बडा शहरी केंद्र है, वहां मेरे आगमन से दो साल पहले तक एक ही महिला सांसद थी। कोई महिला प्रधान मंत्री बनना नहीं चाहती थी; उनकी आकांक्षा एक मंत्री बनना था।

इयान की अनुमति मिलने पर मैंने अपने प्रथम चुनावी अभियान की कहानी उन्हें सुनाई। मैंने एक छोटे से शहर में एक स्थानीय रोटरी क्लब को संबोधित किया था। मेरी प्रस्तुतीकरण के उपरांत, एक मौजूद सदस्य - उस समय कोई भी महिला सदस्य मौजूद नहीं थी - उठ खड़े हुए और मेरी ओर मुख़ातिब होकर कहा: ''आप जानती हैं कि आपके पास जो कौशल है, उसके बल पर आप एक किसान की अद्भुत पत्नी बन सकती हैं।''

बहुत अच्छा हेलेन, उसके बाद से समय बहुत परिवर्तित हो चुका है; आज न्यूजीलैंड में 40 प्रतिशत रोटेरियन महिलाएं है। आज न्यूजीलैंड में एक पीएम जैकिंडा अर्डन है जिन्होंने एक शिशु को जन्म दिया है। एक पीएम के रूप में जैकिंडा के माँ बनने और शिशु को जन्म देने के बारे में आपका क्या विचार हैं?

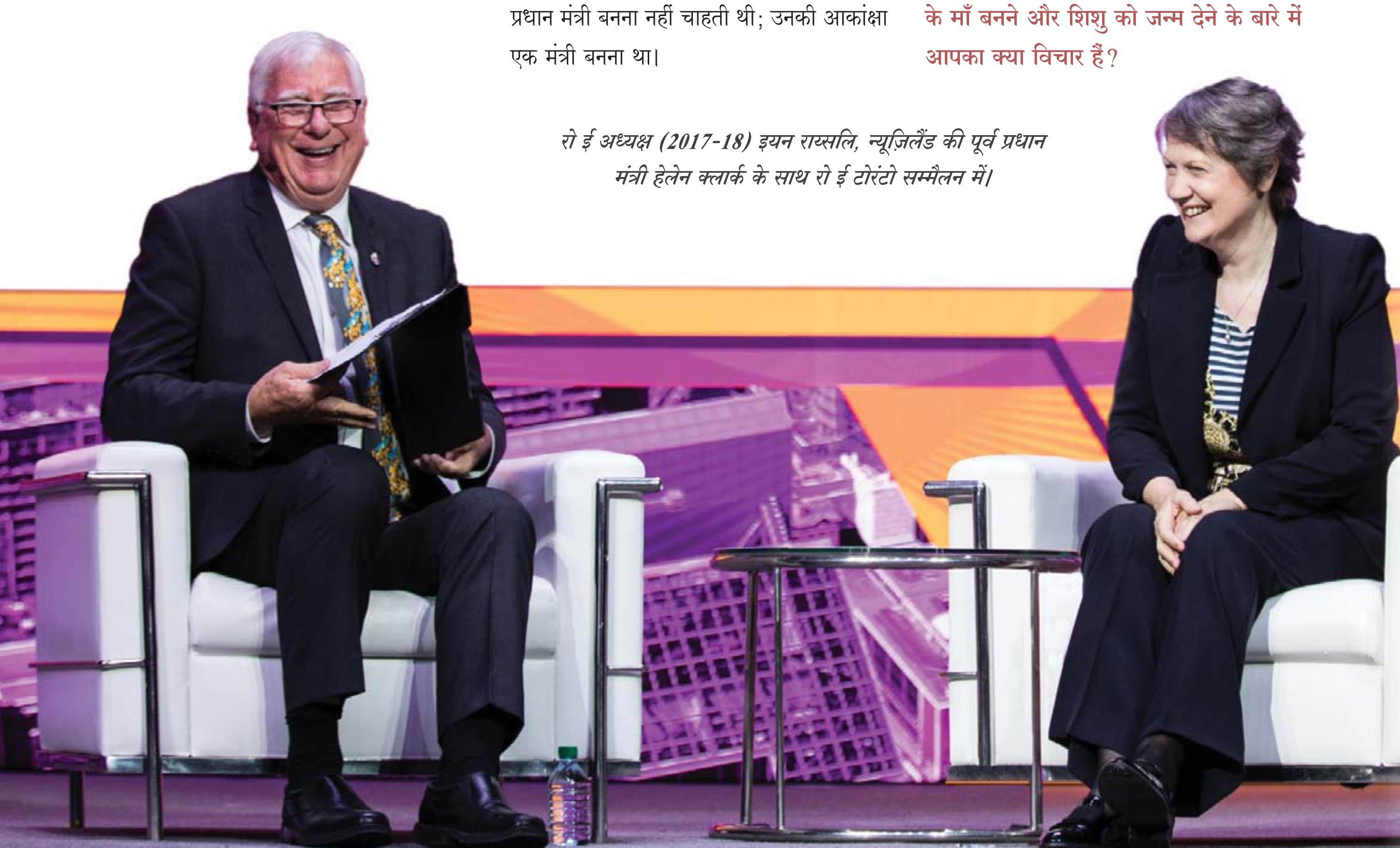

रो ई अध्यक्ष (2017-18) इयन राय्सलि, न्यूज़िलैंड की पूर्व प्रधान मंत्री हेलेन क्लार्क के साथ रो ई टोरंटो सम्मैलन में।

जैकिंडा 37 वर्ष की अल्पायु में प्रधान मंत्री बनने वाली एक उल्लेखनीय युवा महिला हैं। उस उम्र में, मैं एक कैबिनेट मंत्री थी, जो जूनियर मंत्रीपद था। समय चक्र बहुत बदल गया है कि युवा महिलाएं राजनीति में बहुत कुछ करने की अपेक्षा कर सकती हैं। जैकिंडा का अपना विशिष्ट व्यक्तित्व है और उसकी अपनी कार्य-शैली है। उसने एक बच्चे को जन्म दिया है। उसका साथी घर पर रहेगा और उसके शिशु की देखभाल करेगा जब वह छह सप्ताह के मातृत्व अवकाश के बाद काम पर वापस लौटेगी। इसका बहुत महत्व है क्योंकि जब मैंने राजनीति में अपने करियर की शुरुआत की थी, तो ऐसा करना लगभग असंभव था। पहला कि,एक प्रधान मंत्री एक महिला होगी; दूसरा वह एक बच्चे की माँ बनेगी; और तीसरा, कि वह अपने साथी से विवाह नहीं करेगी। इस प्रकार, न्यूजीलैंड वास्तव में बेहतर के लिए बदल चुका है और अधिक सहिष्णु और स्वीकार्य देश बनने की ओर अग्रसर है।

रोटरी कुछ मामलों में यूएन के समान है। हमारे पास अनेक महिला नेताएं हैं, लेकिन शीर्ष पदों पर बहुत अधिक महिलाएं आसीन नहीं हैं। कुछ लोग कह सकते हैं कि इससे क्या फर्क पड़ता है। हमें बताएं कि आप क्यों सोचती हैं यह महत्वपूर्ण है कि हमें कार्य के लिए केवल सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति का चयन करने पर ध्यान केंद्रित नहीं करना चाहिए बल्कि हमें महिलाओं को शीर्ष स्थान पर नियुक्त करने के लिए भी कार्य करना चाहिए?

सबसे पहले, मैं हिलेरी क्लिंटन के कथन को उद्धृत करना चाहती हूं: 'लैंगिक समानता का तात्पर्य सिर्फ सही कार्य करने भर से नहीं है क्योंकि यह एक मानवीय अधिकार है। यह करना भी एक समझदारी भरा कार्य है क्योंकि लैंगिक समानता के माध्यम से आप समाज में सभी का प्रतिनिधित्व करते हैं।' इसलिए, हमारे सभी संगठनों में, चाहे वह रोटरी हो, यूएन हो या फिर किसी देश की संसद है, उसे उस निकाय की तरह दिखना चाहिए जिसका यह प्रतिनिधित्व करती है। इसका तात्पर्य है कि घटनाओं के सामान्य क्रम में, महिलाओं को शीर्ष पर होना चाहिए।

आप यूएन राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) के निर्माताओं में से एक रही थी। चिरस्थायी विकास और आप जो प्राप्त करना चाहती हैं, उसके लिए हमें अपने योजना के बारे में संक्षेप में बताएं।

एसडीजी से पहले, मिलेनियम विकास का लक्ष्य निर्धारित किया गया था। गरीबी, भूख, लिंग समानता, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे मुद्दों पर उनके विरूद्ध काफी प्रगति दर्ज की गई थी। लेकिन वातावरण पर उनका प्रभाव अधिक नहीं था। एसडीजी का निर्माण 2015 में लोगों को, समृद्धि और धरती को इस आधार पर एकीकृत करने के लिए किया गया था कि ये बातें आपस में अंतर-संबंधित हैं।

यदि हम अपने पर्यावरण को क्षति पहुंचना जारी रखते हैं तो हम अपनी निर्धानता और भूखमरी की समस्या को सुलझाने में सफल नहीं होंगे। यह चुनौतीपूर्ण कार्य है। रास्ते में बहुत सी बाधाएं आने वाली हैं। हमें अपने प्रयासों और समुदाय में रोटरी के सभी जन-कल्याणकारी कार्यों को फिर से दोगुना करना होगा। इन समस्याओं से बचने के लिए वंचित लोगों और हाशिए पर पड़े हुए लोगों का समर्थन करना इसका एक महत्वपूर्ण हिस्सा होगा।

ये लक्ष्य अविश्वसनीय रूप से महत्वाकांक्षी हैं - कोई निर्धनता नहीं, शून्य भूखमरी, बेहतर स्वास्थ्य और जन-कल्याण, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, लैंगिक समानता, स्वच्छ पानी और स्वच्छता, सस्ती और स्वच्छ ऊर्जा। क्या ये लक्ष्य वास्तव में यथार्थवादी हैं?

वे लक्ष्य वास्तव में महत्वाकांक्षी हैं परंतु अनेक विकसित देश उन लक्ष्यों में अधिकांश को प्राप्त कर सकते हैं। अधिकांश समाज सुरक्षा जाल से ऊपर हैं, जिसके नीचे कोई भी अपमानजनक निर्धनता के दुश्चक्र में नहीं फंसता है। यही मानक होना चाहिए - कि कोई भी न्यूनतम स्तर से नीचे नहीं रहें।

विकसित देशों के लिए सबसे चुनौतीपूर्ण लक्ष्य पर्यावरण से जुड़ा है। क्योंकि, देश को विकसित करने का पारंपरिक तरीका आसान मार्गों को समाप्त करना है। हमने इस प्रक्रिया में अपना बहुत नुकसान किया है - जैसे जंगलों को काटना, जलवायु परिवर्तन, ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन आदि से हमें अनेक समस्याएं झेलनी पड़ी है। हमारा लक्ष्य हर किसी के लिए चिरस्थायी विकासात्मक ऊर्जा का सृजन करना है।

चिरस्थायी और निरंतर विकास के लिए लैंगिक समानता इतनी महत्वपूर्ण क्यों है?

जब महिलाएं आसानी से शिक्षा प्राप्त कर सकती है, तो इससे संपूर्ण परिवार को लाभ होता है। शोध के साक्ष्यों से सपष्ट होता हैं कि एक महिला के लिए शिक्षा का प्रत्येक अतिरिक्त वर्ष उसके बच्चे को पांच वर्ष या उससे अधिक बेहतर जीवन जीने का अवसर प्रदान करता है। इसलिए, मात्र छोटे बच्चों की एक साधारण जीवन प्रत्याशा में, यह कार्य मायने रखता है।

जब एक औरत शिक्षा प्राप्त करती है, तो अपने बच्चों के लिए उसकी आकांक्षाएं अधिक होती हैं।

यदि कोई महिला अपनी शिक्षा पूरी कर सकती है, तो शादी की उम्र और उसके पहले बच्चे के जन्म में विलंब होगा, जो उसके स्वास्थ्य के लिए अच्छा है। लैंगिक समानता, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं के बराबर पहुंच, अर्थव्यवस्था में आय सृजन करने में सक्षम होने के मापदंडों , किसी और की तुलना में महिलाओं के लिए बहुत सकारात्मक हैं।

सबसे बेहतर और सबसे प्रभावी बात क्या है जिसे रोटेरियन एक लचीले, टिकाऊ और न्यायसंगत संसार के निर्माण के लिए एक संगठन के रूप में स्थानीय और वैश्विक स्तर पर पूरा कर सकते है?

मैं खाद्य सुरक्षा की समस्या को देखती हूं जो जलवायु के साथ जो हो रहा है उसके कारण बहुत अधिक चुनौतीपूर्ण हो गया है। अफ्रीका में शुष्क भूमि वाले देशों की यात्रा के दौरान, मैंने छोटे किसानों को कहते हुए से सुना कि मुझे नहीं पता कि अब हम फसल कब लगाएंगे, यह पता नहीं है। वर्षा अप्रत्याशित हैं। यदि कृषि आपकी जीविका के निर्वाह का एकमात्र साधन है और बारिश नहीं होती है और आपने जो बीज बोएं हैं और अतिरिक्त क्रेडिट का उपयोग किया है, तो आप गहरी परेशानी में फंस सकते हैं। और तब, आप भोजन खरीदने में सक्षम नहीं होंगे। वह तब होता है जब भूखमरी की समस्या शुरू होती है। वर्ष 2016 शताब्दी में पहला वर्ष था जब 'भुखमरी' वाले लोगों की संख्या बढ़ी।

रोटरी के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ध्यान केंद्रित करने के लिए, उन लोगों का समर्थन करें जो प्रकृति की अनियमितताओं के प्रति बेहद संवेदनशील हैं। फसल बीमा जैसी पहल हैं; अनेक लोगों के पास फसल की सिंचाई के नए तरीके नहीं हैं;

कुछ समुदायों को बढ़ती फसलों के कारण घूमंतू जीवन के स्थान पर एकस्थान पर रहने को बाध्य होना पड. सकता है। दूसरी ओर, समुद्र तल में बाढ. और वृद्धि हुई है। लंबी अवधि में लोगों के लिए बेहतर जीवन सुरक्षित करने का एक हिस्सा प्रतिकूल घटनाओं के प्रति लचीलापन होना है।

आप यूएन महासचिव की भूमिका के लिए मजबूत भावी उम्मीदवारों में से एक थी। क्या आप सोचती है कि परिणाम पर आपके जेंडर का कोई प्रभाव पड़ा?

मैंने कभी भी किसी के लिए मतदान करने के लिए अनुरोध नहीं किया है क्योंकि मैं एक महिला हूं। लेकिन मुझे नहीं लगता कि इस कारक को मेरे विरू द्ध कोई भूमिका होनी चाहिए। और न्यूज़ीलैंड में मेरा अनुभव यह था कि यदि आप ऐसा करते हैं, तो आप अंततः हर छोटी-बडी बाधाओं पर विजय प्राप्त करेंगे जो मुझे लगता है कि मेरे देश के बारे में एक बडी बात है। यूएन ने अभी तक महिलाओं के लिए इसे संभव नहीं बनाया है। मुझे उम्मीद है कि अगला म हासचिव एक महिला होगी और मैं योग्य उम्मीदवार का समर्थन करूंगी। ■

रोटरी क्लब मद्रास, मंडल 3232 के दो रोटेरियनों - एस एन श्रीकांत और एन के गोपीनाथ - को टोरंटो सम्मेलन में Polio-Free World अंतर्राष्ट्रीय सेवा पुरस्कार प्रदान किया गया। श्रीकांत ने Rotary End Polio Flame का लॉन्च 2014 में अपने अध्यक्षीय वर्ष में किया। गोपीनाथ परियोजना अध्यक्ष थे।

राजस्थान की मुख्य मंत्री वसुंधरा राजे सिंथिया के हाथों PDG अनिल अग्रवाल, मंडल 3054 को अपनी सामाजिक सेवा के लिए मान्यता मिली। वह एक उग्र रक्त दाता भी है, आज तक उन्होंने 80 बार रक्त दान किया हैं।

Rotary PEOPLE OF ACTION

दृष्टिबाधितों के लिए RYLA

टीम रोटरी न्यूज़

"मुझे सभी गतिविधियां पसंद है और यहाँ लोग जानते है कि मैं हर दिन किस चीज़ से गुज़र रहा हूँ। उनसे दोस्ती करना आसान है क्योंकि वे मुझसे वो चीज़ें करने की उम्मीद नहीं करते जो वे जानते है कि मैं नहीं कर सकता क्योंकि वे भी वो चीज़ें नहीं कर सकते,'' 12 वर्षीय गिरीश कहता है, जो रोटरी क्लब सिल्क सिटि रामनगर, मण्डल 3190, द्वारा दृष्टिबाधितों के लिए संचालित RYLA का एक प्रतिभागी है।

कार्यक्रम के बारे में बात करते हुये, क्लब सचिव टी जे अनुराधा ने कहा, ''हमारा लक्ष्य उन्हें उनकी सुरक्षित कक्षाओं से बाहर लाने का था ताकि जब वे परिसर के बाहर कदम रखें तो वे खोया हुआ या बेचैन महसूस न करें।'' बेंगलुरु के समीप स्थित रामनगर में दृष्टिबाधितों के लिए बी.जी. स्कूल में आयोजित इस RYLA में 200 से अधिक दृष्टि-बाधित शामिल हुये थे।

कार्यक्रम का उद्घाटन ज़िला पुलिस अधीक्षक बी रमेश, IPS, द्वारा क्लब अध्यक्ष राघवेंद्र आर और RYLA के अध्यक्ष आर शशिधर की उपस्थिति में किया गया।

चूंकि RYLA शिक्षक दिवस के दिन आयोजित किया गया था, इसलिए स्कूल के नेत्रहीन प्रशिक्षकों को सम्मानित किया गया। संदेश, एसबीआई में एक अधिकारी और स्कूल के एक पूर्व छात्र, और इनेबल इंडिया, नि:शक्तजनों के लिए काम करने वाला एक गैर सरकारी संगठन, से उनके 9 सदस्यीय दल की सहायता से लगभग 20 रोटेरियनों ने संवेदी खेल गतिविधियों का संचालन किया जो छूने, सूंघने, चखने, देखने और सुनने की इंद्रियों को उत्तेजित करते है। नेतृत्व कौशलों एवं प्रोत्साहन को विकसित करने की धारणा को समझने के लिए प्रतिभागियों को सबक दिये गए एवं खेल खिलाये गए।

क्लब के युवा सेवा निदेशक अमृतराज शिव आगे कहते है ''सामान्य विद्यार्थियों के लिए RYLA संचालित करना आसान है परंतु हम चीजों को कुछ अलग तरह से करना चाहते थे। इसके अलावा, यह जानना संतोषप्रद है कि हमने इन बच्चों को मजेदार गतिविधियों से भरा एक पूरा दिन दिया है।'' ■

एक महिला अध्यक्ष महत्वपूर्ण कॉर्पोरेट साझेदारियों को प्रकट करती है

जयश्री

कल्पना श्रीललिता प्रभाकरण की अध्यक्षता में रोटरी क्लब बैंगलोर व्हाइटफील्ड, मंडल 3190, ने पिछले साल अनेक कॉर्पोरेटों के साथ बेंगलुरु के आसपास के समुदायों को परिवर्तित करने के लिए साझेदारियाँ की है।

सबसे हाल ही की परियोजना शहर से लगभग 7 कि मी दूर स्थित क्लब द्वारा गोद लिए गए गाँव, नागनायकानाकोटे, में एक पानी का एटीएम स्थापित करने की थी। इस सुविधा का निधीयन पूरी तरह से यूके-आधारित एक बहुराष्ट्रीय कंपनी टेस्को द्वारा किया गया था, और वॉटरलाइफ नामक एक सामाजिक उपक्रम द्वारा इसे कार्यान्वित किया गया था। 60,000 डॉलर की लागत वाली यह मशीन लगभग 10,000 ग्रामीणों को स्वच्छ पेयजल प्रदान करती है।

यह स्वचालित जल वितरण इकाई प्रीपैड कार्ड के आधार पर कार्य करती है जहाँ लोग 1, 5 या 20 लीटर पानी एक प्रीपैड कार्ड को स्वाइप करके निकाल सकते है। इस सेवा की कीमत 5 लीटर के लिए ₹1.70 और 20 लीटर के लिए ₹17 निर्धारित है। एटीएम से एक घंटे में अधिकतम 1,000 लीटर पानी निकलता है। एक दूरस्थ निगरानी प्रणाली के माध्यम से पानी की गुणवत्ता की जांच की जाती है और वेंडर 10 वर्षों तक इकाई का प्रबंधन करेगा जिसके बाद क्लब द्वारा स्थापित एक RCC इसे अपने हाथों में ले लेगा।

इसके अलावा, गाँव को वर्षा जल संचयन प्रणाली प्रदान के लिए क्लब ने एक सामुदायिक कोष की शुरुआत भी की है।

कॉर्पोरेट को मनाना

सामुदायिक सेवा परियोजनाओं में निवेश करने हेतु कॉर्पोरेटों को आकर्षित करने की कल्पना के पास एक सुविचारित एवं व्यवस्थित तरीका है। ''यह रातों-रात नहीं होता; उनके साथ घनिष्ठता बनाने में, उनका भरोसा जीतने में और उन्हें यह समझाने में कि रोटरी एक भरोसेमंद साझेदार है, सालों लग जाते है,'' वह कहती है। जब वह क्लब की अध्यक्ष प्रत्याशी चुनी गई तब वह अनेक कॉर्पोरेट प्रमुखों के संपर्क में आई। ''जिस वक्त मैंने अध्यक्ष के रूप में प्रभार संभाला, तो

मुझे उनके साथ बातचीत करते हुये पहले ही दो साल हो चुके थे।''

पिछले अक्टूबर में, कल्पना ने एक कॉर्पोरेट बैठक आयोजित की थी जिसमें 100 कंपनियां शामिल हुई थी, जिनमें से 42 संगठनों ने रोटरी-कॉर्पोरेट सहयोग में रुचि जाहिर की थी। उन्होंने और उनके दल ने CSR प्रबन्धकों से मुलाक़ात की और रोटरी के पाँच ध्यानाकर्षण क्षेत्रों की अनुशंसा की। ''हमने 'शांति एवं संघर्ष समाधान' को पर्यावरण कार्यक्रमों के साथ प्रतिस्थापित किया। हमने कंपनियों को समूहों में विभाजित कर दिया, और प्रत्येक समूह के लिए एक पूर्व अध्यक्ष नियत किया ताकि वह सेवा परियोजनाओं के लिए मंथन करके विचार ला सके,'' कल्पना कहती है।

कल्पना श्रीललिता प्रभाकरण (बाएँ) पूर्व अध्यक्ष, रोटरी क्लब बैंगलोर व्हाइटफील्ड सेंट्रल, मंडल 3190 एक जल ATM के उद्घाटन समारोह में।

जिन 42 कंपनियों के साथ क्लब ने साझेदारी की, उनमें से 22 को विभिन्न परियोजनाओं के लिए चुना गया है और इन कॉर्पोरेट को उत्पाद एवं सेवा उन्मुख के रूप में वर्गीकृत किया गया है। ''हमने इन कंपनियों के साथ परियोजना-विशिष्ट समझौते ज्ञापन हस्ताक्षरित किए है। हम हर हफ्ते परियोजना के बारे में जानकारी प्रदान करते है और उनके साथ हर तीन माह में एक समेकित रिपोर्ट साझा करते है।''

इस प्रकार क्लब ने मर्सिडीज बेंज़ के सहयोग से उसी गाँव में एक खेल के मैदान का निर्माण किया है, और राजमने टेलेक्ट्रिक ने गाँव में सौर लैम्पों की स्थापना करने में उसकी मदद की है। TESCO और BBMP के साथ साझेदारी में बेंगलुरु में एक जैव विविधता उद्यान विकसित करने की योजना है।

पूर्व अध्यक्ष शहर के तीन सरकारी स्कूलों का नवीनीकरण करने की एक और दिलचस्प रणनीति साझा करते है, और उनमें से एक स्कूल में कार्य पूर्ण हो चुका है। जहाँ TESCO स्कूलों के लिए सौर पैनल प्रदान करेगा, वहीं श्नायडर इलेक्ट्रिक विद्युतीकरण की प्रक्रिया में मदद करेगा और एक्ज़ो नोबल, पेंट बनाने वाली एक बहुराष्ट्रीय कंपनी, स्कूलों के लिए पेंट प्रदान करेगी।

''जब इतने सारे साझेदार मौजूद है, तो हम अधिक स्कूलों को भी शामिल कर पाएंगे, और कॉर्पोरेट प्रसन्न होंगे क्योंकि उनके खर्चे साझा किए जा रहे है,'' वह कहती है। पुताई के काम के लिए, कल्पना कहती है कि वह कुछ बहुराष्ट्रीय कंपनियों के कर्मचारियों के पास गई थी जो सप्ताहांत में स्कूल की पुताई करने के लिए आनंदित थे। ''एडोब, जीई जैसी बहु-राष्ट्रीय कंपनियों में एक 'कर्मचारी नियुक्ति कार्यक्रम' होता है जिसके लिए कर्मचारियों को गैर-कामकाजी घंटों के दौरान किए जाने वाले कार्य के लिए क्रेडिट दिए जाते है। यह उनके लिए एक प्रकार का तनाव-निवारक है,'' वह आगे कहती है।

यह रातों-रात नहीं होता; उनके साथ घनिष्ठता बनाने में, उनका भरोसा जीतने में और उन्हें यह समझाने में कि रोटरी एक भरोसेमंद साझेदार है, सालों लग जाते है।

कल्पना श्रीललिता प्रभाकरण
पूर्व अध्यक्ष
रोटरी क्लब बैंगलोर व्हाइटफील्ड, मंडल 3190

इस प्रकार के चतुर कदम उठाकर क्लब ने ₹8 लाख की राशि एकत्रित कर ली है।

पक्षपात को ना

रिश्वत या घूस ना देने की अपनी धारणा पर कल्पना कायम थी; हालांकि वह इम्तिहान के समय से भी गुज़री। वह एक घटना के बारे में बात करती है जब एक पंचायत अधिकारी ने स्कूल में मरम्मत कार्य हेतु अनुमति देने के लिए पैसे मांगे थे। ''मैं मेरे खाते में 'उपहार' शीर्षक लिखाना नहीं चाहती थी। तो मैंने उनसे रोटरी और हमारे चार मार्ग परीक्षण के बारे में बात करने की कोशिश की।'' उनसे बात करने के दौरान उन्होंने जाना कि अधिकारी के बेटे का शहर के कॉलेज में दाखिला हुआ था और पिता को चिंता थी कि उनका बेटा शहरी परिवेश में शायद असहज महसूस करेगा क्योंकि वह ग्रामीण समुदाय से आया था। कल्पना ने कॉलेज के प्रमुख से बात की, इस छात्र पर कोई विशेष कृपा करने के लिए नहीं, बल्कि केवल यह देखने के लिए वह आराम से वहाँ व्यवस्थित हो जाए। और फिर इसने कमाल कर दिया!

एक अन्य मौके पर, एक कॉर्पोरेट प्रमुख एक परियोजना के लिए अपना समर्थन देने के बदले उसके उत्पाद के लिए बाजार सर्वेक्षण करवाना चाहते थे। ''मैंने उनका संपर्क एक प्रबंधन कॉलेज से करवाया जहाँ विद्यार्थी उस सर्वेक्षण को उनके पाठ्यक्रम के हिस्से के रूप में कर सकते थे।'' यह कॉलेज और कंपनी दोनों के लिए फायदेमंद साबित हुआ क्योंकि कॉलेज को ऐसे और अधिक कार्य मिले और कंपनी ने कैम्पस भर्ती के लिए हस्ताक्षर किया और विद्यार्थियों के लिए इंटर्नशिप के अवसर खोल दिये।

''मैं नहीं चाहती थी कि मेरा दल क्लब की देय राशि से अधिक खर्च करे। मैं बस चाहती थी कि वे उनका शारीरिक समर्थन दे और साइटों पर परियोजनाओं का समायोजन एवं उनका निरीक्षण करे,'' कल्पना कहती है, जो एक आईटी उद्यमी है। इस वर्ष उनके बाद आने वाले अध्यक्ष भी उनका अनुकरण कर रहे है, वह आगे कहती है। ■

चेन्नई के विद्यार्थियों ने किया नासा का दौरा

किरण ज़ेहरा

कभी अपने शहर के अलावा कोई और जगह ना देखने वाले, चेन्नई कारपोरेशन स्कूल के आठ बच्चे यूएस के ह्यूस्टन स्थित नासा के जॉनसन अंतरिक्ष केंद्र की उनकी हाल ही की यात्रा के बाद अत्यधिक प्रसन्न है, और यह सब मद्रास ईस्ट के रोटरी क्लब (RCME), मंडल 3232 के वार्षिक *विंग्स टू फ्लाई* कार्यक्रम के कारण संभव हुआ। क्लब बच्चों के लिए प्रतियोगिताएं आयोजित करता है और विजेताओं को विदेशों की यात्रा करने का अवसर दिया जाता है। पिछले दो वर्षों में, विजेताओं को इस कार्यक्रम के तहत मलेशिया और जर्मनी ले जाया गया। इस वर्ष, आठ बच्चे - आर गोपीनाथ, टी सुभाष, आई आधवन, डी काव्यांजलि, जी योगेश, एस प्रेमा, रेश्मा कुमारी और एस राज कुमार - ने अनेक प्रतियोगिताएं जीती जिसने उनके वैज्ञानिक कौशलों को बाहर निकाला, और अपने स्कूल के प्रधानाध्यापक एवं मद्रास ईस्ट के रोटरी क्लब के रोटेरियनों के साथ ह्यूस्टन और सैन एंड्रियास के दौरे पर गए। ''लेकिन यह ऐसा लगता है जैसे हम अभी-अभी चाँद से वापस आए है,'' रेश्मा कुमारी कहती है।

यह आठ बच्चे कारपोरेशन स्कूल के 4,000 प्रतिभागियों में से चुने गए थे। ''कल तक जो असंभव सा प्रतीत हो रहा था रोटरी के कारण वो ठीक हमारी आँखों के सामने था और हमें अपने सपने को पूरा करने के लिए बस कड़ी मेहनत करनी थी,'' सुभाष कहता है।

आत्म विश्वास का निर्माण

राष्ट्रीय STEM शिक्षण संस्थान से एक दल ने चुने गए 30 बच्चों का मार्गदर्शन किया और चयन के अंतिम दौर के लिए उन्हें सिखाया कि उनके समुदाय द्वारा सामना की जाने वाली दिन-प्रतिदिन की चुनौतियों के समाधान पर उनके चलित मॉडलों को कैसे प्रस्तुत करना है। शिविर बच्चों को केवल किसी परियोजना के कार्यान्वयन के बारे में प्रशिक्षित करने के लिए ही नहीं था, बल्कि राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान मेले के मानकों के साथ उनके आत्म-विश्वास के स्तर, शारीरिक हाव-भाव, सम्प्रेषण, प्रस्तुतीकरण, समस्या समाधान और मॉडल निर्माण के दृष्टिकोण में एक परिवर्तन लाने के लिए भी था, चेन्नई-आधारित संस्थान की संस्थापिका एन नागलक्ष्मी कहती है।

कारपोरेशन आयुक्त कार्तिकेयन, अपने ''उच्च व्यक्तित्व और तेज़ आवाज के साथ, वयस्कों में भी जोश भर सकते है। जब काव्यांजलि, कक्षा छठवीं की एक छात्रा को उसके प्रोजेक्ट से जुड़े उनके द्वारा पूछे गए कुछ प्रश्नों का सामना करना पड़ा, मुझे पूरा यकीन था कि वह घबरा या लड़खड़ा जाएगी। लेकिन उससे पूछे गए प्रत्येक प्रश्न का उत्तर उसने इतने आत्म विश्वास के साथ दिया जो केवल विषय वस्तु की गहन समझ से ही संभव है। वह एक अन्य क्षण था जिसने मुझे इस बात पर वास्तव में गर्व महसूस करवाया कि इस कार्यक्रम ने इन बच्चों के लिए क्या किया,'' वह कहती है।

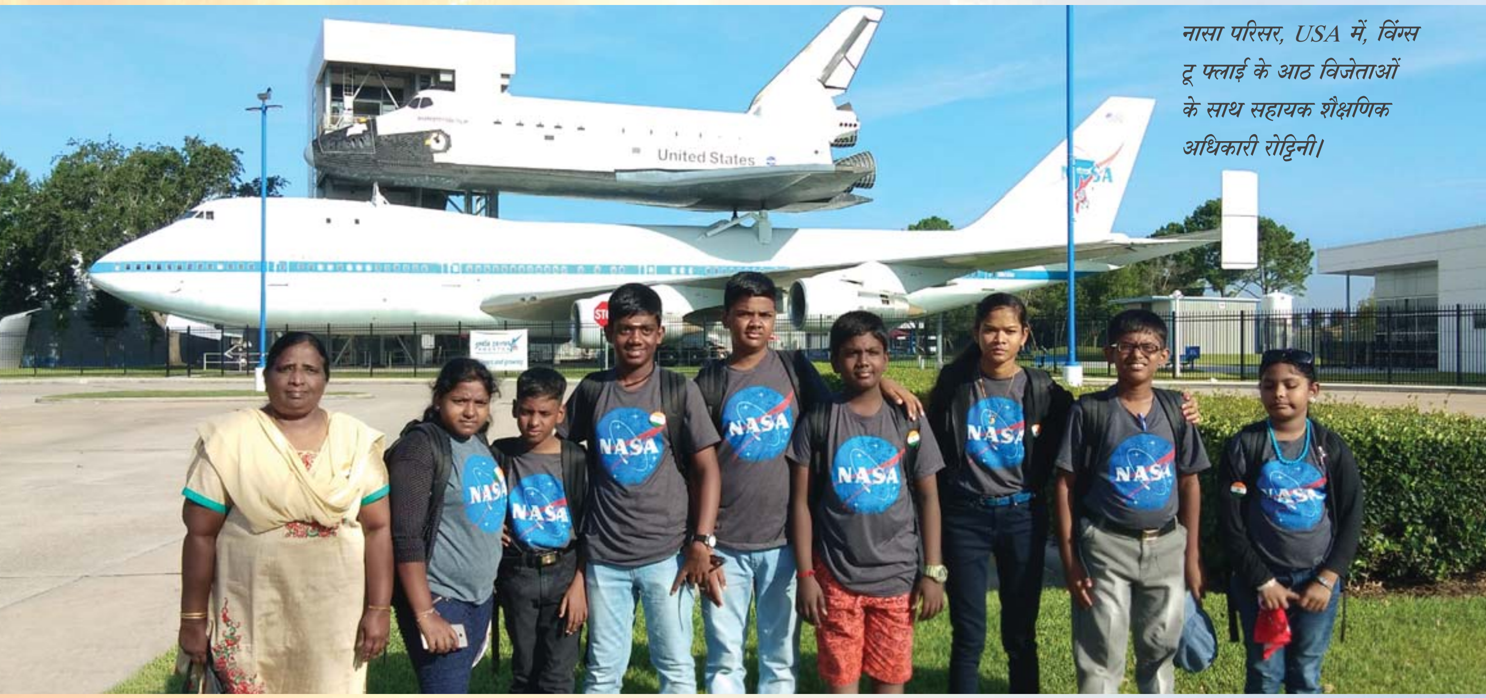

नासा परिसर, USA में, विंग्स टू फ्लाई के आठ विजेताओं के साथ सहायक शैक्षणिक अधिकारी रोट्टिनी।

मैं एक नए देश की यात्रा करने जा रही थी, लेकिन साथ ही मैं घबराई हुई भी थी क्योंकि मैं कभी चेन्नई से बाहर नहीं गई थी

सी वर्ल्ड में बच्चे और रोटरी क्लब मद्रास ईस्ट के रोटेरियनों मगेश पट्टाबीरामन (बाएँ) और एन नागलक्ष्मी (दाएँ)।

''जब मैंने अपने चयन की सूचना साझा की, मेरे पड़ोसी और दोस्तों ने जश्न मनाया और मेरी अम्मा रोई। यह ऐसा था जिसकी मैंने कभी कल्पना नहीं की था,'' गोपीनाथ कहता है। वीसा प्रक्रिया भी आसान थी और सभी बच्चों ने पहले प्रयास में ही अपने साक्षात्कार दौर को पास कर लिया था। ''हालाँकि मैं उत्साहित और खुश थी कि मैं एक नए देश की यात्रा करने जा रही थी, लेकिन साथ ही मैं घबराई हुई भी थी क्योंकि मैं कभी चेन्नई से बाहर नहीं गई थी,'' रेशमा कहती है।

होस्ट-सह-दोस्त

ह्यूस्टन में, RCME के पूर्व अध्यक्ष, जयंती गोविंदन, की भाभी रेवती वासुदेवन द्वारा बच्चों की मेज़बानी की गई। ''एक शानदार मेज़बान, वह उनके साथ ह्यूस्टन के दर्शनीय स्थलों पर जाती थी और उनके लिए दक्षिण भारतीय भोजन भी पकाती थी,'' नागलक्ष्मी कहती है। सेन एंटोनियो में, युवा आगंतुकों का स्वागत कौसी सुब्रमण्यम द्वारा किया गया, जो अनुजा एसए इंकॉर्पोरेटेड, एक लाभ-निरपेक्ष संगठन जो टेक्सास के सेन एंटोनियो और भारत के चेन्नई के मध्य सिस्टर-सिटि गठबंधन को प्रोत्साहित करता है, के अध्यक्ष भी है।

''हम अंतरिक्ष, ग्रहों और अंतरिक्ष यात्रियों के बारे में जितना भी जानते थे वे हमारी पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से ही जानते थे। ठीक अपनी आँखों के सामने उपग्रहों के मॉडलों को देखना और अंतरिक्ष स्टेशनों एवं उनकी कार्यप्रणाली के बारे में जानना मेरी कल्पना से परे था,'' राजकुमार कहता है।

काव्यांजलि के लिए, डेविड सी. हिल्मर्स, एक पूर्व नासा अंतरिक्ष यात्री, से बातचीत करना यात्रा का सबसे दिलचस्प हिस्सा था। ''जब वह एक नासा अंतरिक्ष यात्री थे, उन्होंने चार शटल उड़ानों में उड़ान भरी और 493 घंटों से अधिक समय अंतरिक्ष में बिताया। उन्होंने हमसे उनके अनुभव साझा किये और यह भी बताया कि अंतरिक्ष मिशन के लिए अंतरिक्ष यात्रियों को कैसे प्रशिक्षित किया जाता है। अब, मैं भी एक अंतरिक्ष यात्री बनने के सपने देखती हूँ।''

सी वर्ल्ड, नेचुरल ब्रिज केवर्न्स, गगनचुम्बी इमारतों और ह्यूस्टन के डाउनटाउन की सड़कों से 20 फीट नीचे बनी भूमिगत सुरंगों, जो लगभग 10 कि मी लंबी है, को देखकर बच्चे विस्मित थे। ''वे कितनी अलग सी दुनिया में रहते है। काश भारत भी उतना ही स्वच्छ और वास्तुकला में उतना ही अभिनव होता जितना ह्यूस्टन है,'' आधवन कहता है।

बैलर कॉलेज ऑफ़ मेडिसिन में, बच्चों को ओर्थोटिक्स और प्रोस्थेटिक लैब ले जाया गया। ''बच्चों को कृत्रिम अंग बनाते हुए देखना शानदार था। उन्होंने हमें बताया कि श्रीलंकाई गृह युद्ध के बाद, उनके कॉलेज ने वहाँ के सुरंग-पीड़ितों के लिए कृत्रिम अंग भेजे थे,'' राज कुमार कहता है।

अधिकांश बच्चों की विज्ञान में रूचि थी और ''हम उन्हें बड़े सपने देखने के लिए प्रोत्साहित करना चाहते थे और आशा करते है कि वे इस विषय में कैरियर की तलाश करेंगे। यही कारण है कि इस यात्रा में अंतरिक्ष केंद्र के अलावा, विज्ञान और प्राकृतिक इतिहास के संग्रहालयों के दौरे भी शामिल थे,'' परियोजना समन्वयक दल के एक सदस्य, वी ए रमेश कहते है। ''हमारा लक्ष्य इन बच्चों में रूचि जगाना और इन्हें यह दिखाना था कि अगर वे कड़ी मेहनत करते है और स्वयं पर यकीन रखते है तो कुछ भी संभव है,'' नागलक्ष्मी कहती है। ■

स्कूलों में WASH का व्यापक प्रभाव

वी मुत्तुकुमारण

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के 11 स्कूलों में छात्रों के व्यवहार में जबर्दस्त बदलाव को देखते हुए, रोटरी क्लब दिल्ली अशोक, मंडल 3012 द्वारा लागू किए गए WinS परियोजना को अशोक विहार, फेज-1 में स्थित निगम प्रतिभा विद्यालय में केंद्रीय पर्यावरण-सह-विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री डॉ हर्षवर्धन द्वारा अनेक सुविधाओं के उद्घाटन के साथ बहुत बढावा मिला।

सितंबर माह की समाप्ति तक, क्लब ने चार स्कूलों में WinS सुविधाओं का उद्घाटन किया जिनमें से दो स्कूल नोएडा और दो स्कूल दिल्ली में हैं - और ''शेष स्कूलों में लगभग 75 प्रतिशत कार्य पूरा हो चुका है। एक बार उद्घाटन होने के बाद, वे छात्रों के स्वच्छता की आदतों में एक व्यापक व आदर्श बदलाव लाएंगे,'' क्लब के अध्यक्ष अजय अग्रवाल कहते हैं।

निगम प्रतिभा विद्यालय में मौजूदा तीन ब्लॉकों को पुनर्निर्मित करने के अलावा लड़के और लड़कियों के लिए अलग-अलग शौचालय ब्लॉक का उद्घाटन किया गया; आरओ सिस्टम के माध्यम से सुरक्षित पेयजल की व्यवस्था की गई; डेस्क, बेंच जैसे नए फर्नीचर उपलब्ध कराया गया; चार सामूहिक हैंडवॉशिंग स्टेशनों की स्थापना की गई; इसके अतिरिक्त शौचालय के गलियारे में यूनिसेफ द्वारा सुझाए गए स्वच्छता संदेश और सभी कक्षाओं में स्वस्थ रहने के लिए सुरक्षा के उपायों, करने योग्य उचित और अनुचित कार्य से संबंधित सुझावों को कक्षाओं में लगाया गया; और स्कूल की भवनों का जरूरी जीर्णोद्धार किया गया। ''अब तक हम चार स्कूलों में लगभग 30 लाख खर्च कर चुके होते। अग्रवाल जी कहते हैं कि दिल्ली, नोएडा और सोनीपत (हरियाणा) के सात स्कूलों में वैश्विक अनुदान के माध्यम से कार्य प्रगति पर है, जिससे 11 स्कूलों में करीब 5,000 छात्र'' लाभान्वित होंगे।

आरसी बॉक्स हिल सेंट्रल, ऑस्ट्रेलिया, मंडल 9810 के सहयोग से, क्लब ने रोटरी फाउंडेशन के 'टारगेट चैलेंज पायलट' के अधीन आने वाली परियोजना को निष्पादित करने के लिए 108,000 डॉलर का एक टीआरएफ अनुदान प्राप्त किया है।

केंद्रीय मंत्री डॉ हर्षवर्धन (बीच में) PDG रमेश अग्रवाल और NDMC मेयर आदेश गुप्ता, स्कूल में बच्चों द्वारा हैंडवाश व्यायाम का प्रदर्शन देखते हुए।

एक मॉडल स्कूल

एक कदम आगे बढ़ते हुए, क्लब ने एनजीओ वर्ल्ड विजन इंडिया को प्रतिभा विद्यालय में 'व्यवहार परिवर्तनों और क्षमता निर्माण कार्यों' की एक श्रृंखला को संचालित करने के लिए चुना है, ताकि इस विद्यालय को मॉडल WASH संस्थान के रूप में विकसित करने के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके और और ''इस प्रकार स्कूल और सामुदायिक स्तर पर स्थायी स्वच्छता प्रथाओं का अनुकरणीय उदाहरण स्थापित किया जा सके,'' आरआई WinS कमेटी (2016-20) के सदस्य, और रोटरी इंडिया WinS के उत्तरी क्षेत्र के सचिव पीडीजी रमेश अग्रवाल कहते हैं। इस अवसर पर बाल संसद (बाल कैबिनेट) का भी उद्घाटन किया गया।

''ग्रुप हैंडवॉशिंग यह सुनिश्चित करेगा कि एक शिक्षक की देखरेख में मध्य-भोजन से ठीक पहले छात्र 'समूह' में एक-दूसरे के आमने-सामने होकर अपना हाथ धोएं ताकि स्वच्छता के सकारात्मक संदेश का आदान-प्रदान किया जा सके और वे ऐसा करते हुए आंखों का संपर्क बनाएं रखें, हाथ धोने पर एक

छोटा मधुर गाना गाते हुए इस प्रक्रि या का आनंद उठाएं,'' अग्रवाल जी कहते हैं।

बच्चें व्यवहारिक परिवर्तन के शक्तिशाली वाहक होते हैं, और इस प्रकार बच्चें अपने माता-पिता, भाई-बहनों और बुजुर्गों को स्कूल में सीखे गए अच्छी आदतों जैसे साबुन और पानी से हाथ धोने की आवश्यकता और उसके महत्त्व से परिचित करायेंगे।

केंद्र सरकार रोटरी का समर्थन करेगी

अपने संबोधन में केंद्रीय मंत्री डॉ वर्धन ने कहा कि अकेले सरकार बीमारियों को समाप्त करने में सफल नहीं हो सकती है और स्कूल और सामुदायिक स्तर पर स्कूल और रोटरी के प्रयास निश्चित रूप से छात्रों की बेहतर स्वास्थ्य देखभाल सुनिश्चित करेंगे।

उन्होंने टिप्पणी करते हुए आगे कहा कि कि रोटरी इंडिया WinS के अधीन 20,000 से अधिक स्कूलों में शामिल था, जो ''न केवल शौचालय, पेयजल और हैंडवॉशिंग सुविधाओं को उपलब्ध कराने बल्कि संचार गतिविधियों और स्वच्छता शिक्षा के माध्यम से व्यवहार में बदलाव पर ध्यान केंद्रित करके बच्चों के भविष्य को संवारने में मदद करेगा।''

अग्रवाल ने दिल्ली के रोटरी क्लबों से WinS को कम से कम 50 स्कूलों में लागू करने का अनुरोध किया और केंद्र सरकार तथा नगर निगम के सहयोग का आश्वासन दिया। यूनिसेफ के WASH विशेषज्ञ राम चंद्र सिंह ने केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय के स्वच्छ विद्यालय कार्यक्रम की सफलता के लिए रोटरी की सराहना की।

रोटरी को धन्यवाद देते हुए, स्कूल के प्राचार्या वनीता बजाज ने कहा कि WinS परियोजना ''छात्रों की उपस्थिति, नामांकन, शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करने, बच्चों के स्कूल छोड़ कर जाने में कमी लाने और पानी से उत्पन्न होने वाली बीमारियों को रोकने में गेमचेंजर'' साबित होगी।

नोएडा के पुरवा माध्यमिक विद्यालय में WinS सुविधाओं की स्थापना के बाद, छात्रों का नामांकन 90 से बढ़कर 270 तक पहुंच गया है क्योंकि माता-पिता इस सह-शिक्षा स्कूल में बेहतर स्वच्छता व्यवस्था से आकर्षित हुए थे। WinS उद्घाटन के दौरान केंद्रीय सरकार के अधिकारी, नगर निगम के पार्षद, यूनिसेफ के प्रतिनिधी सहित बडी संख्या में रोटेरियन मौजूद थे। ■

सेलम के रोटेरियन पट्टाया स्थित एक अनाथालय में पहुंचे

टीम रोटरी न्यूज़

रोटरी क्लब सेलम यंगटाउन, अध्यक्ष डी हरी भास्कर (बाएँ से पाँचवे) पट्टाया में एक अनाथालय में।

सलेम यंगटाउन, मंडल 2982 के रोटरी क्लब ने हाल ही में बैंकाक के निकट स्थित पट्टाया में नए पदाधिकारी को नियुक्त किया। रोटरी क्लब जोमिटियन पट्टाया के अध्यक्ष वुटिकोरण कमलचोटे के सुझाव पर, 18 सदस्यीय दल ने पट्टाया में एक अनाथालय बाण जिंग जय का दौरा किया और संस्था में प्रावधानों और अन्य उपयोगों के लिए जरूरी सामग्रियों की खरीद के लिए ₹50,000 का दान दिया। अन्य स्थानीय क्लबों के अध्यक्ष और मंडल 3340 के कुछ पूर्व गवर्नर भी रोटेरियन के साथ दौरे पर गए थे।

यह अनाथालय नौ महीने से लेकर 18 वर्ष की आयु के 150 बच्चों के लिए आवास, भोजन और शिक्षा की सुविधा प्रदान करता है। क्लब के अध्यक्ष हरि भास्कर ने बताया कि, ''प्रबंधक खुन पिंगता अनाथालय में शौचालय ब्लॉक के निर्माण में हमारी मदद के इच्छुक थे और हमने इस पर कार्य में उनकी मदद करने का निर्णय लिया है।''

अनाथालय की यात्रा उनकी दूसरी विदेशी परियोजना है, पहली परियोजना श्रीलंका में जातीय युद्ध से विस्थापित छात्रों को शैक्षणिक सहायता प्रदान करने से संबंधित है।

चार्टर अध्यक्ष सी त्यागराजन के नेतृत्व में चार क्लबों की 25 सदस्यीय मंडल टीम ने श्रीलंका के उत्तरी प्रांत में किलिनोची और जाफना का दौरा किया, जिसके बाद द्वीप की सरकार ने वर्ष 2015 में गृह-युद्ध की समाप्ति के छः वर्षों के अंतराल के उपरांत नागरिक प्रतिनिधियों और सहायता एजेंसियों के लिए दरवाजे खोले। ''स्थानीय सांसद एस्वरापथम सरवानापवन के मार्गदर्शन में, हमने 300 बच्चों के मध्य ₹1 लाख की लागत से स्कूल यूनिफार्म और पाठ्यपुस्तकों का वितरण किया। तत्कालीन डीजीई आर वासु भी प्रतिनिधिमंडल का हिस्सा थे, ने'' थियगराजन को याद किया, जो वर्तमान में पब्लिक इमेज के मंडल अध्यक्ष हैं।

उन्होंने क्लब अब वैश्विक अनुदान की मदद से सलेम के पास मल्लिकाकरई गांव के उच्च माध्यमिक विद्यालय में लडकियों के लिए शौचालय ब्लॉक बनाने के लिए तैयारी कर रहा है। ■

THE ANNOTATED GUIDE TO ENDING POLIO

Diana Schoberg

As the number of polio cases approaches zero, the challenges facing Rotary and its partners in the Global Polio Eradication Initiative are changing. We still need to reach every child with the polio vaccine — and we're using innovative strategies to do that, in spite of geopolitical uncertainties. But that's only one part of our job. We're tackling vaccine-derived poliovirus, which can begin to spread in places where vaccine coverage is low. We're becoming disease detectives, following up on any shred of evidence that wild poliovirus might still be circulating. And we're fine-tuning our plan to keep the world free of polio forever. Here's what you need to know about where we are now.

Polio is an intestinal virus that is spread through contact with the feces of an infected person, which can contaminate water or food.

The poliovirus is a single positive strand of RNA enclosed in a protective coating called a capsid.

There are three variations, or serotypes, of the poliovirus. They differ in their outer coatings.

The few cases of wild poliovirus that we see now are all of type 1. The last case of type 2 was in 1999, and the world was certified free of type 2 polio in 2015. The last case of type 3 was in 2012.

The virus infects only humans, mainly children under five because they are least likely to be fully vaccinated. There is no cure.

1. The virus latches onto a receptor on the surface of a cell, multiplying in the lining of the intestines.
2. It enters the cell and hijacks the cell's own machinery to make copies of itself.
3. The virus is released to infect neighbouring cells, spreading from the digestive tract to lymph nodes and the bloodstream.

The virus replicates and is excreted through feces, starting the cycle again.

Rotary and its partners worked to reach 430 million children in 39 countries during polio immunisation campaigns in 2017.

Afghanistan, Angola, Benin, Cameroon, Central African Republic , Chad, Côte d'Ivoire, Democratic Republic of Congo, Djibouti , Equatorial Guinea, Ethiopia, Gabon, Guinea, Guinea-Bissau, India, Indonesia, Iraq, Kenya, Laos, Liberia, Libya, Madagascar, Mali, Mauritania, Mozambique, Myanmar, Nepal, Niger, Nigeria, Pakistan, Republic of the Congo, Sierra Leone, Somalia, South Sudan, Sudan, Syria, Tajikistan, Uganda, Yemen

We're also fighting vaccine-derived poliovirus.

The Global Polio Eradication Initiative (GPEI) uses the oral polio vaccine in immunisation campaigns. It's made from strains of the poliovirus that are live, but weakened.

This weakened virus multiplies in a child's gut, stimulating an immune response in the lining of the intestines. Then the child excretes the vaccine-virus in his or her feces.

That is usually a good thing: Other children are then exposed to the weakened vaccine-virus in the environment. This exposure stimulates their bodies to create the protective antibodies as well. It's a way to indirectly induce immunity

in children who may not have been reached by health workers with doses of the vaccine.

In places with low immunisation rates, the weakened vaccine-virus can begin to circulate. In rare cases, it mutates back into a more virulent strain that can cause paralysis. This is called vaccine-derived poliovirus (VDPV).

In 2016, the year after the world was certified free of type 2 polio, all countries switched from a trivalent vaccine, which immunised against all three strains, to a bivalent vaccine, which immunises only against types 1 and 3.

Since the switch, there have been outbreaks of circulating vaccine-derived poliovirus (cVDPV) from the type 2 strain in the Democratic Republic of Congo, Nigeria, Somalia, and Syria. The GPEI has a stockpile of monovalent type 2 vaccine to use to stop these outbreaks.

High immunisation rates are the best protection against both wild and vaccine-derived polioviruses.

Many countries use inactivated polio vaccine, which uses a dead virus, in their routine immunisation systems to avoid the risk of VDPVs. Inactivated polio vaccine protects only the individual who received the vaccine against polio infection

Oral polio vaccine is the only vaccine that can interrupt the person-to-person transmission of wild poliovirus, which is why it will be used until the world is certified polio-free. Once wild poliovirus types 1 and 3 have been eradicated, only inactivated polio vaccine will be used.

We search out the poliovirus wherever it hides.

Scientists look for evidence of the poliovirus in the environment to learn more about how it is circulating...

Most children infected with the poliovirus don't show symptoms, but they still excrete the virus in their feces for several weeks.

Workers collect water samples near sewage treatment plants or, in areas without adequate sanitation, other known sources of wastewater such as open canals and streams.

Samples are kept cold during transportation to a lab that is part of the Global Polio Laboratory Network.

Virologists test the samples for poliovirus.

If virologists confirm the presence of a poliovirus, they carry out further tests to determine the exact genetic makeup of the virus and whether it is wild or vaccine-derived.

...and health workers track the children who show symptoms to see if they are caused by the poliovirus.

A child under age 15 experiences sudden, unexplained weakness or paralysis, known as acute flaccid paralysis (AFP). Most cases of paralysis are not caused by polio, but we investigate them to be certain.

A doctor or other community member such as a traditional healer, pharmacist, or cleric reports the case to medical authorities. Samples are kept cold during transportation to a lab that is part of the Global Polio Laboratory Network.

Doctors collect a stool sample within 48 hours of the onset of paralysis, and another one 24 to 48 hours later.

The scientists compare it against reference samples of known polioviruses. Because viruses from different regions have slightly different genetic sequences, the virologists can map where the virus came from — whether it was local or came across a border or from farther away.

Health workers use this information to figure out the best immunisation strategy to prevent further spread.

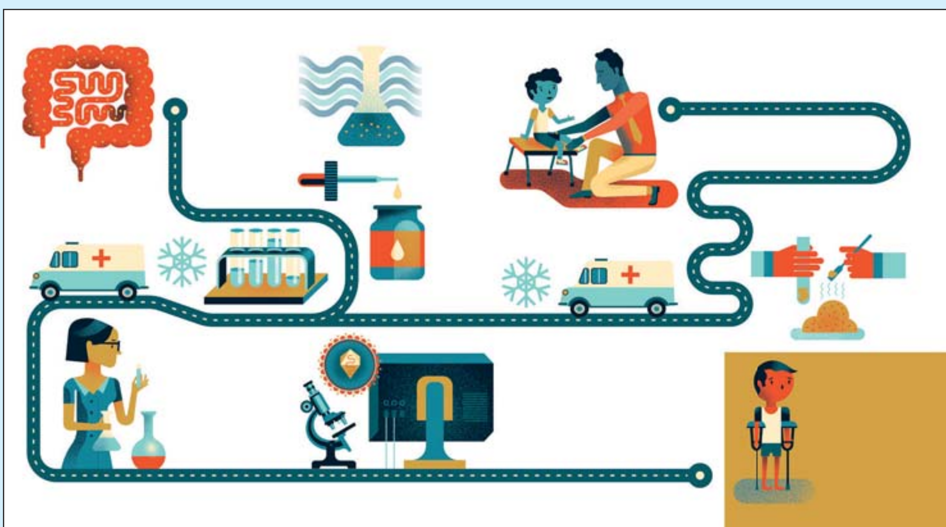

The scientists who identify the virus work in one of the 146 labs accredited by the World Health Organisation, in **92 countries**, that make up the Global Polio Laboratory Network.

123

SUBNATIONAL AND NATIONAL LABORATORIES are the frontline facilities that test stool and sewage samples

17

REGIONAL REFERENCE LABORATORIES distinguish between wild and vaccine-derived poliovirus and determine the genetic makeup of the virus

6

GLOBAL SPECIALISED LABORATORIES determine the genetic makeup of the virus, and prepare and distribute the chemicals used in virus testing

In 30 years, we've gone from 125 polio-endemic countries...

1988

...to three

2018

17.4 million

people who are currently healthy would have been paralysed by polio without our eradication efforts since 1988

The Rotary Foundation awarded nearly $700 million in PolioPlus grants from 2010 to 2017. Vaccines are largely covered by other donors, so Rotary provides funds to cover the gaps.

RESEARCH
into new ways to facilitate eradication
$16.6 million

SURVEILLANCE
for disease detection, including the Polio Laboratory Network
$72.5 million

TECHNICAL ASSISTANCE
including salaries for health and immunisation professionals such as field officers and cold chain managers
$132 million

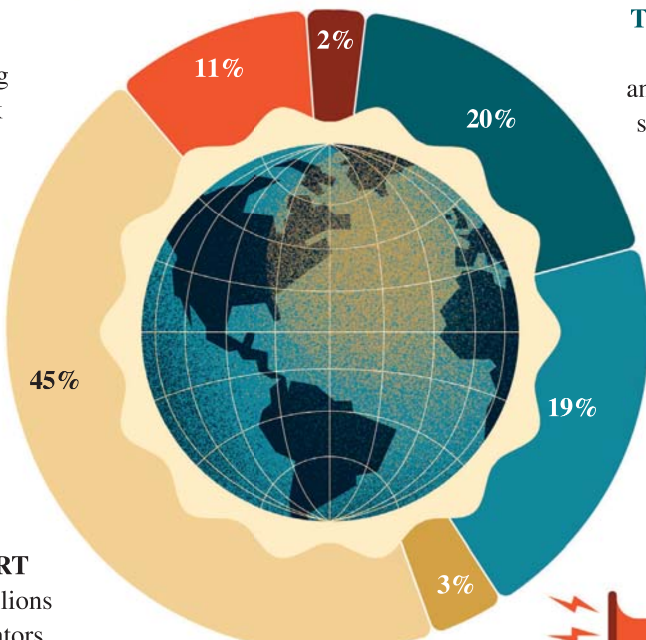

SOCIAL MOBILISATION
to raise awareness of the vaccination campaigns and the benefits of immunisation
$141.4 million

OPERATIONAL SUPPORT
including stipends for the millions of community-based vaccinators who administer the vaccine and perform house-to-house follow-up visits
$308 million

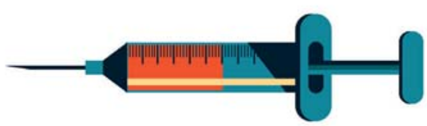

VACCINES
$20.4 million

And we have a plan for keeping the world polio-free forever.

INTERRUPTION

- Detect the last wild poliovirus in an individual or the environment.
- Continue immunisations, surveillance, and responses to outbreaks of vaccine-derived poliovirus.
- Begin to transition the resources that the GPEI created to support other health priorities.

CERTIFICATION

- Certify the world polio-free.
- Dissolve the Global Polio Eradication Initiative.
- Reduce the number of laboratories and vaccine-manufacturing facilities that store the poliovirus and ensure stringent safeguards for those that continue to handle the virus.
- Hold high-quality immunisation campaigns to create a firewall of immunity in advance of the withdrawal of the oral polio vaccine.

TRANSITION

- Stop using oral polio vaccine concurrently in all countries to eliminate the risk of vaccine-derived poliovirus and begin to immunise children using only the inactivated polio vaccine in routine immunisations.
- Continue surveillance; after the world is polio-free, environmental surveillance will be increasingly relied on.
- Respond to outbreaks of vaccine-derived poliovirus, which could circulate for several years after ending the use of oral polio vaccine.

Help us see this fight to the end.
Donate at endpolio.org.

Illustrations by Gwen Keraval

© The Rotarian

उधमपुर में रेटिना केयर सेंटर स्थापित किया गया

टीम रोटरी न्यूज़

मंडल 3070, उधमपुर के रोटरी क्लब ने पिछले वर्ष जम्मू-कश्मीर के उधमपुर में केएलएसएम रोटरी नेत्र और ईएनटी अस्पताल में एक रेटिना देखभाल केंद्र स्थापित किया था। इस सुविधा का उद्घाटन आरआईपीएन-नामित सुशील गुप्ता ने तत्कालीन डीजी परविंदर जीत सिंह, अस्पताल के अध्यक्ष डी एन शर्मा, क्लब अध्यक्ष पुराण लाल शर्मा और जिला अधिकारी की उपस्थिति में किया था। डीजीई सुनील नागपाल, डीजीएन दिविंदर सिंह और मंडल के अन्य भूतपूर्व गवर्नर भी इस अवसर ऊपर उपस्थित थे।

RIPN पदनामित सुशील गुप्ता, IPDG परविंदर जीत सिंह और PDG के के धीर, रेटिना केयर केंद्र के उद्घाटन पर।

68,000 डॉलर की लागत वाले केंद्र की स्थापना के लिए वित्त टीआरएफ, मंडल 6650, यूएसए और मंडल 2770, जापान से वैश्विक अनुदान के माध्यम से उपलब्ध कराया गया था। उधमपुर और राजौरी के रोटरी क्लबों के उदार योगदान के अतिरिक्त, मंडल 3070 और 3131 के डीडीएफ ने भी उदारतापूर्वक योगदान दिया।

श्रीनगर में इसी तरह के एक केंद्र के बाद यह राज्य में यह दूसरा ऐसा केंद्र है। इससे पहले लोगों को रेटिना की देखभाल के लिए अमृतसर से 500 किमी की यात्रा करनी पड़ती थी। हॉस्पिटल के अध्यक्ष शर्मा जी, जो एक रोटेरियन भी है, ने आश्वासन दिया कि निर्धनों का मुफ्त उपचार किया जाएगा और उन लोगों छूट पर इलाज की सुविधा दी जाएगी जो इसका व्यय सहन करने में सक्षम नहीं हैं।

केंद्र मैकु लर क्षय, मधुमेह रेटिनोपैथी और रेटिना, मैक्यूला और शीशा सदृश शल्य चिकित्सा द्वारा रोगों का उपचार करने में मदद करेगा। ■

बेटिओं का जश्न मानाने के लिए एक फोटो प्रतियोगिता

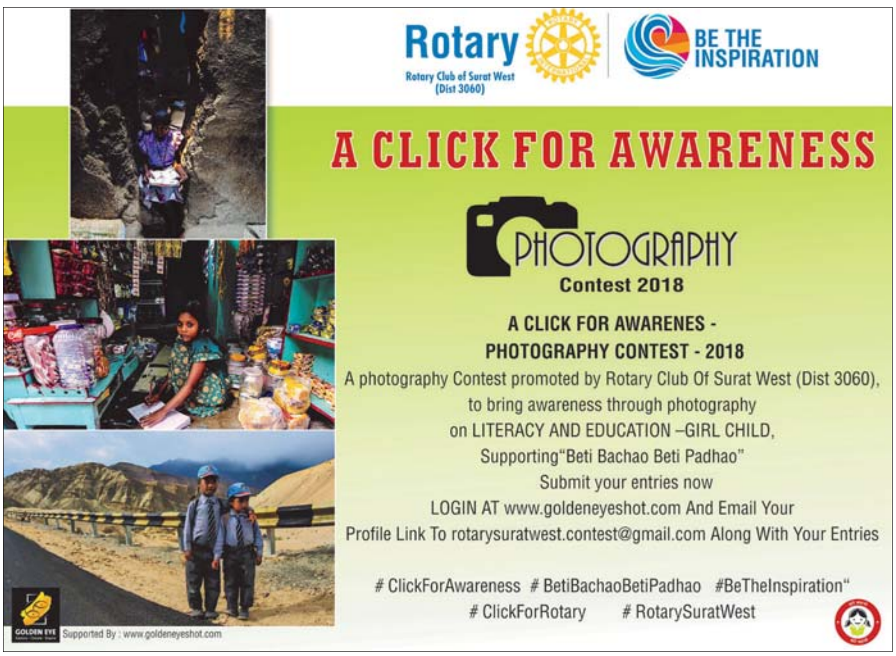

रोटरी क्लब ऑफ सूरत वेस्ट, मंडल 3060, ने लड़कियों कि शिक्षा के हित में एक राष्ट्रीय स्तर फोटोग्राफी प्रतियोगिता कि घोषणा कि हैं। प्रत्येक प्रतिभागी पांच चित्रों तक भेज सकते है।

कृपया आपकी प्रविष्टियां 20 नवंबर, 2018 से पहले *rotarysuratwest.contest@gmail.com* पर भेजें। अधिक जानकारी के लिए क्लब के अध्यक्ष विवेक गोयल से संपर्क *somiyabong@gmail.com* पर करें। ■

उत्तर पूर्व में रोटरी का जादुई स्पर्श

टीम रोटरी न्यूज़

मंडल 3240 उत्तर पूर्व, सिक्किम और पश्चिम बंगाल के उत्तरी हिस्से के सात राज्यों का एक विशाल क्षेत्र है। यह मंडल संस्कृति के विभिन्न रंगों के साथ विषम समुदायों का एक आकर्षक मिश्रण है। यहां, 88 रोटरी क्लबों में से प्रत्येक रोटरी के माध्यम से सेवा के अपने प्रभाव को दिखाने के लिए अपना स्वयं के बृहद परियोजनाओं का निर्माण करता है।

वैश्विक अनुदान की मदद से क्लबों द्वारा निष्पादित कुछ अनूठी परियोजनाएं का विवरण यहां दिया गया हैं, जिन्होंने वैश्विक अनुदान की मदद से वर्ष के दौरान इस क्षेत्र के लोगों के जीवन को बेहतर बनाया है।

सार्वजनिक शौंचालय

सात रोटरी क्लबों ने गुवाहाटी, शिलांग, अगरतला, इम्फाल, दीमापुर, ऐजवाल और सिलचर के सात राजधानी शहरों में 'भुगतान करें और उपयोग करें' शौचालय स्थापित किया हैं। यह प्रस्ताव पीडीजी अरिजीत एंडो के दिमाग की उपज था। रोटरी क्लब गौहाटी दक्षिण के एक सदस्य गिती बुर्जबुरुह कहते हैं, कि पीआरआईपी कल्याण बनर्जी और पीडीजी कल्पना खौंड के साथ राज्यों में यात्रा करते समय उन्होंने क्षेत्र में सार्वजनिक शौचालयों की गंभीर कमी देखी और इस प्रकार परियोजना का प्रस्ताव तैयार किया गया। शौचालयों का निर्माण दि रोटरी फाउंडेशन और मंडल 5020, यूएसए द्वारा प्रद्दत 73,650 डॉलर के वैश्विक अनुदान के वित्तीय सहयोग से किया गया था।

क्लबों ने शौचालयों के रख-रखाव के लिए स्थानीय नागरिक निकायों और गैर-सरकारी संगठनों के साथ एमओयू पर हस्ताक्षर किए हैं। गिती कहते हैं, ''सभी शौचालयों को स्वच्छ और अच्छी तरह से बनाए रखा जाता है। हमारे रोटारियन नियमित रूप से उनकी आकस्मिक जांच करते हैं।''

आर्सेनिक मुक्त पानी

असम के नलबारी मंडल में पेयजल स्रोत गंभीर रूप से आर्सेनिक से प्रदूषित है। आर्सेनिक की उपस्थिति बहुत ही चिंता का विषय है क्योंकि प्रदूषित पानी के लंबे समय तक उपयोग से आदमी की मौत हो सकती

रोटरी किडनी केयर केंद्र, दुर्गापुर में एक मरीज का इलाज।

रोटरी क्लब सिलचार द्वारा निर्मित शौचालय।

है। इसलिए गुवाहाटी दक्षिण के रोटरी क्लब ने विशेष रूप से डिजाइन किए गए बड़े आर्सेनिक निकालने वाला संयंत्र के माध्यम से पानी में से आर्सेनिक को निकाल कर उसे शुद्ध करने के लिए एक पहल की। गिती कहते हैं, ''हमने 17 स्कूलों में इन संयंत्रों को स्थापित किया है ताकि बच्चे सुरक्षित पेयजल का आनंद ले सकें, जो रसायनों से मुक्त हो।'' रोटरी क्लब टैकोमा, मंडल 5020, यूएस, और टीआरएफ द्वारा प्रद्दत 69,000 डॉलर के वैश्विक अनुदान से परियोजना निष्पादित की गई।

बहुत बीमार लोगों के लिए होस्पिस

दीपिका फाउन्डेशन के सहयोग से रोटरी क्लब गौहाटी पश्चिम ने असम के दक्षिण कामरूप मंडल के मिर्जा में एक धर्मशाला की स्थापना की है, जो कि बीमारियों की देखभाल करने और उन्हें प्रशामक देखभाल प्रदान करती है। टीआरएफ और मंडल 3500 के सिंचु चुचैनन रोटरी क्लब, ताइवान द्वारा हस्पिस के लिए फर्नीचर और चिकित्सा उपकरणों की खरीद के लिए 31,156 डॉलर का वैश्विक अनुदान प्रदान किया गया।

डायलिसिस केंद्र

रोटरी क्लब एरोसिटी दुर्गापुर द्वारा पश्चिम बंगाल के दुर्गापुर में ड्रीमलैंड नर्सिंग होम में स्थापित रोटरी किड्नी केयर सेंटर वास्तव में इस क्षेत्र के लोगों के लिए एक वरदान साबित हुआ है। मुरपार्क, एल्खार्ट, बेकर्सफील्ड ईस्ट, बेकर्सफील्ड नॉर्थ, ग्रोवर बीच, पिस्मो बीच (पांच शहरों), मुरपार्क मॉर्निंग, सेमी सनसेट, केयूकोस सीसाइड, थाउजेंड ओक्स, इंड्यिन वेल्स वैली, न्यूबरी पार्क, गोलेट नोओटाइम के रोटरी क्लबों और मंडलों 5240, 6540, 3240 के डीडीएफ और टीआरएफ जैसे अंतरराष्ट्रीय भागीदारों द्वारा प्रद्दत 53,150 डॉलर के वैश्विक अनुदान की सहायता से तीन बिस्तरों वाला डायलिसिस केंद्र स्थापित किया गया था। ■

रोटरी ने वृद्धाश्रम में पुनर्वास केंद्र खोला

टीम रोटरी न्यूज़

बाएँ से : रोटेरियन गण एस के घाइ, भावना अंसारी, रवि शिंडे, अध्यक्ष सुधा नवांदार, योगेश ज़वेरी और रजनी सेथ केंद्र के उद्घाटन में।

भिवंडी तालुक में खड्वली के वृद्धश्राम, मातोश्री वृद्धश्राम के सदस्य और आगंतुक अब रोटरी पुनर्वास और परामर्श केंद्र में आराम से रह सकते हैं, रोटरी क्लब मुंबई घाटकोपर, मंडल 3141 को धन्यवाद, जिन्होंने हाल ही में 7 लाख रुपये की लागत से इस नई सुविधा का उद्घाटन किया है।

केंद्र की इमारत के पहले मंज़िल पर चार पूर्ण सुसज्जित कमरे हैं। क्लब के अध्यक्ष सुधा नवंदर कहते हैं, ''वृद्धाश्रम में रहने वाले बुजुर्ग लोगों के रिश्तेदार कुछ दिनों के लिए उनके साथ समय बिता सकते हैं। इस तरह वरिष्ठ नागरिकों को अपने मित्र ओर रिश्तेदार के साथ रहने का आनंद मिलेगा। इससे पहले, रिश्तेदार शयनशाला में रह रहे थे और वहां कोई जगह नहीं थी जहां आगंतुक बैठ सकते और बात कर सकते हैं या रह सकते।''

क्लब के एक सदस्य, सुनील एम पुराणिक कहते हैं, ''परिवारों के मतभेदों को हल करने और उन्हें एकजुट करने के प्रयास में वृद्धाश्रम में रहने वाले आगंतुकों और बुजुर्गों को सलाह देने के लिए एक परामर्शदाता नियुक्त किया गया है।'' ■

बाढ़ पीड़ितों के लिए एक तैरने वाला घर

रशीदा भगत

उत्तर पूर्वी भारतीय राज्य असम के 21 सदस्यों वाले एक छोटे क्लब - दिसपुर का रोटरी क्लब, रोई मंडल 3240, ने इस मामले में अपने स्वयं के सदस्यों के नेतृत्व में, इस बात का एक शानदार उदाहरण प्रस्तुत किया है कि कैसे कॉर्पोरेट के साथ केन्द्रित, समर्पित और स्मार्ट साझेदारियाँ, प्राकृतिक आपदाओं से ग्रस्त इलाकों के कारण होने वाली समस्याओं के लिए नवीन समाधान पेश कर सकती है। और, नाटकीय ढंग से समुदाय में जिंदगियों को बदल सकती है।

यह परियोजना माजुली की सहायता हेतु की गई थी, जो गुवाहाटी के पूर्व में 340 किलोमीटर दूर एक नदी द्वीप है, और ब्रह्मपुत्र नदी पर स्थित है। कुछ 20 अनोखे वैष्णव *सत्रों* (मठों), जहाँ पर अध्यात्म और संस्कृति सराही जाती है, का आवास होने के साथ ही यह दुनिया का सबसे बड़ा नदी द्वीप है। यह एक प्रसिद्द पर्यटन स्थल भी है। 2016 में, 167,300 से भी अधिक लोगों की जनसंख्या के साथ यह द्वीप भारत का ऐसा पहला द्वीप बना जिसे जिला बनाया गया।

क्लब अध्यक्ष (2017-18), रोटेरियन सुन्दर बोरदोलोई के अनुसार, पिछले कुछ वर्षों में, गंभीर कटाव के कारण, यह द्वीप तेजी से अपनी ज़मीन खो रहा है और लगभग अपने आकार का आधा हो गया है। लेकिन इसके रहवासियों के लिए सबसे बड़ी समस्या यह है कि यह द्वीप हर साल चार से पांच विनाशकारी बाढ़ से त्रस्त होता है और जब ऐसा होता है तो यह अपने निवासियों के लिए अकल्पनीय कष्ट का कारण बनता है।

''ये बाढ़ हजारों लोगों को अपने घरों को छोड़कर किसी ऊँचे स्थान या राष्ट्रीय राजमार्ग जैसी ऊँची सड़कों पर आश्रय लेने के लिए मजबूर करती है। लोगों के साथ-साथ, मवेशी और अन्य जानवर भी बुरी तरह प्रभावित होते है,'' वह कहते है।

द्वीप पर रहना वास्तव में असंभव हो जाता है जब नदी की बाढ़ लगभग सभी चीज़ों को जलमग्न कर रही होती है। ''पीने के पानी और धोने एवं

अन्य कार्यों के लिए स्वच्छ पानी की पूर्णतः कमी हो जाती है। स्कूल बंद हो जाते है और महिलाएं सबसे अधिक कष्ट झेलती है क्योंकि वे मुख्य देख-रेख करने वाली होती है,'' बोरदोलोई कहते है।

तो जब प्रसिद्द लेखक और प्रवर्तक संजीव सभापंडित ने उनसे इस समुदाय को एक तैरने वाला आश्रयस्थल देने के बारे में बात की जिसमें सभी अत्यावश्यक सुविधाएं शामिल हो और यह कुछ 50 लोगों का घर हो सकता हो, तो वह वास्तव में बहुत उत्साहित हुए।

सभापंडित ने उनके साथ इसके प्रारूप की जो संकल्पना साझा की थी वह स्थानीय उपलब्ध चीज़ों जैसे बांस, लकड़ी, स्टील और प्लास्टिक की मदद से एक तैरने वाला घर बनाने की थी। ''उन्होंने इसके प्रारूप की कल्पना इस प्रकार से की कि घर का प्रतिरूप एकदम लचीला था ताकि लोग आसानी से पारम्परिक बुद्धिमत्ता, स्थानीय सामग्रियों और दक्षता का उपयोग कर इसे सुधार सकें, और जब उन्होंने विस्तार में समझाया तो मैं पूरी तरह राजी था,'' वह कहते है।

जिस आश्रयस्थल के बारे में वे बात कर रहे थे उसमें लगभग 50 लोग रह सकते थे और वह स्वास्थ्यकर शौचालय, पानी के हैंडपंप और पानी के भण्डारण के लिए एक ऊपरी टैंक से सुसज्जित होगा। ''सभापंडित ने समझाया कि यद्यपि यह उत्पाद तकनीकी स्वरुप का है, फिर भी यह उपागम में पूर्णतावादी और मानवीय खासियत वाला है। परिवहन और भण्डारण में आसानी के लिए सभी घटकों को अलग किया जा सकता है, और जब जरूरत हो इसे तुरंत एकत्रित किया जा सकता है। और, यदि सही ढंग से प्रयोग और प्रबंधित किया जाए, तो इस उत्पाद की अनुमानित आयु 25 है।''

इस विचार के साथ, बोरदोलोई अपने क्लब के दो रोटेरियनों, विश्वजीत हज़ारिका एवं उत्पल कुमार हज़ारिका, के पास पहुंचे और वे तत्परता से ₹5 लाख के आसपास की लागत वाले इस तैरने वाले

'मदर शेल्टर' के अंदर एक घोटा लड़का।

मूल्यवान वस्तुएं, महत्वपूर्ण ज़मीन और अकादमिक दस्तावेजों को रखने की जगह सम्मिलित है। ''स्नानगृह और शौचालय को एक स्टील की फ्रेम और कैनवास कपड़े का इस्तेमाल करके बनाया गया है। कमोड स्टैनलेस स्टील के बने है और उठाकर ले जाने लायक है। सेप्टिक टैंक को बाढ़ के समय उपयोग करने हेतु विशेषरूप से जलस्तर से ऊपर बनाया गया है, हालाँकि अन्य समय में भी इसका उपयोग किया जा सकता है। यह सेप्टिक टैंक दोबारा उपयोग करने लायक है। धुलाई और सफाई स्प्रे नोजल के माध्यम से प्रेशर से आए पानी द्वारा होती है,'' वह समझाते है।

यह शरणस्थान एक सौर-चलित एलईडी प्रकाश प्रणाली से संपूर्ण है जिसके साथ एक बैटरी बैकअप है और यह पांच एलईडी बल्ब तक जला सकता है। इसमें, बच्चों और बड़ों के लिए पढ़ने हेतु एक टेबल भी है जो सनमाइका प्लाई बोर्ड से बनी है और एक दबने वाली स्टील फ्रेम में फिट की गई है। किताबें और अन्य अध्ययन सामग्री रखने के लिए अलमारियां भी प्रदान की गई है। इस प्रारूप में खाना पकाने का एक मजबूत प्लेटफार्म भी शामिल है।

एक 20 फीट बांस के प्लेटफार्म के शीर्ष पर एक 400 लीटर की पानी टंकी प्रदान की गई है और एक हैण्डपम्प के माध्यम से रहवासियों को पानी उपलब्ध होता है। इस पूरी तरह से पर्यावरण-अनुकूलित जुगत में, प्रवर्तक सभापंडित ने वर्षा जल संग्रहण का प्रबंधन भी किया है। नाव की प्लास्टिक की छत पर गिरने

आश्रय जो एक स्टील फ्रेम में फिट है और जिसमें बांस के प्लेटफॉर्म लगे हुए है और एक मजबूत और टिकाऊ प्लास्टिक शीट की छत बनाकर इस संरचना को पूर्ण किया गया।

आश्रयस्थल को उनकी संबंधित गुवाहाटी स्थित कंपनियों - ट्रांसवर्चुअल और इंटसिस सर्विसेज के माध्यम से प्रायोजित करने के लिए राजी हो गए।

और इसलिए परियोजना का नाम ''माँ का घर'' रखा गया और तैरने वाली नाव पर को पीवीसी या HDPE टंकियों/क्रेट्स का प्रयोग करके बनाया गया, जो एक स्टील फ्रेम में फिट है और जिसमें बांस के प्लेटफॉर्म लगे हुए है और एक मजबूत और टिकाऊ प्लास्टिक शीट की छत बनाकर इस संरचना को पूर्ण किया गया।

बोरदोलोई कहते है कि इस तरह की नाव के आकार को आठ फीट और इसके गुणज की इकाई से बढ़ाया जा सकता है और अगर जगह हो तो इसे 100-200 लोगों को आश्रय देने लायक बड़ा बनाया जा सकता है। इस प्रारूप में पानी के भंडारण, खाना,

वाले वर्षा के जल की धारा को नलिकाओं के माध्यम से भंडारण टंकी में निदेशित किया जाता है।

बोरदोलोई आगे कहते है कि इस आश्रयस्थल को इस वर्ष भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के अंतर्गत, इंस्टिट्यूट ऑफ़ एडवांस्ड स्टडीज इन साइंस एंड टेक्नोलॉजी द्वारा आयोजित राष्ट्रीय विज्ञान दिवस प्रदर्शनी में सर्वश्रेष्ठ नवाचार पुरस्कार प्रदान किया गया।

वह आगे कहते है कि वरिष्ठ पुलिस महानिदेशक (एसबी), असम, पल्लव भट्टाचार्य, ने शुरुआत से माजुली में 'माँ के घर' को प्रवर्तन में लाने के लिए संपूर्ण सहायता की।

देबा प्रसाद मिश्रा, माजुली जिले के डिप्टी कमिश्नर, पुलिस अधीक्षक और अन्य ज़िला अधिकारी एवं दिसपुर के रोटरी क्लब के रोटेरियन जून में हुए समारोह में उपस्थित हुए।

जनसमूह को संबोधित करते हुए, ट्रांसवर्चुअल के प्रबंध निदेशक, विश्वजीत हज़ारिका ने कहा, ''अगर हम में से प्रत्येक व्यक्ति समाज की कुछ ज़िम्मेदारी लेता है, तो हम राज्य की अनेक समस्याओं का समाधान कर सकते है।'' इंटसिस सर्विसेज के प्रबंध निदेशक उत्पल कुमार हज़ारिका ने कहा, ''किसी व्यक्ति के लिए बड़ी जिम्मेदारियाँ लेना हमेशा संभव नहीं होता, इसलिए टीम बनाकर सहयोग करने से चीज़ें मुमकिन हो जाती है, बशर्ते हमारे पास संवेदना और प्रतिबद्धता दोनों हो।''

IPDG सुनील सराफ कहते है, ''यह छोटा क्लब, जो हमारे मंडल का सबसे छोटा है, इस तरह की अभिनव परियोजना, जो प्रभावी ढंग से समुदाय की महत्वपूर्ण जरूरतों को पूरा करेगी, करने के लिए प्रशंसा का हक़दार है।'' 26 जून को आयोजित एक अच्छी-उपस्थिति वाली बैठक में, यह आश्रयस्थल NGO बोह्निमन माजुली कृषि समाबय समिति को आधिकारिक रूप से सौंपा गया जो नदी द्वीप के मोलापिंढा गाँव से संचालित होती है।

यह पूछे जाने पर कि क्या यह परियोजना अन्य क्लबों द्वारा बाढ़ ग्रस्त इलाकें में दोहराई जा सकती है, बोरदोलोई कहते है, ''बिल्कुल; स्थानीय सामग्री की मदद से कहीं भी इसकी रूपरेखा तैयार करके इसे बनाया जा सकता है और यह परिवहन में भी आसान है।''

यह पूछे जाने पर कि असम जैसे राज्य को इस तरह के और कितने तैरने वाले घरों की आवश्यकता है, उनका अस्पष्ट उत्तर था ''असीमित संख्या में!''

तो क्या उनके क्लब के चिन्हात्मक तैरने वाले घर का पहले से ही उपयोग किया जा रहा है? ''अभी तक नहीं, लेकिन यह जानते हुए कि यह नदी द्वीप बाढ़ के लिए किस तरह से प्रवण है, इसकी आवश्यकता किसी भी दिन पड़ सकती है,'' वह आगे कहते है। ■

माजुली जिला के डिपुटी कमिशनर देबा प्रसाद मिश्रा मदर शेल्टर' परियोजना का उद्घाटन करते हुए।

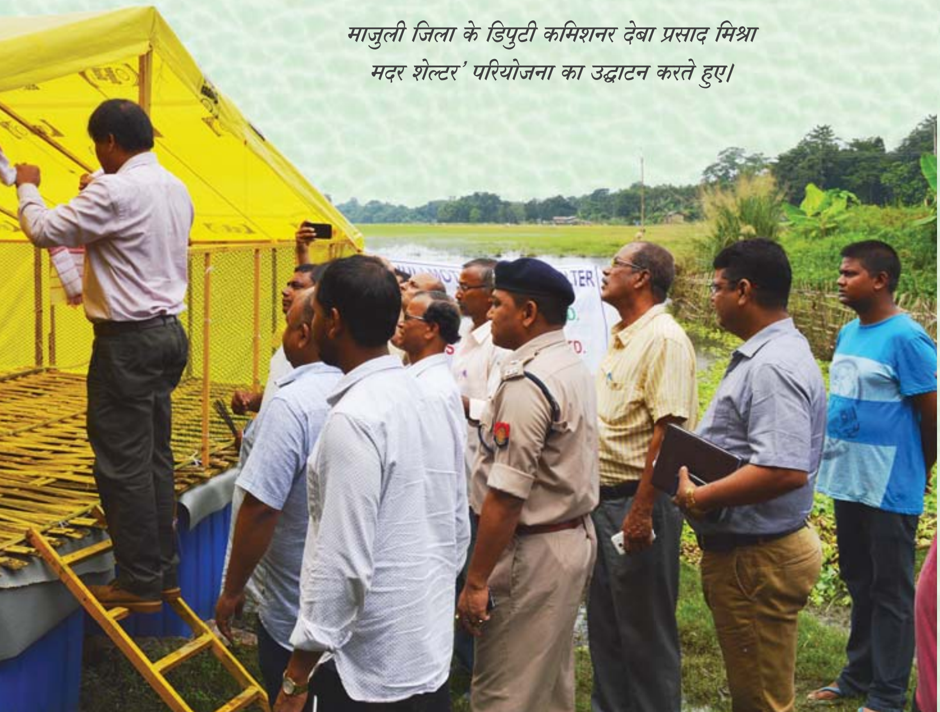

प्रत्येक रोटेरियन योगदान करें

ई के ल्यूक

वित्तीय सेवाएँ, रोटरी क्लब वैकोम मंडल 3211

वह केरल के बाढ़ प्रभावितों को राहत पहुँचाने और उनके पुनर्वास के लिए मंडल के दल के साथ समायोजन करने में व्यस्त है ''मैं बहुत खुश हूँ कि मैं ऐसे समय में रोटरी में था। बाढ़ से पीड़ित और उसमें अपना सब कुछ खो चुके लोगों की मदद कर पाना मेरा सौभाग्य है,'' ई के ल्यूक कहते है।

वर्ष 1984 से एक रोटेरियन, ''मैं तब इस धारणा में था कि रोटरी कुलीन वर्गों के लिए ही है। लेकिन धीरे-धीरे मैं रोटेरियनों द्वारा किए जाने वाले महान कार्यों को समझ गया और मैं भी उसमें शामिल हो गया।'' मलेशिया में उनके द्वारा PETS का आयोजन, मंडल का पहला विदेशी कार्यक्रम, रोटरी में उनके लिए एक यादगार पल है।

पिछले कुछ सालों में रोटरी बदल गई है, वह कहते है। पहले ध्यान केवल क्लब सेवा पर था। ''केवल अब हम सदस्यता पर ज़ोर देते है, क्योंकि सेवा केवल सदस्यों के माध्यम से की जा सकती है।'' अब मंडल सदस्यता 4,400 के आसपास है, और हम साल के अंत तक इसे 5,000 तक बढ़ाएंगे। मंडल में अब 267 महिला रोटेरियन है और ल्यूक सक्रिय रूप से पति/पत्नी की सदस्यता को बढ़ावा दे रहे है और वह पांच नए क्लब स्थापित करना चाहते है, जिनमें से चार कडूतुरुथी, मुंडाकेयम, कुमाराकोम और कुट्टानाड में होंगे जहाँ पर रोटरी अभी तक मौजूद नहीं है।

वह सदस्यों से TRF में 100 प्रतिशत योगदान प्राप्त करने के इच्छुक है। ''मैं आग्रह कर रहा हूँ कि प्रत्येक सदस्य कम से कम 10 डॉलर दे।'' पिछले साल केवल 17 प्रतिशत सदस्यों ने योगदान दिया था। लेकिन अभी, TRF और सदस्यता थोड़े पीछे हो गए है क्योंकि संपूर्ण मंडल बाढ़ राहत और पुनर्वास गतिविधियों में व्यस्त है।

वह मंडल परियोजना, *स्नेहावीड़*, को लेकर उत्साहित है, जिसका उद्देश्य संपूर्ण मंडल में 300 नए घरों का निर्माण करना और 700 अधूरे घरों की ईमारतों को पूर्ण करना है। ''क्लब इस कार्यक्रम के लिए लाभार्थियों की पहचान कर रहे है। निर्माण की लागत 30,000 से 3.5 लाख के बीच है। हम अब तक 118 घरों का निर्माण कार्य पूर्ण कर चुके है। वर्ष की शुरुआत में मेरा ध्यान *अन्नदानम* - भूखों को भोजन देने - पर था। फिर मुझे एहसास हुआ कि निवास लोगों की ज़िंदगियों पर स्थायी प्रभाव डालते है। इसलिए मैंने ध्यान बदला, लेकिन बाढ़ के साथ, मेरे सभी सपने - रोटी, कपड़ा और मकान - सच हो रहे है।''

आपके गवर्नरों से मिलें

जयश्री

एक मिल्यनेर गवर्नर

ए वी पथी

औद्योगिक उत्पाद रोटरी क्लब कोयम्बटूर वेस्ट मंडल 3201

केवल एक मिलियन' उनकी टैगलाइन है, और उनकी योजनाओं में एक मिलियन पेड़, एक मिलियन लीटर स्वच्छ पेय जल, जरूरतमंदों के लिए एक मिलियन वक्त का भोजन, एक मिलियन मुस्कुराहटें, एक मिलियन आउंस रक्त और रोटरी संस्थान के लिए एक मिलियन डॉलर शामिल है। पेथी के पास अपनी टीम के लिए अंतिम योजना तैयार है। ''इस तरह से क्लब फ़ौरन एक परियोजना शुरू कर सकते है। मैंने एक साल पहले यह गृहकार्य किया था।''

उन्होंने बहुत कम उम्र में ही रोटरी को अपने मन में बैठा लिया था क्योंकि उनके पिता रामासुब्रमण्यम रोटरी क्लब ऊटाकामुंड के एक सदस्य है। उनकी माँ विमला मणि ऊटाकामुंड के इनर व्हील क्लब की पूर्व अध्यक्ष है। वर्ष 2000 से एक रोटेरियन, ''उनकी एक एनेट के रूप में कई प्रिय यादें है, और एक रोटारेक्टर होने के नाते मैं मंडल कार्यक्रमों को आयोजित करने का प्रभारी था।''

वह तब तक एक जिंदादिल रोटेरियन थे, और मज़ेदार कार्यक्रमों, डीजे एवं दौड़ प्रतियोगिताओं जैसी नेक्स्ट-जेन गतिविधियों का आयोजन करने में अधिक लिप्त रहते थे, जब तक एक ग्रामीण क्षेत्र से एक युवा दम्पति, क्लब की *हार्ट-टू-हार्ट* परियोजना के बारे में पता चलने पर अपनी बच्ची की दिल की बीमारी का इलाज करवाने के लिए उनके पास नहीं आए थे। उन्होंने इस बात का जिक्र उनके क्लब द्वारा आयोजित किये गए एक रेडियो कार्यक्रम में किया था। ''मैं बहुत अधिक अभिभूत था कि मैंने GKNM अस्पताल में उस बच्ची के इलाज की पहल की। डॉक्टरों ने कहा कि उसकी हालत नाजुक है और वह एक हफ्ते से ज्यादा जीवित नहीं रह सकती। मैं अपने दोस्तों, रिश्तेदारों के पास गया और ₹60,000 इकठ्ठा किये। डॉक्टरों ने भी अपना कार्य किया और भगवान की कृपा से जेनिफर ठीक हो गई। आज वह 19 वर्ष की है, एकदम स्वस्थ और तनदुरुस्त।'' इस घटना ने उन्हें एक कट्टर रोटेरियन में तब्दील कर दिया।

पथी रोटारेकटरों को 'स्पेस क्लबों,' जैसा इसे उन्होंने नाम दिया है, की सदस्यता के माध्यम से पुनः रोटरी में लाने की आशा कर रहे है। ''ये क्लब रोटारेकटरों के लिए तब तक एक पुल होंगे जब तक वे अपने पैरों पर खड़े नहीं हो जाते और एक रोटेरियन होने की सभी मांगों को पूरा करने में सक्षम नहीं हो जाते। लक्ष्य उनके द्वारा आखिर में रोटरी में शामिल होने पर उस पारगमन को सरल बनाने का है।''

सदस्यता पर, वह नए क्लबों को केवल तब ही जोड़ेंगे जब सदस्य संख्या 25 से अधिक होगी और उनमें से प्रत्येक ग्रीन रोटेरियन होंगे। ''तीन नए क्लब स्थापित किये गए है और वे सफल भी है क्योंकि उनके सदस्यों के पास मूल विचार है और कोई घिसी पिटी सोच नहीं है। दूसरा, वहाँ सभी बराबर है।'' उनका दूसरा जुनून दो विशेष पार्क बनाना है, कोयम्बत्तूर और कोचिन में - विशेष बच्चों के लिे।

पथी की पत्नी वीणा इनर व्हील मंडल 320 की अध्यक्ष है।

सदस्यता बढ़ाने पर उनका ध्यान

ई के उमर, डॉक्टर रोटरी क्लब नीलाम्बुर मंडल 3202

वह अपने क्लब के चार्टर अध्यक्ष थे और मंडल की मौजूदा 5,000 रोटेरियनों की सदस्यता को 10 प्रतिशत से बढ़ाने को लेकर उत्सुक है। उमर टीआरएफ के लिए 500,000 डॉलर इकठ्ठा करने को लेकर आश्वस्त है। वह खुश है कि उनके मंडल के रोटेरियन केरल बाढ़ के समय आगे आए और प्रभावितों के लिए लगभग ₹3 करोड़ की कीमत की राहत सामग्री इकट्ठी की, यद्यपि मंडल की अधिकतर जगह बाढ़ से प्रभावित थी।

वह निलाम्बूर के बोलने और सुनने में अक्षम बच्चों के एक स्कूल के अध्यक्ष है और एक शुरुआती जांच केंद्र स्थापित करने को लेकर उत्सुक है ताकि शुरुआती स्तर पर ही विकृतियों को सुधारा जा सके। ''एक डॉक्टर होने के नाते, मुझे हमेशा लगता था कि लोगों को अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखना चाहिए और जब भी आवश्यकता हो जरूरी सावधानियां बरतनी चाहिए। बच्चे अतिसंवेदनशील होते है और उनकी अत्यधिक देखभाल की जानी चाहिए और उन्हें त्वरित उपचार दिया जाना चाहिए,'' वह कहते है।

उम्मेर भारतीय चिकित्सा संघ के राज्य अध्यक्ष है। उनकी पत्नी कमारुन्निसा एक प्रमुख दानकर्ता है और उसी क्लब की एक सदस्य है।

स्वास्थ्य सेवा उनकी प्राथमिकता

विनय भाटिया, चार्टर्ड अकाउंटेंट रोटरी क्लब फरीदाबाद एनआईटी, मंडल 3011

1993 से एक रोटारेक्टर से रोटेरियन बने विनय भाटिया ''अद्भुत RYLA की सराहना करते है जिसमें उन्होंने डलहौज़ी में एक रोटारेक्टर के रूप में भाग लिया था। वह एक मित्रता विनिमय कार्यक्रम हेतु किये गए ब्राज़ील के दौरे को भी मन में संजोए रखते है। ''मेजबान रोटेरियनों ने जो गर्मजोशी और प्रेम दिखाया उसने मुझे विस्मित किया और उसके बाद मैं इस तरह के चार विनिमय कार्यक्रमों का हिस्सा रहा। उनमें से प्रत्येक एक अविश्वसनीय अनुभव था,'' वह कहते है।

वह हमेशा चिकित्सीय शिविरों को आयोजित करने को लेकर उत्साहित रहे है। ''यह उन लोगों की मदद करने का एक संतोषप्रद अनुभव है जो चुपचाप विभिन्न बीमारियों से जूझते रहते है, फिर भी उनके पास उचित उपचार कराने के साधन नहीं होते है।'' क्लबफुट विकृति को संबोधित करने हेतु एक राष्ट्रीय स्तर की हेल्पलाइन स्थापित करने के लिए वह भारत सरकार और ओर्थपेडीक एसोसिएशन ऑफ़ इंडिया के साथ एक समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित करने को लेकर उत्साहित है। यह देश भर में लोगों की स्थानीय स्तर पर ऑर्थपेडिक्स की पहचान करने में मदद करेगा जो बच्चों में क्लबफुट की विकृति का उपचार करेंगे।

मंडल के लिए वैश्विक अनुदान की मदद से रोधक बांधों का निर्माण, एक डायलिसिस केंद्र की स्थापना और दो मेमोग्राफी वेन शामिल करने की उनकी योजना है।

भाटिया उनकी सदस्यता को 15 प्रतिशत से बढ़ाना चाहते है और मौजूदा दो अखिल महिला रोटरी क्लबों में एक और क्लब जोड़ना चाहते है। ''यहाँ पर महिला रोटेरियन बहुत ही उत्साही है। हमारे पास दस महिला अध्यक्ष है,'' वह कहते है।

वह TRF के लिए पर्याप्त योगदान एकत्रित करने को लेकर आश्वस्त है। हाल ही में TRF न्यासी गुलाम गुहनवटी के साथ आयोजित किया गया मिलियन डॉलर डिनर एक बड़ी सफलता थी, वह कहते है। ''इसने हमें 2.5 मिलियन डॉलर की प्रतिबद्धता दी है।''

वह क्लबों को मजबूत करना चाहते है

सी आर चंद्रबॉब, चार्टर्ड अकाउंटेंट रोटरी क्लब रानीपेट मंडल 3231

वह भी रोटेरियनों के परिवार से संबंधित है; उनके पिता 1965 में स्थापित किये गए रोटरी क्लब रानीपेट के चार्टर अध्यक्ष है; उनकी माँ इनर व्हील मंडल 323 की पूर्व अध्यक्ष है; उनकी पत्नी सुजाता, रोटरी ई-क्लब की पूर्व अध्यक्ष है; बच्चे, भाई और उनका विस्तृत परिवार भी रोटेरियन है; वहीं उनकी बहन एक इनर व्हील सदस्य है। चंद्रबॉब एक इंटरेक्टर और रोटारेक्टर रहने के बाद, 1989 में एक रोटेरियन बने।

उनका ध्यान अपने दो वर्ष पुराने मंडल के क्लबों को मजबूत करने पर है जो मंडल 3230 से विभाजित हुआ था। ''हमारे मंडल का क्षेत्र विशाल है जो वेल्लोर, कांचीपुरम, तिरुवनामलाई और तिरुवल्लूर तक फैला हुआ है। हम एक विकासशील अवस्था में है और मैं रोटेरियनों में रुचि बनाए रखना चाहता हूँ। इसलिए मैं सभी क्लबों को कुछ प्रमुख गतिविधियों में शामिल कर रहा हूँ,'' वह कहते है। सभी क्लब एक गाँव को गोद ले रहे है और उस गाँव के सर्वांगीण विकास के लिए अपनी गतिविधियों को संकेंद्रित कर रहे है।

एक कट्टर रोटेरियन, चंद्रबॉब, रोटेरियनों के परिवारों को भी सदस्य बनने के लिए प्रेरित कर रहे है। ''मेरी थीम है - परिवार के साथ रोटरी का आनंद लें। मैं विभिन्न गतिविधियों में एन और एनेट्स को शामिल कर रहा हूँ। मैंने यह प्रत्यक्ष रूप से अनुभव किया है कि एक रोटेरियन के परिवार से होना क्या होता है।''

सदस्यता पर, उनका लक्ष्य 20 प्रतिशत वृद्धि करने का है और वे जितना हो सके उतनी महिला सदस्यों को शामिल करना चाहते है। ''मेरी पत्नी सुजाता इस प्रयास में मेरी मदद कर रही है। वह महिला रोटेरियनों को विभिन्न परियोजनाओं में शामिल कर रही है और उसने 'मगलीर मत्तुम' नामक एक कार्यक्रम शुरू किया है, जिसमें मज़ेदार गतिविधियां और सेवा परियोजनाएं शामिल है।'' उन्होंने इस वर्ष रोटरी में शामिल होने वाली महिलाओं को मंडल राशी देने से मुक्त कर दिया है।

उनकी योजनाओं में 100 नए रोटारेक्ट और इंटरेक्ट क्लबों एवं RCC यों को स्थापित करना, जितना हो सके उतने हैप्पी गाँवों का निर्माण करना और मंडल में कम लागत वाले 100 आश्रयों को स्थापित करना शामिल है।

रोटरी की सार्वजनिक छवि में वृद्धि करने के लिए, वह गिनीज़ रिकॉर्ड बनाने की योजना बना रहे है जो बाल सुरक्षा, सड़क सुरक्षा और साक्षरता के पहलुओं पर ध्यान केन्द्रित कर रहे है। मंडल ने इस वर्ष पांच वैश्विक अनुदान स्वीकृत करवाए है। वह राज्य स्वास्थ्य विभाग और जर्मन रोटरी के साथ शिशु/मातृ मृत्यु दर को रोकने के लिए एक समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित करने को लेकर उत्साहित है। ''हम झकउयों को जीवन रक्षा उपकरणों से सुसज्जित करेंगे और ग्रामीण आंगनवाड़ी नर्सों को मातृ और शिशु देखभाल करने को लेकर प्रशिक्षित करेंगे,'' वह टिप्पणी करते है। टीआरएफ के लिए उनका लक्ष्य 1 मिलियन डॉलर का है।

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

FIND A CLUB

ANYWHERE IN THE WORLD!

Get Rotary's free Club Locator app and find a meeting wherever you go!

www.rotary.org/clublocator

RI Exchange Rate - Oct 2018

$1 = ₹72

Rotary

Rotary at a glance

Rotarians	: 12,12,798
Clubs	: 35,768
Districts	: 538
Rotaractors	: 1,82,666
Clubs	: 7,942
Interactors	: 5,29,552
Clubs	: 23,024
RCC members	: 2,29,057
RCC	: 9,959

Membership Summary

As on September 1, 2018

RI District	Rotary Clubs	No of Rotarians	Women Rotarians	Rotaract Clubs	Interact Clubs	RCC
2981	113	4,702	220	24	231	172
2982	69	3,088	151	62	112	46
3000	128	5,166	453	191	671	195
3011	81	3,477	741	44	111	25
3012	86	3,581	752	35	130	56
3020	78	4,013	230	27	466	351
3030	90	4,836	583	55	307	164
3040	96	2,138	234	26	124	140
3053	71	3,087	551	8	56	95
3054	129	5,993	994	52	319	470
3060	101	4,261	520	58	123	138
3070	103	3,050	318	37	158	57
3080	78	3,276	232	54	216	108
3090	76	1,993	52	21	37	122
3100	74	1,771	94	1	73	146
3110	115	3,897	326	18	49	104
3120	75	3,239	394	9	61	52
3131	129	5,379	1,186	72	285	90
3132	97	3,685	358	37	212	150
3141	90	5,320	1,212	100	255	83
3142	94	3,397	608	65	202	65
3150	98	3,563	341	49	235	109
3160	71	2,430	126	16	48	81
3170	125	5,523	542	40	310	161
3181	73	3,256	275	22	181	108
3182	83	3,170	229	15	275	95
3190	131	4,994	635	104	359	51
3201	141	5,295	331	83	133	49
3202	129	4,873	237	57	436	46
3211	139	4,450	275	4	89	124
3212	98	4,087	377	60	280	142
3231	78	3,181	251	17	203	239
3232	111	4,607	698	104	325	80
3240	88	3,018	344	31	151	154
3250	99	3,910	681	42	209	183
3261	71	2,591	342	2	102	43
3262	90	3,433	424	35	73	75
3291	146	3,719	695	81	133	598
India Total	**3,744**	**1,45,449**	**17,012**	**1,758**	**7,740**	**5,167**
3220	66	1,864	251	71	201	76
3271	82	1,490	267	40	16	13
3272	162	2,897	409	38	37	38
3281	206	5,642	815	122	93	188
3282	143	4,079	445	85	48	41
3292	119	4,540	677	119	119	109
S Asia Total	**4,522**	**1,65,961**	**19,876**	**2,233**	**8,254**	**5,632**

Source: RI South Asia Office

कथक

संस्कृतियों का एक संगम

सीता रत्नाकर

मुझे स्पष्ट रूप से याद है जब मैं बहुत छोटी थी, तब प्रसिद्ध कथक नर्तक और नृत्य-निर्देशक, गोपी कृष्ण हमारे घर आए थे और हमने फिल्म *झनक झनक पायल बाजे* देखी थी जिसमें उनके द्वारा अद्भुत कथक नृत्य निर्देशित एवं प्रस्तुत किया गया था। कथक की एक अधिक स्पष्ट स्मृति शानदार फिल्म *मुग़ल-ए-आज़म* के नृत्यों से है जो 1960 में रिलीज़ हुई थी। भव्य परिधान, उन्मुक्त भाव प्रदर्शन, नयनों एवं भौहों की हरकतें और आकर्षक घिरनियों ने मेरे मन पर एक अमिट छाप छोड़ी। मेरी समझ और श्रृद्धा तब कई गुना बढ़ गई जब मुझे पंडित बिरजू महाराज, कुमुदिनी लखिया, उमा शर्मा, रानी कर्ना, शोवना नारायण, स्वर्गीय पंडित दुर्गालाल जैसे और भी कई महान नर्तकों की प्रस्तुतियां देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। कथक नृत्य की आतंरिक सुन्दरता ताजमहल की अलौकिक सुन्दरता के समान थी। अतिप्रवीण बारीकियों और नृत्य के मजबूत लयबद्ध पग कार्यों का संगम उतना ही असाधारण था जितना कि ठोस संगमरमर से बने मेहराबों और जालियों में पेचीदा रूप से की गई नक्काशी। इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि शाह असद रिज़वी ने कथक के बारे में ऐसा कहा था: ''एक जादुई कथा के वर्णन के रूप में नृत्य: जिसका जिक्र लबों पर होता है, जो कल्पनाओं को प्रकाशित करता है और आत्माओं की सबसे पवित्र गहराई का आलिंगन करता है।''

भारत की प्रत्येक शास्त्रीय नृत्य शैली की अपनी विशिष्ट पहचान है। कथक शब्द संस्कृत शब्द कथा जिसका अर्थ है कहानी, और कथाकार जिसका अर्थ है वह व्यक्ति जो कहानी सुनाता है, से लिया गया है। घुम्मकड़ कवि, कथाकार, महान महाकाव्यों और प्राचीन पौराणिक कथाओं की कहानियों को नृत्य, गीत और संगीत के माध्यम से प्रारंभिक ग्रीक रंगमंच के समान ही कहते थे। कथक नृत्य भक्ति आन्दोलन के दौरान भगवान कृष्ण का गुणगान करने के साथ एक प्रदर्शन कला के रूप में शुरू हुआ और मौखिक परंपरा के रूप में इसका अस्तित्व बना रहा। 16वीं और 17वीं शताब्दी के दौरान मुग़ल दरबारों में स्वीकार्यता प्राप्त करने के लिए यह धीरे-धीरे परिवर्तित एवं रूपांतरित हुआ। मौजूदा रंगपटल में फ़ारसी और मध्य एशियाई विषय वस्तुओं को सम्मिलित करके यह कलात्मक ढंग से विकसित हुआ। भारत के अधिकांश नृत्यों की तरह, औपनिवेशिक काल में कथक की भी अवनति हुई लेकिन स्वतंत्रता के बाद हिन्दू और मुस्लिम संस्कृतियों के अनुपम मिश्रण के साथ इसका पुनरुत्थान हुआ जिसे पूरे भारत में पसंद किया गया।

पग कार्य का एक विशेष पहलू है टकने में बंधी पाजेब के प्रत्येक *घुंघरू* को चतुराई से तबले की ताल पर उचित रूप से समक्रमिक होकर झनकाना।

शोधकर्ताओं की राय के अनुसार कथक का जन्म बनारस में हुआ और फिर यह लखनऊ, जयपुर और उत्तर भारत के अन्य हिस्सों में स्थानांतरित हुआ। बनारस घराना, जिसे सबसे प्राचीन माना जाता है, जानकी प्रसाद द्वारा शुरू किया गया था जो नर्तकों के एक प्रतिष्ठित परिवार से थे और उन्हें बोल या कथक नृत्य के स्मारक अक्षरों का आविष्कार करने का श्रेय दिया जाता है। लखनऊ परंपरा की शैली का संबंध अलाहबाद के हांडिया गाँव के इश्वरी नामक एक उपासक से है जिसने अपने स्वप्न में भगवान कृष्ण को देखा था और भगवान ने उससे नृत्य को आराधना के एक रूप में विकसित करने के लिए कहा था। ईश्वरी ने अपने वंशजों को सिखाया, जिन्होंने बाद में छह पीढ़ियों को मौखिक परंपरा के माध्यम से नृत्य सिखाना जारी रखा। बिंदादीन महाराज और उनके भाई कालिका प्रसाद ने कथक नृत्य का पुनरुत्थान किया और इसे एक अत्यधिक शोभनीय स्तर तक पहुँचाया। जयपुर घराने की उत्पत्ति का पता भानुजी से चलता है, जो एक प्रसिद्ध शिव *ताण्डव* नर्तक थे, जो अपनी वृन्दावन यात्रा के दौरान श्रीकृष्ण से प्रभावित हुए थे। वह अपने पोतों लालूजी और कालूजी के साथ जयपुर लौटे और नृत्य सिखाना शुरू किया। विषय मुख्य रूप से भगवत पुराणों की

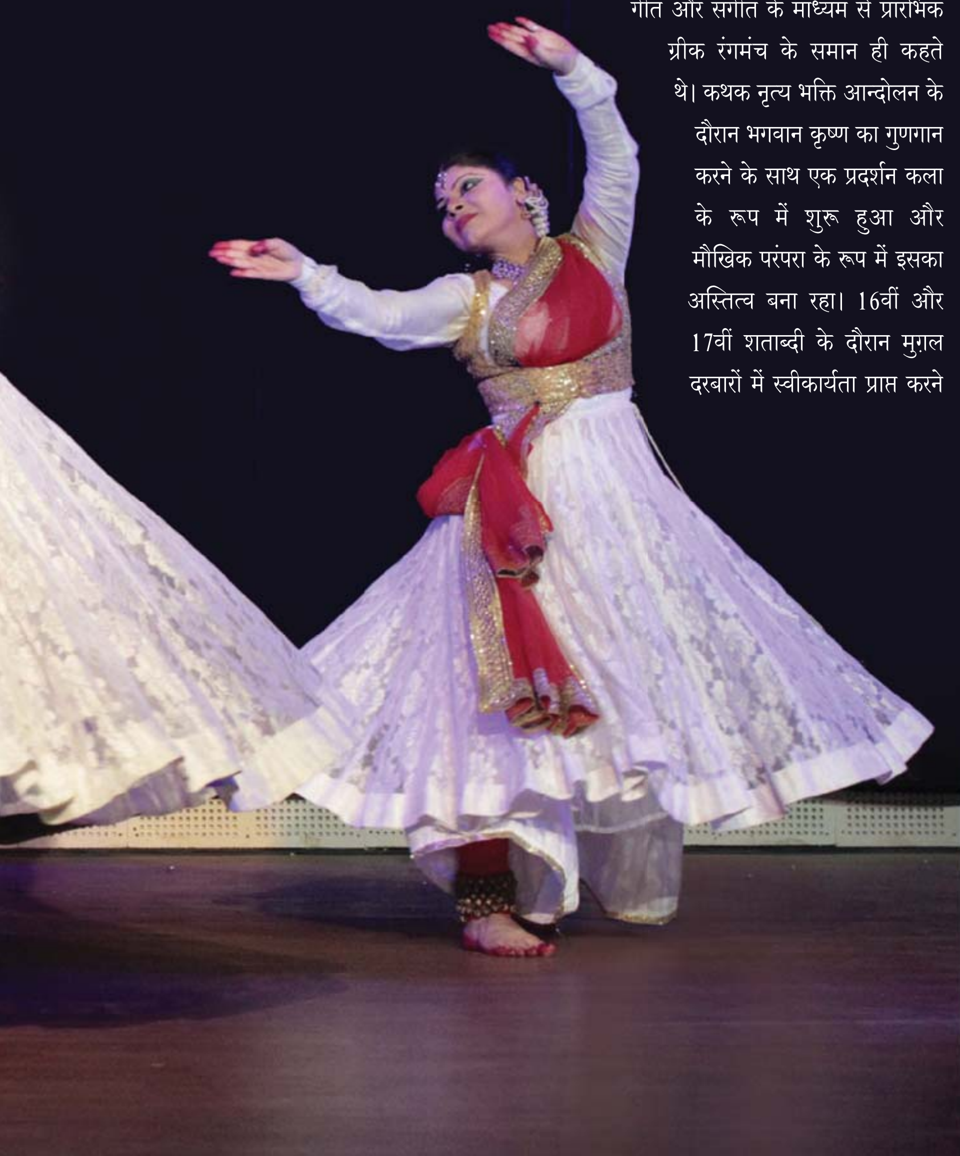

अतिप्रवीण बारीकियों और नृत्य के मजबूत लयबद्ध पग कार्यों का संगम उतना ही असाधारण था जितना कि ठोस संगमरमर से बने मेहराबों और जालियों में पेचीदा रूप से की गई नक्काशी।

दंतकथाओं पर आधारित थे जो भगवान कृष्ण, उनकी प्रेयसी राधा और गोपियों का गुणगान करते थे। राधा और कृष्ण के मध्य के *प्रेम* का वर्णन आत्मा और *परमात्मा* के मध्य प्रेम का प्रतीक था।

मुग़ल युग के दौरान, कथक सामंतों के लिए गणिकाओं द्वारा किया जाने वाला मनोरंजन का साधन अधिक बन गया और धार्मिक विषय अधिक आकर्षक नृत्यों द्वारा प्रतिस्थापित हो गए। पेचीदा पग कार्य पैटर्न, जिसे *तत्कार* और *तुकदा* कहा जाता है, के साथ की गई विस्तृत शुद्ध नृत्य रचनाओं को अधिक महत्व दिया गया। बाद में यह विभिन्न संस्कृतियों के प्रभाव को आत्मसात करके विकसित हुआ जैसे सूफी नर्तकों की चक्करदार हरकतों और मनमोहक परिधानों, आभूषणों और यहाँ तक कि हरम नर्तकियों द्वारा पहने जाने वाले पारदर्शी नकाब से भी। लेकिन अंग्रेजी औपनिवेशिक काल में गणिकाओं को ''नाचने वाली लड़कियों'' के रूप में बहिष्कृत कर दिया गया और संरक्षण और समर्थन की कमी के कारण कथक नृत्य का पतन शुरू हुआ। चूंकि यह लांछन केवल महिला नर्तकियों पर लगाए गए थे, कथक गुरुओं ने इस परंपरा को निष्पादित करने और इसे संरक्षित करने के लिए लड़कों को नृत्य सिखाना जारी रखा। औपनिवेशिक युग के बाद एक सांस्कृतिक रूप से समृद्ध नृत्य शैली का बढ़िया ढंग से उत्थान हुआ जिसने संपूर्ण भारत में प्रसिद्धि हासिल की।

एक आधुनिक प्रस्तुति में मुख्य रूप से तीन खण्ड होते है जो लाइव ऑर्केस्ट्रा के साथ प्रदर्शित की जाती है। यह भगवान, गुरु और संगीतकारों के अभिवादन या *वंदना* के साथ शुरू होता है। इसके बाद शुद्ध नृत्य प्रस्तुति दी जाती है जिसमें नर्तक अपनी गति, सूक्ष्मता और कला-कौशल के माध्यम से अपनी दक्षता प्रदर्शित करता है। यह एक *थाट से* शुरू होता है जो आँखों और हाथों की धीमी-धीमी आकर्षक हरकतें है और फिर अलंकृत अनुक्रम में धीरे-धीरे गति बढ़ती है जो एक स्थिर मुद्रा पर जाकर खत्म होती है। कभी-कभी नर्तक दर्शकों से एक *पढंत* के माध्यम से बातचीत करते है जो इसे *तत्कार* या पग कार्य के साथ प्रदर्शित करने के पहले किये जाने वाला नृत्य शब्दांश का एक लयबद्ध उच्चारण है। पग कार्य का एक विशेष पहलू है टकने में बंधी पाजेब के प्रत्येक *घुंघरू* को चतुराई से तबले की ताल पर उचित रूप से समक्रमिक होकर झनकाना। सूक्ष्मता से वृहत स्तर तक आगे बढ़ते हुए, कथक प्रस्तुति की विशेषता इसके गुरुत्वाकर्षण विरोधी चक्रण है जिसे *चक्कर* कहा जाता है, जिसमें नर्तक मंच के चारों ओर चक्कर लगाता है, लयबद्ध पैटर्न में चक्कर लगाते हुए नृत्य किया जाता है और नाटकीय हाव-भाव के साथ खत्म किया जाता है। महिला नर्तकियों का परिधान चक्करों की सुन्दरता और आकर्षण को बढ़ाने के लिए विशेष रूप से डिज़ाइन किया जाता है जिसे दर्शकों की अधिकतम प्रशंसा प्राप्त होती है।

पाली चंद्रा, कथक गुरु और दुबई, स्विट्ज़रलैंड और बेंगलुरु स्थित गुरुकुल नृत्य स्कूल की निदेशक, कहती है, ''अब मैं इस शास्त्रीय नृत्य के अन्य अद्वितीय पहलुओं की खोज कर रही हूँ। हमारे दल के सदस्य अवसाद, बाल शोषण, पार्किन्सन, अल्जाइमर जैसे गंभीर विषयों पर शोध कर रहे है, ताकि नृत्य के माध्यम से इन बीमारियों द्वारा लाए जाने वाले आघात के प्रभाव को व्यक्त किया जा सके। कथक में इन विषयों को लेकर शिक्षित करने एवं जागरूकता पैदा करने की असीम क्षमता है। समय के साथ हमने काफी अंतर लाना शुरू किया और समानुभूति रखने वाले दर्शकों का निर्माण किया। और सभी महाद्वीपों में दर्शकों ने इसपर बहुत अच्छी प्रतिक्रिया दी।''

कथक केंद्र, एक प्रमुख नृत्य संस्थान जो संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली स्थित भारत की संगीत, नृत्य और नाट्य की राष्ट्रीय अकादमी, की एक इकाई है, मुख्य रूप से कथक सिखाने के लिए समर्पित है और यह हिन्दुस्तानी कंठ संगीत और वाद्ययंत्र *पखावज* के साथ पाठ्यक्रम भी प्रदान करता है। 1955 में स्थापित, पंडित शम्भू महाराज,

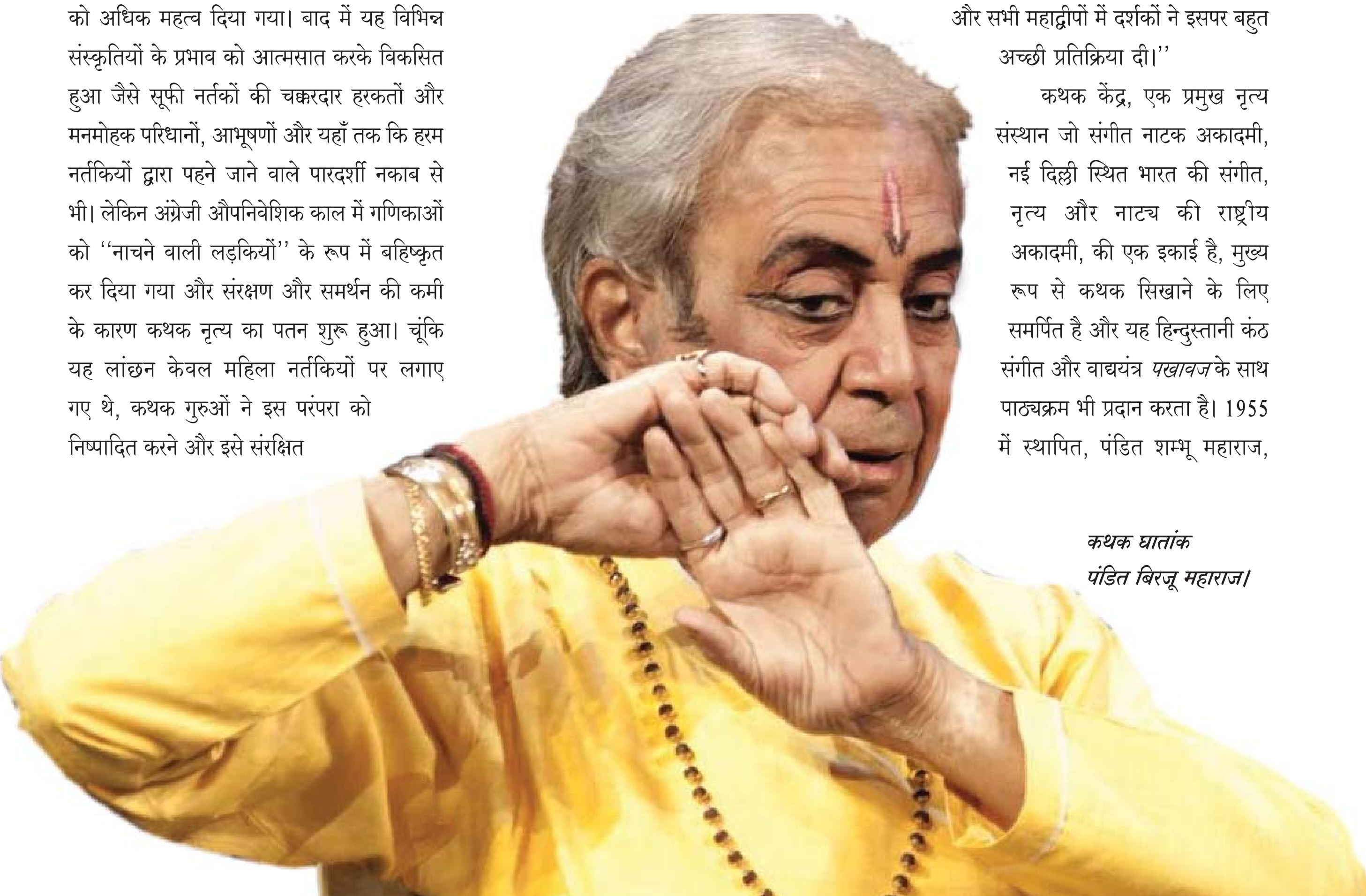

कथक घातांक पंडित बिरजू महाराज।

यह विभिन्न संस्कृतियों के प्रभाव को आत्मसात करके विकसित हुआ जैसे सूफी नर्तकों की चक्करदार हरकतों और मनमोहक परिधानों, आभूषणों और यहाँ तक कि हरम नर्तकियों द्वारा पहने जाने वाले पारदर्शी नकाब से भी।

लखनऊ घराने के प्रख्यात गुरु, इस विभाग के प्रधान हुआ करते थे। वह *भाव* (भावनात्मक हिस्सा) के प्रसिद्ध प्रतिपादक थे जिन्होंने कई शास्त्रीय *ठुमरियों* और *भजनों* का पुनः प्रचलन किया और उन्हें कथक रंगपटल में शामिल किया। उन्होंने कुमुदिनी लखिया, दमयंती जोशी, भारती गुप्ता, गोपी कृष्ण, माया राव और सितारा देवी जैसी अनेक प्रसिद्द नर्तकियों को प्रशिक्षित किया। 1970 में उनके निधन के बाद, उनके भतीजे बिरजू महाराज, एक प्रख्यात कथक नर्तक और अपनी योग्यता से बने गुरु, संकाय के प्रधान बने और 1998 तक संस्थान के निदेशक बने रहे। उन्होंने नृत्य को रूपांतरित किया, जो पहले मंदिरों के आंगन में या *महफिलों* में छोटी सभाओं के लिए किया जाता था, अब आधुनिक अग्रमंच रंगभूमि में बड़ी सभाओं को आकर्षित करने के लिए किया जाने लगा, और अनेक उल्लेखनीय नृत्यनाट्यों को निर्देशित किया। कथक, जो वास्तव में एक एकल नृत्य प्रारूप था, को पार सांस्कृतिक दर्शकों की आवश्यकताओं अनुसार विषयगत सामूहिक प्रस्तुतियों के लिए धीरे-धीरे रूपांतरित किया गया। बैले यूनिट रिपर्टरी विंग द्वारा प्रस्तुत किये गए कुछ उल्लेखनीय नृत्यनाट्य है - *ताज की कहानी* जिसका नृत्य निर्देशन कृष्ण कुमार द्वारा एवं संगीत अमजद अली द्वारा दिया गया, *शान-ए-औध, कुमार संभव* और *दलिया* जिसका नृत्य निर्देशन बिरजू महाराज द्वारा एवं संगीत डागर बंधुओं द्वारा दिया गया और पौराणिक विषय जैसे *गोवर्धन लीला, माखन चोरी* और *फाग भरा*।

बिरजू महाराज ने इस नृत्य-नाट्य को कथक केंद्र के नर्तकों के साथ मिलकर दुनियाभर में प्रस्तुत किया और इस पारंपरिक नृत्य रूप को दुनियाभर में पहचान दिलाई। इस कला के जीवित दिग्गज और एक महान उपासक कहते है, ''मैं एक ऐसा माहौल निर्मित करना चाहता हूँ जो हिंसा के इस युग में सभी संवेदनशीलताओं एवं उत्कृष्ट सुन्दरताओं को नृत्य में पुनः वापस ला सके। कला को उल्लसित और उन्नत होना होगा।'' और कथक नृत्य की अंतर्निहित सुन्दरता निरंतर ठीक ऐसा ही करती है। इस नृत्य ने परम्पराओं के साथ समझौता किए बिना बदलते समय के साथ आधुनिकीकरण करके स्वयं को रूपांतरित किया है। कवि कालिदास के क्लासिक्स, सूफी गीतों, ठुमरियों और आधुनिक लेखकों की रचनाओं को शामिल करके यह नृत्य राधा कृष्ण के विषय से परे जा चुका है। कथक नृत्य का अस्तित्व बना रहा और यह आगे भी बना रहेगा क्योंकि ''कहानियों को कहा जाना चाहिए अन्यथा वे खत्म हो जाती है, और जब वे खत्म हो जाती है, हमें याद नहीं रहता हम कौन है या हम यहाँ क्यों है,'' जैसा कि स्यू मोंक किड उचित रूप से कहती है।

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

बाल विवाह के खिलाफ

रोटरी एक युवा चैम्पियन का समर्थन कर रही है

किरण ज़ेहरा

सुनीता चोकेन, जिन्होंने गुजरात के सोमनाथ से लेकर नेपाल में काठमांडू तक 5000 कि मी की यात्रा को 40 दिनों में साइकल से पूरा किया और रास्ते भर *बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ* अभियान के लिए जागरूकता फैलाई, के बारे में बात करते हुये रोटरी क्लब रायगढ़ स्टील सिटि, मंडल 3261, के रोटेरियन ओम प्रकाश मोदी कहते है, ब्रांड एम्बेसडर हो तो ऐसा। रोटरी क्लब रेवारी मेन, मंडल 3011, की एक माननीय सदस्य, सुनीता, की यात्रा के दौरान अनेक रोटरी क्लबों द्वारा उनकी मेजबानी की गई। पिछले वर्ष कन्याकुमारी से लेह के खारदुंगला तक 4,600 कि मी की यात्रा को सफलतापूर्वक पूरा करने के बाद यह उनकी दूसरी एकल साइकल रैली थी।

सुनिता चोकन, एक पर्वतारोही और साईकल चालक।

साइकल चालक के रूप में पहचाने जाने से पहले सुनीता ने एक पर्वतारोही के रूप में शुरुआत की थी। 2011 में, 25 वर्ष की उम्र में, वह माउंट एवरेस्ट को फतेह करने वाली हरियाणा की सबसे युवा महिला थी। परंतु वह उनका साइकल चलाना था जिसने उन्हें देश भर में प्रसिद्धि दिलाई। राजस्थान के अलवर के एक गाँव किशोरपुरा में स्कूली शिक्षा ग्रहण करने के दौरान, उनके अंदर ट्रैकिंग के लिए लगाव विकसित हुआ क्योंकि ''मेरा स्कूल एक पहाड़ी पर था। बाद में वह पर्वतों को फतेह करने के एक जुनून के रूप में विकसित हुआ।'' दुनिया की सबसे ऊंची चोटी पर चढ़ने के उनके सपने को साकार करने के लिए, सुनीता के पिता, एक बीएसएफ़ इंस्पेक्टर, ने एक ऋण भी लिया ताकि विशाल खर्चों को पूरा किया जा सके।

वह गुज्जर समुदाय, एक पशुधन कृषि जातीय समूह, से संबंधित है ''जिसमें अभी भी शिक्षा की दर बहुत कम है। मेरे समुदाय में बाल विवाह एक बहुत बड़ी चुनौती है। इसलिए, मैंने इस विषय को संबोधित करने का निश्चय किया,'' वह कहती है। एक स्कूली छात्रा के रूप में उनके द्वारा देखे गए बाल विवाहों में से एक था उनकी पड़ोसन, एक दो माह की बच्ची, का विवाह! ''उसे एक सजी हुई थाली में रखकर अग्नि कुंड के चारो ओर ले जाया गया और एक शिशु बालक से उसकी शादी करा दी गई। वह परेशान कर देने वाली घटना अभी तक मेरे जहन में ताजा है।''

2016 में नारी शक्ति पुरस्कार की प्राप्तकर्ता, वह याद करती है कि कैसे बहुत बार उन्हें अपने ही समुदाय और रिश्तेदारों के खिलाफ खड़ा होना पड़ा। उन्होंने ऐसे बाल विवाहों को रोकने के लिए पुलिस की मदद नहीं ली क्योंकि वह नही चाहती थी कि समुदाय ''मुझे या मेरे परिवार को शादियों में आमंत्रित करना बंद कर दें और इनसे बाते गुप्त रखने लगे। इसलिए, मैंने प्राथमिक स्कूलों का दौरा करना एवं अभिभावकों से मिलना शुरू किया। मैं उनसे इस बारे में बात करती थी कि यदि लड़कियों को शिक्षित किया जाए तो वे क्या कुछ हासिल कर सकती है। मैं उन्हें मेरा स्वयं का उदाहरण देती थी।''

इस रैली के माध्यम से वह लड़कियों तक एक संदेश पहुँचाना चाहती है, कि ''तुम्हें सपने देखने की हिम्मत करनी चाहिए और तुम्हारे अंदर उन सपनों को साकार करने का साहस होना चाहिए क्योंकि तुम में से हर एक में वह क्षमता है।''

रोटरी में प्रवेश

माउंट एवरेस्ट की सफलतापूर्वक चढ़ाई करने के बाद, उन्हें रोटरी क्लब रेवारी मेन द्वारा उनके क्लब की एक बैठक को संबोधित करने के लिए आमंत्रित किया गया, ''और मेरी दूसरी साइकिल रैली के एक माह पूर्व ही मुझे एक माननीय सदस्य के रूप में

रोटरी क्लब रायगढ़ स्टील सिटी के सदस्यों के साथ सुनिता चोकन। नीचे : नेपाल में पशुपतिनाथ मंदिर में सुनिता चोकन।

रोटरी में शामिल किया गया।'' उनकी पहली रैली 'हरित भारत' अभियान के लिए थी जिस दौरान उन्होंने विभिन्न शहरों में 200 पौधे लगाए थे। इस यात्रा ने उन्हें कन्याकुमारी से खारदुंगला तक अकेले साइकल चलाने वाली पहली भारतीय महिला भी बना दिया था।

''उस समय, मुझे रोटरी के बारे में कुछ भी नहीं पता था,'' वह कहती है। परंतु धर्मपुरी और दक्षिण भारत के पेरुंगुड़ी के तीन रोटरी क्लब उनकी रैली के बारे में सुनकर उनकी मदद के लिए आगे आए। ''रोटेरियन स्नेही एवं नम्र थे और उन्होंने मेरे अभियान का समर्थन किया। यह बात मेरे दिल को छू गई। मैं उन्हें नहीं जानती थी पर वे मुझे ढूंढते हुये आए और उन्होंने मेरी मदद करने की पेशकश की।'' जब रोटरी क्लब रेवारी मेन ने दूसरी रैली को हरी झंडी दिखाई, ''मुझे नहीं पता था कि मेरी इस प्रकार देखभाल की जाएगी। मेरा इस प्रकार ध्यान रखा गया जैसे मैं उनकी अपनी बच्ची थी।''

वह बात जो रोटरी को उनके लिए और भी अधिक विशिष्ट बनाती है ''वह यह है कि कभी-कभी मेरे अल्प विराम से 20 कि मी पूर्व ही रोटेरियन खड़े होकर मेरा स्वागत करते थे। उनके घरों पर मेरा आतिथ्य किया गया और मुझे घर का बना ताजा भोजन खिलाया गया। मेरे कपड़े धोकर रात भर में सुखा दिये गए, मुझसे पूछे बिना ही मेरी साइकल की सर्विस कराकर उसे धोकर साफ भी कर दिया गया। यह कल्पनातीत था क्योंकि वे मुझसे पहली बार ही मिले थे।'' उनके दिल को छू लेने वाली सबसे रोचक परियोजनाओं में से एक है 2001 भूकंप के बाद गुजरात में रोटरी द्वारा बड़े पैमाने पर किया गया पुनर्वास कार्य। ''मैंने रोटरी गाँवों का एवं भूकंप के बाद बनाए गए स्कूलों का दौरा किया और रोटेरियनों ने एक अद्भुत कार्य किया है।''

उनके मार्ग को, मेजबानी करने वाले रोटरी क्लब की स्थिति के अनुसार थोड़ा बदला गया था। इस बार उन्होंने पूरी यात्रा में रोटेरियनों के साथ मिलकर लगभग 7,000 पौधे लगाए। ''रोटरी की ताकत ने मेरी इस रैली को सफलतापूर्वक पूरा करने में मेरी मदद की। मैं बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ और हरित भारत दोनों को प्रोत्साहित कर सकी। कई क्लबों द्वारा उनकी मेजबानी की गई और इस यात्रा के बाद, मुझे एहसास हुआ कि भारत अनेकता में एकता का एक भंडार है, और रोटरी, उसकी समग्र विविधता के साथ भी, एक है और एक जैसी है, चाहे वह भारत में हो, नेपाल में हो या और कहीं भी हो।'' ■

Rotary
PEOPLE OF ACTION

एक पार्क जहाँ आप स्पर्श, महसूस और सीख सकते हैं

जयश्री

केरल के पहाड़ी गांव मंकदा में स्थित यह पार्क सामान्य पार्कों से बिल्कुल हटकर है। वास्तव में, इसमें खेलने के लिए सभी साधन उपलब्ध हैं, लेकिन इसके साथ ही पार्क की दीवारें गिनतारा उपकरण से सुसज्जित है, और चहारदीवारी पर ज्यामितीय आकारों, गणितीय परिकलनों और समीकरणों, और मल्लपुरम के स्थानीय क्षेत्र के नक्शे, और भारत और संपूर्ण विश्व के मानचित्र को ब्रेललिपि में उत्कीर्ण किया गया है। यह एक 'स्पर्श करने योग्य अध्यापन पार्क' है जिसका निर्माण विशेष रूप से मंजरी के रोटरी क्लब, मंडल 3202 के रोटेरियन द्वारा दृष्टिहीन बच्चों के लिए किया गया है।

निःशक्त बच्चों को सामान्य बच्चों से अलग क्यों होना चाहिए और क्यों एक दृष्टिहीन बच्चा झूला झूलते समय खुली हवा का आनंद नहीं उठा सकता है और अपने चेहरे पर हवा की ताजगी को महसूस नहीं कर सकता है, इसके साथ ही वह गणित, भूगोल और अन्य विषयों को क्यों नहीं सीख सकता है, विशेष पार्क की विशेषताओं पर चर्चा करते हुए क्लब के अध्यक्ष डॉ एम जे सुजीत पूछते है।

पार्क के निर्माण की प्रक्रिया तब शुरू हुई जब रोटेरियन ने शहर भर में दृष्टिहीन स्कूलों के शिक्षकों के साथ शिक्षण की विभिन्न विधियों पर विचार मंथन किया। यह विद्यालय चंद्रशेखर नायर, एक सेवानिवृत्त सैनिक की पहल थी जिन्हें शेल विस्फोट के कारण अपनी नेत्र ज्योति को गंवाना पड़ा। उन्हें अपना जीवन व्यतीत करने में सक्षम बनाने के लिए सेना द्वारा विशेष प्रशिक्षण दिया गया था। अपने गृह नगर लौटने पर, नायर ने इस स्कूल की स्थापना की, जिसमें अब 83 दृष्टिहीन-विकलांग छात्र अध्ययनरत्त हैं। ''वह हमेशा

रोटरी क्लब मंजरी के अध्यक्ष डॉ एम जे सुजीत (दाएँ) और स्कूल के छात्रों की उपस्थिति में IPDG पी एम शिवशंकरन ने स्पर्श अध्यापन पार्क का उद्घाटन करते हुए।

दृश्य-चुनौतीपूर्ण बच्चों स्पर्श अध्यापन पार्क में।

नए विचारों और उपकरणों की खोज में लगे रहते है जो दृष्टिहीन बच्चों के लिए सीखना की प्रक्रिया को आसान और उद्देश्यपूर्ण बना सके। जब हमने एक विशेष पार्क के बारे में बताया जिसमें सीखने के लिए एक खेल-विधि शामिल है, तो नायर पूरी तरह से सहमत हुए और पार्क पर कार्य के दौरान हमें अनेक विचार दिए,'' सुजीत जी कहते हैं।

यह पार्क जिसका डिजाईन, एक नई पीढी के आर्किटेक्ट अब्दुल्ला द्वारा किया गया है, एक सुव्यवस्थित, खुला स्थान है, जो बच्चों के लिए आराम से घूमने के लिए पर्याप्त है, फर्श की बनावट विशिष्ट है ताकि वे अपने पैरों के नीचे विभिन्न आकारों, रेत और कंकड को 'महसूस' कर सकें। क्लब के अध्यक्ष कहते है, ''संपूर्ण विचार एकदम अद्वितीय और सुरुचिपूर्ण था जिसने क्लब के सभी सदस्यों को किसी न किसी तरह से अपनी ओर आकर्षित किया। पार्क के निर्माण के दौरान सदस्यों ने अपना -अपना विचार प्रस्तुत किया और हमने उनमें से कुछ पर फिर से काम किया। हमारा उद्देश्य इन बच्चों को सर्वश्रेष्ठ देना था और उन्हें अपने बाकी इंद्रियों की मदद से संसार को अनुभव करने में मदद करना था।'' एम एस सेशन की अध्यक्षता में एक विशेष समिति ने पार्क के निर्माण और विचारों के निष्पादन की निगरानी की। इस पार्क की कुल लागत, ₹4.5 लाख थी, जिसे सदस्यों के योगदान और कुछ उदार परोपकारी लोगों के सहयोग द्वारा पूरा किया गया।

स्कूल के प्राचार्य याशिर, जो इस अवधारणा पार्क को लेकर उत्साहित है, अपना विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं कि इसने शिक्षकों को और अधिक लाभान्वित किया है क्योंकि पार्क के दौरे के बाद कक्षाएं अधिक जीवंत बन जाती हैं। बच्चें अवधारणाओं को अधिक बेहतर ढंग से समझते हैं, मॉडल को स्पर्श करते और महसूस करते हैं, और बाद में कक्षाओं में सीखी गई बातों पर चर्चा करते हैं।

दृष्टि की कमी इन बच्चों को बडे.सपने देखने से नहीं रोक सकती है। उदाहरण के लिए इस स्कूल में 9 वीं कक्षा में पढ़ने वाला हारून करीम आंशिक रूप से दृष्टि हीन है लेकिन वह कंप्यूटर इंजीनियर बनने का सपना देखता हैं। परियोजना के संपर्क अधिकारी से भारत दास कहते हैं, ''आपने उसकी उंगलियों को कीबोर्ड पर चतुरता से चलते हुए देखा होगा। उसका अपना यूट्यूब चैनल है। उसके समान, इन बच्चों में से प्रत्येक बच्चा विशिष्ट है और हमें खुशी हैं कि रोटरी ने उनके ज्ञान को समृद्ध करने के लिए अपने स्वयं के साधन से हमें कुछ करने में सक्षम बनाया है।''

तत्कालीन डीजी एम डी शिवशंकरन ने पार्क का उद्घाटन जून में किया। यह स्कूल इस क्षेत्र में इतना लोकप्रिय हो गया है कि क्लब द्वारा अन्य क्षेत्रों में इसे स्थापित करने के लिए पूछताछ की बाढ आ गई है। दास जी कहते हैं कि केरल राजकीय शिक्षा और अनुसंधान परिषद ने इसे एक अभिनव परियोजना के रूप में स्वीकार किया है, जबकि शिक्षा और प्रशिक्षण निदेशालय इसे तीन सर्वश्रेष्ठ अभिनव प्रशिक्षण पद्धति में से एक के रूप में स्थान दिया है।

क्लब ने टीआरएफ और रोटरी क्लब ऑरलैंडो, कनाडा द्वारा समतुल्य अनुदान के सहयोग से पहले इलेक्ट्रिकल वायरिंग, पेयजल सुविधा और विशेष रूप से आईआईटी, चेन्नई द्वारा डिजाइन किया गया कंप्यूटर और स्कूल के लिए एक ऑडियो पुस्तकालय उपलब्ध कराया है। क्लब द्वारा स्कूल के लिए दो और परियोजनाएं - पहला, एक स्विमिंग पूल और दूसरा बच्चों के लिए किंडल टैब - के लिए योजना तैयार की रही है। ■

काकीनाडा में रोटारेक्टर रोटरी नेता बनें

वी मुथुकुमारण

लोकप्रिय मानसिकता के विपरीत, रोटरी क्लब काकीनाडा, मंडल 3020 में रोटारेक टर ने पहली बार रोटेरियन की भूमिका को सफलतापूर्वक निभाया, जब गत वर्ष इसके आईपीपी चोदावार्पू चोड्वारपू मूर्ति, एक भूतपूर्व डीआरआर, ने प्लैटिनम जयंती समारोह में अपनी टीम का नेतृत्व किया। पीडीजी लक्काराजू सत्यनारायण उर्फ टिक्कू, जो कि मंडलों 3020, 3150 और 3160 के लिए एआरआरएफसी भी है, अपना विचार व्यक्त करते हुए कहते है कि इसके अतिरिक्त क्लब को पिछले 75 वर्षों में कुछ उत्कृष्ट नेताओं को सृजित करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ जिसमें दो मंडलों के लिए गवर्नर और 10 से अधिक क्लबों का प्रायोजन शामिल है, और इन सभी सफलताओं में काकीनाडा में समुदाय ने बहुत योगदान दिया है। ''हमने इस ऐतिहासिक अवसर को यादगार बनाने के लिए अनेक परियोजनाओं के साथ जुलाई 2017 से रोटरैक्ट आंदोलन के स्वर्णिम जयंती के साथ-साथ अपने क्लब की प्लैटिनम जयंती मनाई।''

क्लब में छत्तीस सदस्यों ने 40 वर्षों से अधिक समय तक सेवा की है। ''उनमें से 40 ने अपने सम्मान में आयोजित एक विशेष समारोह बैठक में भाग लिया और रोटरी और इसके फैलोशिप के जादू को रेखांकित करने वाले अपने अतीत के क्षणों और अनमोल अनुभवों को साझा किया। पीडीजी रवि वाड्लमानी और उनकी पत्नी राजलक्ष्मी इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे।''

क्लब मंडल में टीआरएफ में सबसे अधिक दाने देने वालों में दूसरे स्थान पर होने के साथ, इसने आरआरएफसी अविनाश पोतदार की अध्यक्षता में फाउंडेशन सेमिनार की मेजबानी भी की। ''इस सेमिनार में भाग लेने के लिए 700 प्रतिनिधियों ने पंजीकरण कराया और इस प्रकार यह हमारे क्लब के सदस्यों के मनोबल को बढ़ावा देने में अत्यंत महत्वपूर्ण साबित हुआ।''

कुछ अन्य कार्यक्र मों में कॉलेज के छात्रों के लिए एक व्यक्तित्व विकास और करियर मार्गदर्शन

इंटरैक्टर्स एक फ्लैश मोब का प्रदर्शन करते हुए।

कार्यशाला, विश्व पोलियो दिवस का आयोजन और इंटर-क्लब टेनिस टूर्नामेंट मनाने के लिए इंटरैक्टर्स द्वारा आयोजित फ्लैश मोब शामिल था। क्लब ने रोटैक्ट की 50 वीं जयंती को यादगार बनाने के लिए आयोजित एक कार्यक्रम में भूतपूर्व डीआरआर को भी सम्मानित किया गया।

वर्ष 2014-15 में ₹2 करोड़ की लागत से स्थापित एक श्मशान क्लब की प्रमुख परियोजनाओं में से एक है। टिक्कू जी कहते है, ''यह परियोजना काकीनाडा में सभी तीन क्लबों द्वारा किए गए संयुक्त प्रयास का नतीजा था।'' क्लब द्वारा गोद लिया गया नेताजी नगरपालिका स्कूल हैप्पी स्कूल के अनेक परियोजनाओं जैसे खेल सामग्रियों; बेंच, डेस्क के दान और एक हैंडवाश स्टेशन की स्थापना से लाभान्वित हुआ है।

श्री किरण नेत्र विज्ञान संस्थान की मदद से, इस अनुसंधान संस्थान-सह-अस्पताल में नियमित रूप से नेत्र-जाँच शिविर आयोजित किया जा रहा हैं। वह कहते है, ''हम अब तक 30 से अधिक नेत्र-जाँच शिविरों और सैकडों मोतियाबिंद का ऑपरेशन कर चुके है। एक उल्लेखनीय विशेषता यह है कि इस संस्थान में स्थायी आधार पर अनेक वैश्विक अनुदान परियोजनाओं को निष्पादित किया जाता हैं जहां 80 प्रतिशत मरीजों को मुफ्त उपचार मिलता है।''

एक अद्वितीय हैट्रिक

तत्कालिक पूर्व अध्यक्ष मूर्ति के अतिरिक्त, दो और पूर्व रोटारेक्टर - वाई जगन और वी भगवान को मौजूदा वर्ष और अगले वर्ष में क्लब का नेतृत्व करने के लिए चुना गया है। क्लब इस तथ्य पर गर्व महसूस करता है कि इसके चार्टर अध्यक्ष एसआरवीके सूर्य राव बहादुर, पिथापुरम के स्वर्गीय महाराजा थे, जिन्होंने शुरूआती स्थितियों में क्लब की मजबूत नींव डाली थी। 110 रोटेरियन और 10 प्रतिशत की सदस्यता वृद्धि के लक्ष्य के साथ, क्लब टीआरएफ में प्रति वर्ष 10,000-15,000 डॉलर का योगदान देता है। ■

रोटरी ने एक विशेष स्कूल को सुधारा

टीम रोटरी न्यूज़

उडुपी में विश्वजनीना ट्रस्ट द्वारा निःशक्त बच्चों के संचालित स्कूल, सुमेधा में बुनियादी शिक्षा और आवश्यकता आधारित कौशल के लिए प्रशिक्षण प्रदान किया जाता हैं, एक सर्वेक्षण के परिणामों से स्पष्ट हुआ है कि लगभग 2,800 लोग मानसिक रूप से निःशक्त हैं और इसमें 14 वर्ष से कम आयु के 1,300 बच्चे शामिल हैं जिन्हें कौशल से संबंधित प्रशिक्षणों की जरूरत है।

इस स्कूल की स्थापना वर्ष 2007 में 100 बच्चों की जरूरतों को पूरा करने के उद्देश्य से किया गया है, परंतु पर्याप्त संसाधनों की कमी के कारण स्कूल केवल 50 छात्रों को ही समायोजित कर सका है। अधिक छात्रों को प्रवेश देने के लिए ग्रामीणों के असंख्य अनुरोधों के साथ, ट्रस्टी ने परिवहन, शिक्षण सहायता, फर्नीचर, फिजियो केयर उपकरण और कंप्यूटर जैसी सुविधाएं प्रदान करने के लिए उडुपी, मंडल 3182 के रोटरी क्लब से संपर्क किया ताकि अधिक से अधिक छात्रों को लाभ प्रदान करने के लिए परिचालानात्मक वातावरण को बेहतर बनाया जा सके।

डीजी अभिनंद शेट्टी बस की चाबियाँ विश्वप्रसन्ना तीर्थ स्वामीजी, अध्यक्ष, विश्वजनीना ट्रस्ट को सौंपते हुए। चित्र में IPDG जी एन प्रकाश भी मौजूद हैं।

''गांव-वासी, जिनमें अधिकांश किसान हैं, उनके पास प्रशिक्षण और पुनर्वास के लिए अपने बच्चों को दूरदराज के स्थानों पर भेजने के लिए पैसा नहीं है। रोटरी क्लब उडुपी और परियोजना समन्वयक के आईपीपी रामचंद्र उपाध्याय ने कहा,'' वे अपने बच्चों के भविष्य संवारने के लिए इस स्कूल पर निर्भर हैं।

क्लब, रोटरी क्लब सेंट्रल चेस्टर काउंटी, मंडल 7450, के सहयोग और टीआरएफ के वैश्विक अनुदान के अधीन, कुल ₹30 लाख की लागत से स्कूल को दो बस, फर्नीचर, फिजियोथेरेपी, व्यावसायिक चिकित्सा और फिटनेस उपकरण, एक ऑडियो-विजुअल उपकरण तथा कार्यालय और बच्चों के लिए कंप्यूटर उपलब्ध कराया।

डीजी अभिनंदन शेट्टी और वसंत प्रभु, जो एक फॉरेन क्लब के सदस्य हैं और उडुपी के रहने वाले है, ने डीआरएफसी सदानंद चत्राचट्रा, आईपीडीजी जी एन प्रकाश, डीजीएनडी राजाराम भट और रोटरी क्लब उडुपी के अध्यक्ष चंद्रशेखर अदीगा की उपस्थिति में ट्रस्ट के चेयरमैन विश्वप्रसाद तीर्थ स्वामीजी को सुविधाओं की कमान सौंपी। ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

मंडल गति

रोटरी क्लब चिदंबरम सेंट्रल - मंडल 2981

कोडीपाल्लम गाँव के पंचायत संघ प्राथमिक विद्यालय के बच्चों को ₹8,200 की कीमत के स्टेनलेस स्टील के नाश्ते के डिब्बे दिए गए और सरकारी नंदनार स्कूल को खेल उपकरण और टीबी के मरीजों को ₹75,000 के स्वास्थ्य परिपूरक दान किये।

रोटरी क्लब विल्लुपुरम - मंडल 2982

कोंडंगी गाँव के आग से दुर्घटनाग्रस्त हुये एक परिवार को कापियों और लेखन-सामग्री जैसी शिक्षण सामग्री के साथ बर्तन, गैस स्टोव, चटाई, चादर जैसे गृहस्थी के समान दिए गए।

रोटरी क्लब मनमाड - मंडल 3030

डीजी राजीव शर्मा ने डोंगाँव गाँव के आश्रा स्कूल, किशोर बच्चों का सुधार गृह, के 80 बच्चों को स्कूल यूनिफ़ॉर्म और जूते वितरित किये। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में रोटेरियनों ने भाग लिया।

रोटरी क्लब पेरियाकुलम - मंडल 3000

जे ए कॉलेज फॉर वीमेन में एक रक्त दान शिविर आयोजित किया गया जिसे छात्राओं की अच्छी प्रतिक्रिया मिली। एकत्रित किये गए रक्त को जरूरतमंद मरीज़ों की मदद के लिए नगर के सरकारी अस्पताल को दिया गया।

विधियाँ

रोटरी क्लब सूरत राउंडटाउन - मंडल 3060

वंचित महिलाओं के लिए इनर व्हील के सदस्यों के सहयोग से क्लब ने एक व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम पाठ्यक्रम शुरू किया। इस में भाग ले रही 32 महिलाओं को कार्यक्रम के अंत में प्रमाण पत्र दिए गए।

रोटरी क्लब गोराया - मंडल 3070

गोराया के समीप संग धेसियन गाँव के सरकारी माध्यमिक विद्यालय में एक हाथों की धुलाई की सुविधा स्थापित की गई। छात्रों ने बच्चों को हाथों को स्वच्छ और सुरक्षित कैसे रखें सिखाने के लिए एक डेमो भी आयोजित किया।

रोटरी क्लब भद्राचलम - मंडल 3150

शहर के टाटागुड़ी सेंटर स्कूल के पुस्तकालय को ₹14,000 की लागत की 500 से अधिक कंप्यूटर की किताबें दान की गई। कार्यक्रम में क्लब के अध्यक्ष एस. चैतन्य और अन्य सदस्य उपस्थित थे।

रोटरी क्लब अल्लागड्डा सताब्दी - मंडल 3160

क्लब की हैप्पी स्कूल परियोजना के हिस्से के रूप में शहर के एक सरकारी माध्यमिक स्कूल को बेंचें और डेस्क दान की गई। इस परियोजना को टीआरएफ और रोटरी क्लब साओ पाउलो पाकाम्बु, मंडल 4610 के समर्थन के साथ किया गया।

रोटरी क्लब पुत्तूर - मंडल 3181

1998 में स्थापित रोटरी कैम्प्को ब्लड बैंक को क्लब की स्वर्ण जयंती परियोजना के हिस्से के रूप में ₹85 लाख की लागत से अपग्रेड किया गया। रोटरी क्लब टांपा नून, मंडल 6890, यूएस और टीआरएफ के साथ वैश्विक अनुदान के माध्यम से एक सेल सेपरेटर स्थापित किया गया।

मंडल गति

रोटरी क्लब शिमोगा मिडटाउन - मंडल 3182

सड़क सुरक्षा एवं दुर्घटना रोकथाम और मोटर चालकों द्वारा हेलमेट/सीट बेल्ट पहनने की आवश्यकता को लेकर जागरूकता फ़ैलाने के लिए सुगूर गाँव के सरकारी माध्यमिक विद्यालय के बच्चों ने एक रैली निकाली। रैली में शामिल छात्रों ने लोगों को यातायात नियमों का पालन करने हेतु प्रेरित करने के लिए नारे लगाए।

रोटरी क्लब बैंगलोर साउथवेस्ट - मंडल 3190

25 स्कूलों के बच्चों में अपवर्तक दोष की जाँच करने के लिए नेत्र शिविरों का आयोजन किया गया। करीब 12,000 बच्चों की जाँच की गई और जिनमें भेंगापन और लेजी आई जैसे नेत्र दोष पाए गए उन्हें आगे की जाँच के लिए अस्पताल भेजा गया। शिविर में चश्में भी दिए गए।

रोटरी क्लब पेराम्बवूर सेंट्रल - मंडल 3201 (प्रेस विज्ञप्ति)

क्लब के अध्यक्ष डॉ पी प्रसन्नन द्वारा परियोजना का उद्घाटन करने के साथ ही पेराम्बवूर और कलाडी पुलिस थानों में यातायात पुलिस को बरसातियाँ दान की गई।

रोई मंडल 3211

केरल के वित्त मंत्री डॉ थॉमस इस्साक ने अलप्पुजह के लियो XIII उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में डीजी ई के ल्यूक, ज़ोनल WinS समन्वयक आर. रघुनाथ और डीजीई थॉमस ववानिकुन्नेल की उपस्थिति में एक WinS परियोजना का उद्घाटन किया। इस अवसर को चिन्हित करने के लिए मंत्री जी ने एक पोस्टर जारी किया।

रोटरी क्लब काटपदी मंडल 3231

कंगयानल्लूर गाँव की सरकारी कन्या शाला में रोटेरियनों ने विद्यार्थियों को सौर लैंप वितरित किये और साथ ही स्कूल में छात्राओं की मौखिक स्वच्छता की जाँच के लिए एक दंत शिविर भी आयोजित किया।

विधियाँ

रोटरी क्लब मद्रास चेन्नैपटना - मंडल 3232

क्लब द्वारा पोरुर पंचायत स्कूल में बनाया गया हैंडवाश स्टेशन यहाँ पढ़ने वाले 700 बच्चों को लाभार्थ करेगा।

रोटरी क्लब मालदा - मंडल 3240

कोनबारी और परबत्ता के तंबाकू विनिर्माण इकाईओं में कलाम कर रहे 300 महिलाओं को मालदा नागरिक उन्नयन समिति के सहयोग से एंटी- पोल्लुशण मास्क दिए गए।

रोटरी क्लब धनबाद सेंट्रल - मंडल 3250

प्रोजेक्ट आश्रय के तहत, क्लब ने आसपास के गाँवों के बाढ़ प्रभावित लोगों को तिरपाल, प्लास्टिक की शीट, कपड़े और खाद्य सामग्री दान की।

रोटरी क्लब जबलपुर साउथ - मंडल 3261

शहर के नजदीक पचपदी गाँव के सरकारी माध्यमिक शाला के 100 बच्चों को लेखन-सामग्री प्रदान की गई। क्लब अपनी मासिक परियोजनाओं के तहत स्कूली बच्चों को किताबें और अन्य अध्ययन सामग्री दान करता है।

रोटरी क्लब पोर्ट ब्लेयर - मंडल 3291

लक्ष्मी और सहनारा - द्वीप की पहली दो महिला ऑटो चालकों - को क्लब ने अपनी जारी आभार परियोजना, जो अकीर्तित नायकों की सराहना करती है, के तहत सम्मानित किया। क्लब के अध्यक्ष राजेश आनंद ने लाभार्थियों को सम्मानित किया।

वी मुत्तुकुमारण द्वारा संकलित
एल गुनाशेकरण द्वारा रुपांकन

तूफ़ान में भी शांत रहिये

भरत और शालन सवुर

मैं चाहता हूँ कि सभी में जबर्दस्त मात्रा में समुत्थानशक्ति हो क्योंकि यह वास्तव में एक उपयोगी एवं सुघर गुण है जो आपके मन को ढँक लेता है। यह एक तरह की निश्चित उदारता है जिसके कारण पत्नी अपने तनावग्रस्त पति से कहती है, ''हम अमीर है, प्रिय। एक दिन हमारे पास पैसा भी होगा।'' यह एक तरह की सोच है जिसे हमारी सामूहिक चेतना में धीरे-धीरे समाहित होने की आवश्यकता है - अपने आप में आश्वस्त रहे भले ही हम हमेशा ज़िंदगी को लेकर आश्वस्त ना हो। यह सशक्त करने वाली सोच है, समुत्थानशक्तिसंपन्न सोच है। सबसे अच्छे समय में यह एक शांत स्थिर प्रवाह है और सबसे बुरे समय में एक शांत सक्रिय गतिवान प्रवाह। शायद इसलिए ही इसे सबसे अच्छे तौर पर शांत स्थिरता बुलाया जाता है।

स्थिर रहो। मनोचिकित्सा किसी भी व्यक्ति जिसे नौकरी से बरखास्त कर दिया गया हो, जिसने भारी वित्तीय नुकसान झेला हो, जो पदोन्नति से दूर हो गया हो या प्रेमी द्वारा ठुकरा दिया गया हो, को पूर्ण रूप से स्थिर बने रहने की सलाह देती है। संत्रास, क्रोध, दुःख से हार मत मानिये, बस... एक बुद्ध की तरह स्थिर बने रहिये। यहीं पर समुत्थानशक्ति कार्य करती है। बाद में, आप रोकर, चिल्लाकर या तकिये को मुक्का मारकर अपने मन से दर्द के दाब को मुक्त कर सकते है, लेकिन इसी बीच स्थिरता और शांति, समुत्थानशक्ति को धीरे-धीरे आपकी आत्मा में प्रवेश करने और उसे तर करने में मदद करते है। इसलिए, आपका सत्व भावनाओं को प्रकट करने के बावजूद भी दृढ़ बना रहता है। और आप किसी भी प्रकार का लापरवाह, आत्म-घाती कदम नहीं उठाते है।

अक्सर, अपनी भावनाओं को प्रकट करने के बाद, स्वयं को दोषी ठहराने और खुद पर ही गुस्सा करने के लिए मायूसी की ओर विस्थापन होता है। लेकिन नहीं! आपको आपकी नकारात्मकता को तुरंत ही खत्म करना होगा। हम खेद करते है, हम कहते है, ''काश मैं...'' यह शब्द काश निराशा का जाल है। उनसे फुर्ती से दूर चले जाइये। जैसा कि अजहाँ ब्रह्म अंतिम रूप से कहते है, ''अतीत 'अवर्णीय' है। आप अतीत के बारे में 'अगर' नहीं कह सकते। आप नहीं जानते कि क्या हो सकता था। तो, आप कैसे कह सकते है कि आपने जो किया है या नहीं किया है वह एक गलती है?''

वर्तमान में रहना विवेकी और व्यावहारिक है और, जैसा कि मास्टर कहते है, ''परिस्थिति का नृत्य शुरू करें।'' कहिये, ''मैं अगला कदम क्या ले सकता हूँ?'' इसे धीरता से कहें और आप एक तूफ़ानी, दुर्बल करने वाले घटनाचक्र में नहीं फँसेंगे। जब आप शांत होते है, तो आप किसी भी परिस्थिति के सौन्दर्य में हो सकते है, रहस्य में, साज़िश में, 'आगे क्या?' में। जो कुछ भी हो रहा है एक प्रक्रिया है और हम उस प्रक्रिया का एक हिस्सा है - हम ठोकर खाते है, उठते है, डगमगाते है, खड़े होते है... यह तब तक होता है जब तक हम यह सीखते है कि हमें ज़िंदगी पर इतने सारे नकारात्मक लेबल लगाना बंद करना होगा और उसके साथ शांति से बहते जाना होगा। हम अपने अंदर सामंजस्य के साथ, एक शांत मन से आवश्यक कदम उठाते है।

अवसाद से स्वयं को ऊपर उठाएं। जब आसमान में उड़ते हवाईजहाज में हलचल होती है, तो पायलट कहते है, ''अपनी नाक को नीले आसमान में रखें।'' इसका मतलब है, अपनी नाक को क्षितिज से ऊपर रखें और आप दुर्घटनाग्रस्त नहीं होंगे। यह हमारे लिए भी सही है - हम अपने उत्साह को ऊँचा रखते है, हमारी दृष्टि को अवसादों से ऊपर रखते है। हमारी चिंताओं के कारण, हमारे पास पहले समय नहीं था, अब हमें उपहार दिया गया है, बहुत अधिक समय का आशीर्वाद दिया गया है - फिर से जीवंत होने, उत्साहित होने, प्रेरित होने के लिए। स्वस्थ भोजन लें और स्वस्थ बने। थोड़ा व्यायाम करें और फिट बने। महान किताबे पढ़ें, प्रेरणादायक वार्ता सुनें और आत्मविश्वास से भर जाएं। और प्रतिदिन ध्यान करें- अपने मन में शांति को समाहित करने के लिए।

स्वयं की देखभाल में एक खूबसूरत, आश्वासनपूर्ण, सुरक्षात्मक, समुत्थानशक्तिसंपन्न ऊर्जा और आभा है। यह वह धूप है जो आपके अंदर के अँधेरे को मिटाती है और आपको नहीं लगता कि यह दुनिया का अंत है। चूंकि नकारात्मकता बिकती है, आपदाएं और नृशंसताएं मुख्य समाचारों पर राज करती है। इसलिए मैं सलाह देता हूँ कि ऐसी खबरों को ना पढ़े और ना सुने। याद रखने वाला तथ्य यह है कि विश्व जनसंख्या का 95 प्रतिशत हिस्सा अभी भी अच्छे ह्दय वालों का है, यह तो वे 5 प्रतिशत लोग है जो सुर्ख़ियों में छाए रहते है। विशाल क्षेत्र के उजाले की ओर देखें ना कि एक अँधेरे कोने की ओर। एक शांत मन से, अपने वित्तीय संसाधनों और संपत्तियों का आंकलन करें। आपको कुछ बदलाव करना पड़ सकता है। मेरा यकीन मानिये, वे आपके वर्तमान को उज्ज्वल कर देंगे और भविष्य के लिए अच्छे शकुन साबित होंगे क्योंकि आप अचानक से उन संभावनाओं को अनावरित करेंगे जिनसे आप पहले से अवगत नहीं थे। सबसे अधिक महत्वपूर्णः नई ऊर्जाएँ उमड़ेंगी और छिपा हुआ परिज्ञान उभरेगा। यह समुत्थानशक्ति का चमत्कार है।

स्वयं पर पुनः जीत हासिल करें। एक ऋषि के शब्द उनकी शानदार गूंजती हुई आवाज़ में साफ़ सुनाई देते है और जब आप एक ब्रेक-अप से गुजरते है तो वे शब्द समझ में आते है: ''वह बनो जो स्वयं पर पुनः विजय प्राप्त करता है।'' शानदार! वह व्यक्ति करता क्या है? वह स्वयं को पूरी तरह नियंत्रित रखता है क्योंकि संदेह और भावनाएं आती-जाती रहती है। वह स्वयं को याद दिलाता है ''मैं किसी अन्य के होने या ना होने पर भी संपूर्ण हूँ।'' जब आप स्वयं को *नियंत्रित* करते है तो वास्तव में आप अपनी पूर्णता के आगे आत्मसमर्पण करते है। आप समझते है कि आप वास्तव में कौन है - तूफ़ानी समुन्दर में दृढ़ता के साथ खड़ी एक चट्टान। आप स्वयं को यह समझने की अनुमति देते है कि आपके अंदर का वह हिस्सा जो दर्द देता है वह है अहंकार। जब आप अपनी समझ का आंकलन करते है, तो आप पता लगा सकते है कि यह पूर्व पति/पत्नी के बिना कैसा होगा, उस परिस्थिति की आदत डाल सकते है और यहाँ तक कि आगे बढ़ने के बारे में भी विचार कर सकते है। ऐसे समय पर, कुछ ऐसे दोस्तों का साथ होना बहुत ही अच्छा होता है जो संवेदनाहीन, उदासीन या आलोचनात्मक हुए बिना आपका साथ देते है। जब वे लोग जो हमें पूरी तरह से अपनाकर उनकी उपस्थिति की निश्चल और समर्थक ऊर्जा प्रदान करते है, तो हम मजबूत बनते है और क्रोध, उदासी, अफ़सोस, बेबसी या निराशा के अधीन नहीं होते। हमारे निरंकुश विचारों पर भी अंकुश लगाना बहुत जरुरी है क्योंकि वे ही मुख्य दोषी है जो हमें निराशा और अवसाद की ओर ले जाते है। जब कोई नकारात्मक विचार उत्पन्न होता है, तो ताज्जुब के साथ उसका मुकाबला करें, ''इस अनुभव से मुझे कुछ सीखना है। मुझे क्या सीखना है?'' आप जिस चीज़ से गुजर रहे है, यह उसे अर्थ, उद्देश्य प्रदान करता है और, चूंकि यह दर्द निरर्थक नहीं होता, तो यह कम कष्ट देता है। इससे अधिक। यह एक बढ़िया उन्नति देता है और आपकी समुत्थानशक्ति को बढ़ाता है।

एक अद्भुत किस्सा इस प्रकार है: जब नदी किनारे मास्टर ध्यानमग्न थे, एक शिष्य ने उनके पैरों पर उनके सम्मान के प्रतीक के रूप में दो बड़े मोती रखे। मास्टर ने अपनी आंखें खोली और इतनी चपलता से एक मोती उठाया कि वह उनके हाथ से फिसलकर नदी में जा गिरा। भयातुर शिष्य ने नदी में डुबकी लगाई और पूरा दिन तैरकर उस मोती को ढूंढता रहा लेकिन उसे वह नहीं मिला। अंततः, भीग और थक चुके शिष्य ने मास्टर को ध्यान से जगाया और पूछा, क्या आपने देखा है कि वह कहाँ गिरा। ''मुझे वह जगह बताए ताकि मैं उसे आपके लिए वापस ला सकूं।'' मास्टर ने दूसरा मोती उठाया, उसे भी नदी में फेंका और कहा, ''वहाँ पर!'' और पुनः अपनी ध्यान की मुद्रा में चले गए।

यह एक खूबसूरत तालीम है। हम में से सभी अलग-अलग समय पर मास्टर या शिष्य होते है। मोती या लोग हमारे जीवन से बाहर निकल जाएँगे। जब हम इसे जाने देते है, तब हमें शांति मिलती है। हम सौम्य, विनम्र, सहज होकर उभरते है। जैसा प्रबुद्ध कहते है, ''तूफ़ान आपके जीवन को अस्त-व्यस्त करने के लिए नहीं आते, वे आपके रास्ते को साफ़ करने के लिए आते है।'' स्थिर रहिए और जैसे ही विपत्ति की धुंध छंटती है, आपको आपके सामने एक उज्जवल, अंतहीन, आशाप्रद रास्ता दिखाई देगा...

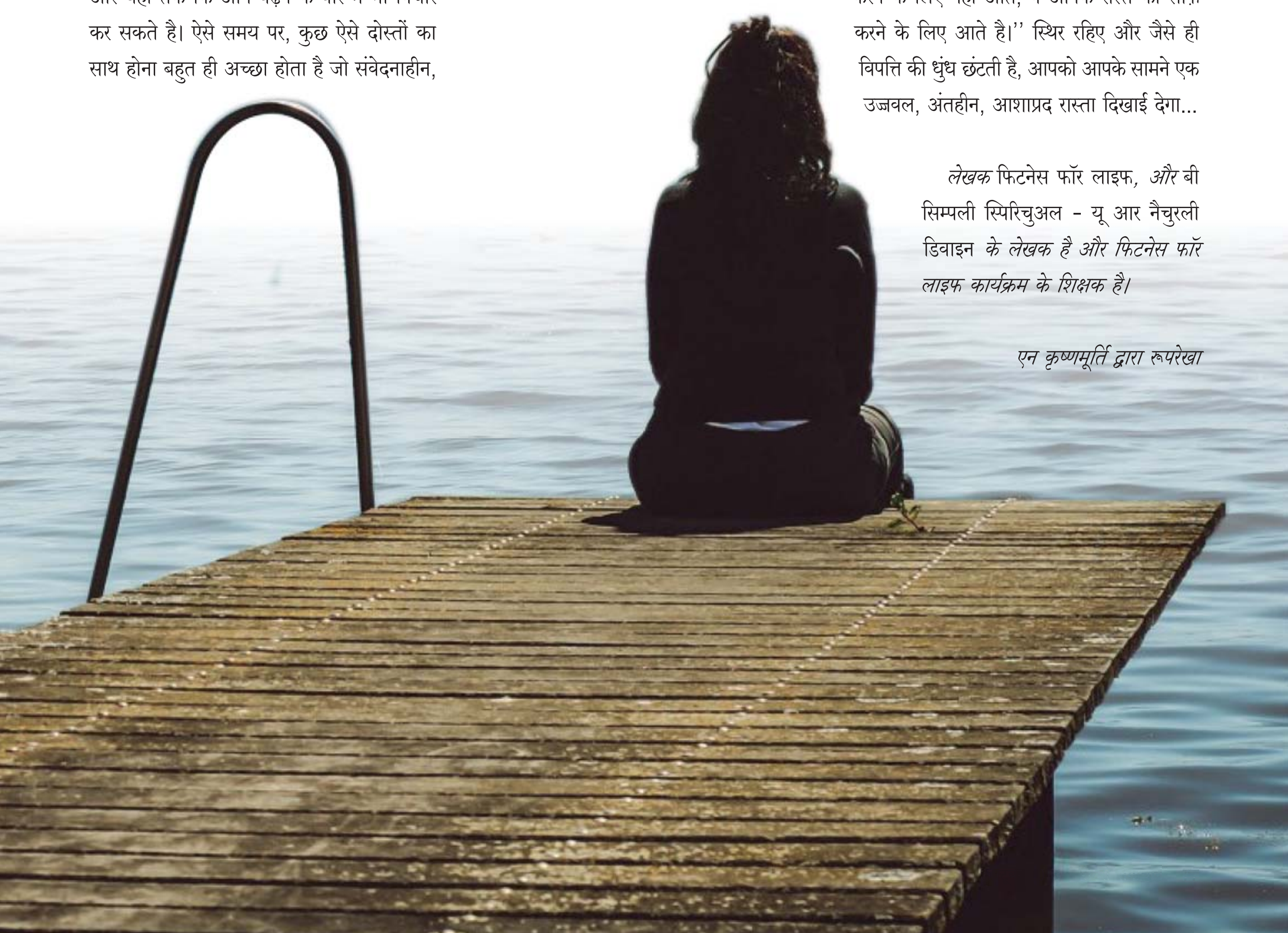

लेखक फिटनेस फॉर लाइफ, *और* बी सिम्पली स्पिरिचुअल - यू आर नैचुरली डिवाइन *के लेखक है और फिटनेस फॉर लाइफ कार्यक्रम के शिक्षक है।*

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

शब्दों की दुनिया

दिलचस्प पत्र व्यवहार

संध्या राव

हस्तलिखित पत्रों के आदान–प्रदान की खोई हुई कला कभी–कभी किताबों में पुनः प्राप्त होती है।

अमेरीकी इतिहासकार ऑड्री तृष्क हाल ही में भारत के लेक्चर दौरे पर थी। उन्होंने *औरंगज़ेब: दी मैन एंड दी मिथ* लिखी थी, जिसे इस कॉलम में मई अंक में छापा गया था। हुआ यह कि, हैदराबाद में उनका लेक्चर रद्द कर दिया गया क्योंकि कुछ प्रदर्शनकारियों ने कार्यक्रम में बाधा डालने की धमकी दी थी। जैसे ही उन्होंने फेसबुक पर पोस्ट किया, हैदराबाद पुलिस ने स्पष्ट रूप से आयोजकों को कार्यक्रम के बारे में सूचित किया कि ''अनेक व्यक्तियों ने मेरी उपस्थिति को लेकर पत्र लिखे थे। मैं विषेशरूप से हैदराबादियों से 1680 के दशक में औरंगजेब द्वारा दक्षिण के सुल्तानों पर किए गए क्रूर हमलों एवं दूसरी सहस्राब्दी की शुरुआत में भारतीय बौद्ध धर्म के खत्म होने के कारणों से संबन्धित तर्कों पर बात करना चाहती थी।'' इसे अगस्त के *न्यू इंडियन एक्सप्रेस* में प्रतिवेदित किया गया था।

जो भी हो, ऐसी घटनाओं से हम जितना भी व्याकुल हो, इस बात पर विचार करना दिलचस्प है कि पत्र अन्य अप्रिय मामलों के मध्य, शिकायतों, धमकियों और झूठी खबरों के वाहक होने के अलावा, लेखकों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाली शैली का एक महत्वपूर्ण तत्व है। मैंने हाल ही में एक प्यारा सा पत्र पढ़ा। उसका नाम था – होल्ड योर ब्रेथ – *दी गर्नसी लिटेरेरी एंड पोटैटो पील पाई सोसाइटी*, जिसे मेरी एन शेफर और एनी बेरोस द्वारा लिखा गया था। ब्लूम्सबरी द्वारा 2008 में पहली बार प्रकाशित इस किताब को हाल ही में दोबारा प्रकाशित किया गया; इसे एक फिल्म के रूप में भी रिलीज़ किया गया। वास्तव में, मैंने पहली बार नेटफ्लिक्स पर फिल्म देखी और तुरंत किताब पढ़ने के लिए उत्साहित हुई, हालांकि मैंने एक युवा मित्र से काफी पहले इसकी तारीफ सुनी थी। सच कहूं तो, उपन्यास का शीर्षक याद रखने के लिए एक चुनौती होने के साथ ही लुभावना नहीं था – और यह किताब ना पढ़ने का सबसे मूर्खतापूर्ण कारण है (किसी और वक्त इसके बारे में अधिक बात करेंगे!)।

गर्नसी, नोरमैंडी के तट से दूर इंग्लिश चैनल में एक द्वीप है जो चैनल द्वीपों का एक हिस्सा होने के साथ ही एक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जर्मन फौज ने चैनल द्वीपों पर कब्जा कर लिया था। लेकिन उनके आने के ठीक पहले, गर्नसी के अधिकतर निवासियों ने अपने बच्चों को इंग्लैंड में अपने रिशतेदारों और/या अजनबियों के साथ रहने के लिए भेज दिया था, ताकि वे सुरक्षित रह सके। युद्ध के अंत में, कुछ बच्चे अपने परिवारों से कभी नहीं मिल पाए। जब लंदन पर नाज़ियों द्वारा बमबारी करने का खतरा था, बहुत से बच्चों को उसी प्रकार ग्रामीण क्षेत्रों में भेज दिया गया था। अपने बच्चों को अलविदा कहते हुये परिवारों की तस्वीरें संग्रहित की गई है और इस निर्णय के परिणामस्वरूप इनमें से बहुत से बच्चों एवं उनके परिवारों द्वारा झेले गए सदमे के बारे में लिखा जा चुका है। उदाहरण के लिए, मिशेल मेगोरियन द्वारा लिखित *गुडनाइट मिस्टर टॉम* विशेषरूप से अपने परिवारों से बिछड़े बच्चों के बारे में है।

जर्मन, किसी कारण से, गर्नसी को एक सामरिक ठिकाना मानते थे और इसलिए वहाँ पर उनकी मौजूदगी ने स्थानीय लोगों की ज़िंदगियों को युद्ध के दौरान एवं बाद में प्रभावित किया। शेफर अचानक से गर्नसी गई और उन्हें वहाँ रुकना पढ़ा क्योंकि धुंध के कारण हवाई अड्डा बंद था। उन्होंने उस समय को गर्नसी एवं उसके इतिहास के बारे मे पढ़ने में व्यतीत किया और जो उन्होंने पढ़ा उससे इतना अधिक प्रभावित हुई कि उन्होंने इसके बारे में लिखने का निश्चय किया। जब उन्होंने अंततः इस लगभग ऐतिहासिक शानदार उपन्यास को विभिन्न पात्रों, जिनमें प्रमुख थी लेखक जूलिएट एश्टन, उनके प्रकाशक सिडनी स्टार्क, एक सूअर पालक डॉसी एडम्स और अन्य, के मध्य आदान-प्रदान किए गए पत्रों के साथ लिखा, तो उनके दौरे को लगभग 20 वर्ष हो चुके थे। दुर्भाग्यवश, किताब के प्रकाशित होने के ठीक पहले शेफर चल बसी, और इसे पूर्ण करना उनकी भतीजी एनी बेरोस पर था। किस्मत से, वह स्वयं भी एक शानदार लेखिका थी, तो उनके द्वारा उपन्यास को दिये गए अंतिम रूप ने उसके साथ न्याय किया। शेफर को बस इतना पता था कि वह उपन्यास 13 देशों में प्रकाशित किया जाएगा।

जैसा कि स्टीव डेविस 9 अगस्त 2008 *के दी गार्डियन* में लिखते हुये कुशाग्रता के साथ कहते है: *दी गर्नसी लिटेरेरी एंड पोटैटो पील पाई सोसाइटी* उन

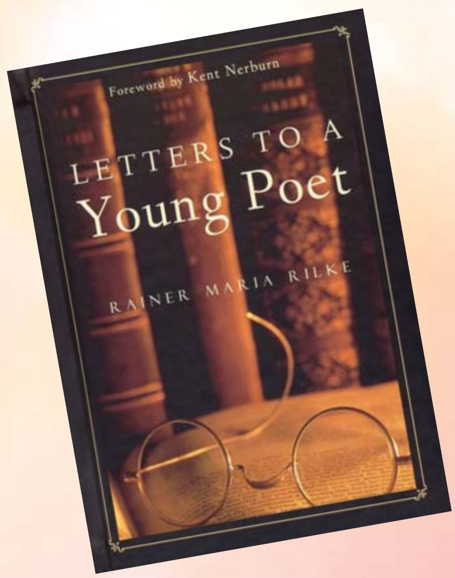

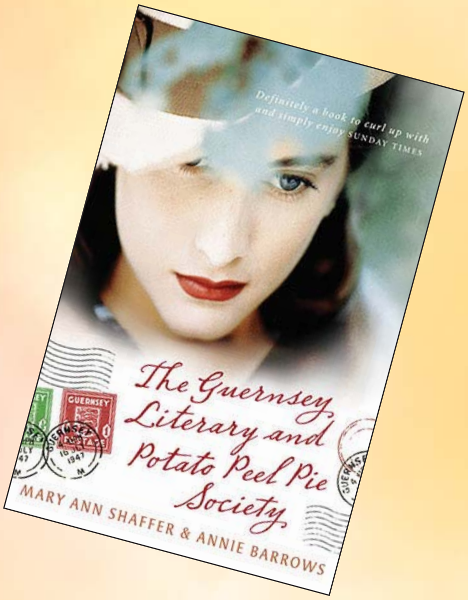

खूबसूरत आत्माओं को श्रद्धांजलि देती है जो कठिन समय में गुप्त रूप से छिपकर रही और अब हमारे बीच नहीं है। शेफर के गर्नसी के पात्र अनोखे और मनोरम हास्य, स्टेट ऑफ़ ग्रेस का एक कॉमिक संस्करण, के साथ अतीत की चमक से बाहर आते है। वे निर्दो ष है जिन्होंने मानवता की रक्षा करने वाली शराफ़त की परत में बुराई को घुसने की अनुमति दिए बिना, देखा और सहा...''

''गर्नसी के मृतक वापस नहीं आएंगे। शेफर का लेखन, उसकी कोमल असामान्यता, आत्म-विरोधात्मक शिष्टाचार के साथ, नजाकत से बदला गया है, जिसका श्रेय जेन ऑस्टेन को जाता है। इसके अतिरिक्त, वह काल चक्र के आचरण और विचार शैली की नकल करते हुये उसका आह्वान करने की एक विलक्षण क्षमता प्रदर्शित करती है - केवल बमबारी से पीड़ित लंदन के अनुस्मारकों में ही नहीं बल्कि किताब का आदर करने वाली संस्कृति के पुनर्जीवन में भी। यह उपन्यास की स्वर्णिम कॉमेडी के दिल में है। 1946 में किताबों की दुर्लभता हमें उस समय की याद दिलाती है जिसे हमने खो दिया है, जो रोक और अल्पव्यय के साथ समय की अधिकता से जुड़ा था। ऐसी संस्कृति में, हस्त-लिखित पत्र बहुमूल्य व्यक्तिगत उपहार है। प्रत्येक किताब, बैठक और पत्र का महत्व है, स्नेही सांकेतिक आकर्षण है, और यह कभी अल्पमूल्य की नहीं हो सकती।''

कहानी को कहने के लिए इस्तेमाल किया गया साहित्यिक शैली साधन - पत्र - इसे एक पत्रकाव्यगत उपन्यास के रूप में परिभाषित करता है। परंतु अकेले पत्र एक पत्रकाव्यगत उपन्यास नहीं बनाते: वे किसी भी प्रकार के दस्तावेज़ हो सकते है, जिनमें इलेक्ट्रोनिक दस्तावेज़ जैसे डायरी की प्रविष्टियाँ, अखबार की कटिंग, ब्लॉग्स एवं रिकॉर्डिंग्स शामिल है। बहुत से पत्रकाव्यगत कार्य मौजूद है, काल्पनिक एवं कथेतर दोनों प्रकार के। बचपन में, मेरे द्वारा पढ़े गए सबसे प्राथमिक उपन्यासों में से एक था जीन वेबस्टर द्वारा लिखित *डैडी-लॉन्ग-लेग्स*, जो पहली बार 1912 में प्रकाशित हुआ और अभी भी उत्कृष्ट रूप से पठनीय है। बेशक, कुछ लोग इसे लड़कियों की किताब कहेंगे, और इसकी उत्तर कथा, *डीयर एनिमी*, को भी। रैनर मारिया रिल्के (1875-1926) द्वारा लिखित लेटर्स *टू अ यंग पोयट* ऐसी नहीं है। यह ना काल्पनिक है, ना एक उपन्यास, बल्कि यह बोहेमियाई-ऑस्ट्रियाई कवि एवं उपन्यासकार द्वारा एक युवा महत्वाकांक्षी कवि फ्रांज़ ज़ेवर कप्पुस को लिखे गए दस वास्तविक, गंभीर पत्रों का एक सेट है। हालांकि रिल्के के कथन सभी के लिए प्रासंगिक है, भले ही वह लेखन के संदर्भ में सलाह देते है।

याद रखिए, रिल्के केवल 28 साल के थे जब उन्होंने कप्पुस के पत्रव्यवहार का जवाब देना शुरू किया था। पहले पत्र में उन्होंने क्या कहा था? वह कहते है: तुम पूछते हो कि तुम्हारी कविताएं अच्छी है

तुम बाहर की ओर देख रहे हो और, कोई भी तुम्हें ना सलाह दे सकता है और ना ही तुम्हारी मदद कर सकता है, कोई भी नहीं। केवल एक ही रास्ता है: अपने मन के अंदर झांकोंएक सच्चे जवाब के लिए अपने अंदर की गहराई तक जाओ।

या नहीं। तुम उन्हें प्रकाशकों के पास भेजते हो; तुम उनकी तुलना अन्य कविताओं के साथ करते हो; तुम परेशान हो जाते हो जब कुछ प्रकाशक तुम्हारे प्रयासों को अस्वीकार कर देते है। खैर अब, जब तुमने मुझे तुम्हें सलाह देने की इजाजत दी है, मैं सुझाव देता हूँ कि तुम यह सब छोड़ दो। तुम बाहर की ओर देख रहे हो और, सबसे पहले, तुम्हें ऐसा अभी नहीं करना चाहिए। कोई भी तुम्हें ना सलाह दे सकता है और ना ही तुम्हारी मदद कर सकता है, कोई भी नहीं। केवल एक ही रास्ता है: अपने मन के अंदर झांकोंएक सच्चे जवाब के लिए अपने अंदर की गहराई तक जाओ।

चौथे पत्र में, वह लिखते है: मेरे प्रिय मित्र, ''मैं तुमसे विनती करता हूँ, उतने ही अच्छे ढंग से जितना मैं कर सकता हूँ, कि अपने दिल की हर अनसुलझी चीज़ के प्रति धीरज रखो। स्वयं प्रश्नों से प्यार करने की कोशिश करो, जैसा कि बंद कमरे या जैसा किसी विदेशी भाषा में लिखी किताब। अभी जवाबों की तलाश मत करो। वे तुम्हें अभी नहीं दिये जा सकते क्योंकि तुम उन्हें सहन नहीं कर पाओगे। यह हर एक चीज़ का अनुभव करने का प्रश्न है।'' इतनी उत्तम समझ, इतना अद्भुत अन्तर्ज्ञान। कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि जैसे कवि वह थे वैसे क्यों थे।

थोड़ा खोजिए और आपको बहुत से ऐसे पत्रकाव्यगत कार्य मिलेंगे जो आपकी अनुभूतियों को हर्षित करेंगे और आपकी आत्मा को तृप्त करेंगे। उनकी खोज अवश्य कीजिये और कुछ पर सरसरी निगाह डालिए।

स्तंभकार बच्चों की लेखिका और वरिष्ठ पत्रकार हैं।

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

सफल क्लबों के लिए सर्वोत्तम अभ्यास

आदेश सिक्ची

रोटरी का अभिप्राय है सेवा और हमारा चार-चरणों वाला परीक्षण बताता हैं कि हमारे प्रत्येक कार्य से ज़रूरतमंदों को लाभ होना चाहिए। नवी मुंबई के रोटरी क्लब में, हमारे अधिकांश कार्यों और प्रक्रियाओं में इसे सिद्धांत को शामिल किया गया है। यहाँ हमने कुछ कार्यों का उल्लेख किया हैं।

भोजन कूपन बनाम गुलदस्ता/उपहार किसी भी मुख्य अतिथि को कोई उपहार/गुलदस्ता भेंट नहीं किया जाएगा। इसके बजाए हम मुख्य अतिथि द्वारा हस्ताक्षरित दोपहर के भोजन के लिए एक निः शुल्क कूपन उपलब्ध कराते हैं और उनकी तरफ से क्लब द्वारा ज़रूरतमंदों को मुफ्त में भोजन उपलब्ध कराया जाता है। हम वर्ष भर इन कूपनों को एकत्र करते हैं और भूखें और ज़रूरतमंदों को भोजन कराते हैं।

हरित निधि हमारे पास अपना परिसर है। नए पौधे लगाने के अतिरिक्त, हम दाताओं के नाम वाले वृक्षों को बनाए रखने पर भी जोर देते हैं। अपने जन्मदिन/वर्षगांठ पर बड़े उत्सव मनाने के बजाए, हम धन को जमा करते हैं और पौधों के देखभाल पर खर्च करते हैं। एक पेड़ की देखभाल करना या बढ़ने में मदद करना 100 छोटे पौधे लगाने के बराबर है, जिनमें से बहुत तीन वर्षों से कम समय तक जीवित रहते हैं, और उनकी यादें केवल तस्वीरों तक सिमट कर रह जाती हैं! हम निकट के क्लबों के अध्यक्षों के नाम पर एक पौधे लगाने की योजना बना रहे हैं। और अपने परिसर को निकट के क्लबों को उनका कार्यक्रम आयोजित करने के लिए किराए पर देने की योजना बना रहे हैं, जिससे वे महंगे होटल के किराए पर बचत कर सके। हम अन्य क्लबों के साथ संयुक्त कार्यक्रमों को प्रोत्साहित करके भी व्यय को भी कम करते हैं। हमारा लक्ष्य प्रति वर्ग फुट दान को अधिकतम बनाना है। इसलिए, हम अपने रोटरी हॉल में चिकित्सा केंद्र, हरित पौधशाला, योग कक्षाएं आदि संचालित करते हैं।

एक ही जहाज पर परिवार और फैलोशिप दोनों यात्रा करते हैं रोटेरियन के परिवार के सदस्यों को शामिल कर, हम अपने परिवार की सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करते हैं। हम रोटेरियन की पत्नी को समारोह, औपचारिक गीत, समारोहों के संचालक या धन्यवाद ज्ञापन जैसी गतिविधियों में शामिल करते हैं। इस तरह हम पारिवारिक दबाव के कारण रोटेरियन को बाहर जाने से रोकने में सक्षम हैं।

रोम में रहते हुए, रोमन की तरह दिखाई देते हैं मसूट-टाईफ संस्कृति के बजाय, जो हमें आम आदमी से दूर ले जाता हुआ प्रतीत होता है, हम अपने सामुदायिक सेवा कार्यक्रमों के लिए रोटरी टी-शर्ट पहनने को महत्त्व देते हैं।

असामान्य के साथ सामान्य बने अधिकांश सिविल कर्मचारी जैसे पुलिस, बस चालक आदि कठिन परिस्थितियों (धूल, शोर और गर्म जलवायु) में निरंतर काम करते हैं। हमने रोटरी साइनेज के साथ पुलिस स्टेशनों में एसी और पंखा उपलब्ध कराने जैसी विशेष परियोजनाएं तैयार की हैं। इससे हमें सिविल सेवकों से सम्मान प्राप्त हुआ है। रोटरी के चक्र को केवल क्लब और समुदाय के संयुक्त प्रयास से ही गतिशील बनाया जा सकता है। क्लब का तीलियाँ है और चक्र तथा समुदाय, इसका केंद्र हैं।

लड़ाई जीतने के लिए, लड़ाई में शामिल हो: क्लबों को अपनी परियोजनाओं के स्थिरता का मूल्यांकन करना चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि सेवा उन लोगों को उपलब्ध कराया जा रहा है, जिन्हें वास्तव में उसकी आवश्यकता है। धन दान करना या दयालु होना बहुत आसान है और इस बात से संतुष्ट होना भी आसान है कि हमने अपना कार्य किया है। लेकिन सदस्यों को वास्तव में उस समुदाय के नियमित दौरा करना चाहिए जिसके लिए वे काम करते हैं और उन्हें कार्यों की निगरानी भी करनी चाहिए।

मशाल को प्रज्ज्वलित करने के लिए उनका नेतृत्व करें न्यूनतम सेवा परियोजनाओं को निष्पादित करने के दबाव को सदस्यों द्वारा योगदान दिए जाने वाले मूल्यवान निधि के साथ संतुलित किया जाना चाहिए। हमें ''वास्तविक जरूरतमंद'' तक पहुंचना चाहिए। परियोजना के आरंभ से क्लब के निदेशकों को शामिल करें, इस हद तक कि वे सेवा परियोजना समारोह के दौरान मुख्य अतिथि बने। सम्मान के साथ स्वीकार की गई ज़िम्मेदारी के माध्यम से आप अपने टीम/निदेशकों से सर्वश्रेष्ठ प्राप्त कर सकते है। यह क्लब के लिए उचित उत्तराधिकार योजना रखने की नींव रखता है। एक एक अनिच्छुक/अयोग्य व्यक्ति के बजाइ एक योग्य व्यक्ति को संयुक्त निदेशक के रूप में नियुक्त करें।

आईपीपी राजीव मणियार और अध्यक्ष आनंद ध्रुव के सहयोग से हमने उपर्युक्त उपरोक्त प्रथाओं को सफलतापूर्वक कार्यान्वित किया है और आने वाले वर्षों में इसे जारी रखने की योजना बनाई है।

लेखक रोटरी क्लब नवी मुंबई, मंडल 3142 के अध्यक्ष निर्वाचित किए गए हैं।

चेन्नई का फैशनेबल व्यक्ति

टीसीए श्रीनिवासा राघवन

पिछले महीने मुझे चेन्नई में एक सादा परन्तु भव्य समारोह में जाने का अवसर मिला, मेरे नाम से भले ही लगता हो, पर चेन्नई मेरा घर नहीं है, ना ही मेरा मगृहनगरफ है ,जैसा की सरकार इसकी व्याख्या करेगी। मेरे लिए चेन्नई वो जगह है जो हमेशा याद दिलाती रहेगी कि दिल्ली या फिर मुंबई की अपेक्षा जीवन जीने के और भी अधिक शिष्ट तरीके हैं।

रिकॉर्ड की बात करें तो, मैं 60 साल से भी ज़्यादा, 7 मई, 1958 से दिल्ली में रह रहा हूं। जैसे अमिताभ बच्चन ने एक हिंदी फिल्म में अपनी हास्यास्पद अंग्रेजी के बारे में बताया था, ''आई कैन टॉक दिल्ली, आई कैन वाक दिल्ली, क्योंकि दिल्ली इज़ ए वैरी फन्नी सिटी।'' विशेषकर तब, जब बात ड्रेसिंग की आती है क्योंकि दिल्ली में महिलाएं ही पूरे ठाट-बाट के साथ सजधज कर नहीं निकलती हैं - ठीक कॉलिन पॉवेल की 'शॉक एंड ऑ' फिल्म जैसा प्रभाव - पुरुष भी पूरी तरह से आत्मसंतुष्ट दिखते हैं जैसे पंख फैलाये मोर।

दिल्ली में महिलाएं ही पूरे ठाट-बाट के साथ सजधज कर नहीं निकलती हैं - ठीक कॉलिन पॉवेल की 'शॉक एंड ऑ' फिल्म जैसा प्रभाव - पुरुष भी पूरी तरह से आत्मसंतुष्ट दिखते हैं जैसे पंख फैलाये मोर।

दिल्ली की यह प्रथा मेरे और मेरी पत्नी के बीच काफी मतभेद का विषय रहा है। इसका कारण यह है कि स्कूल में हमारी वर्दी सलेटी पैंट और सफेद शर्ट थी। कॉलेज में, जब छात्रावास में रहा,तो इस मेलको बदलने में भी मुझे कोई फायदा नहीं दिखा और जब तक मुझे नौकरी मिली, तो यह मेरा पहनावा बन चुका था। पिछले 60 वर्षों से मैं सिर्फ सफ़ेद खादी की बुश्शर्ट पहन रहा हूँ।

हालांकि, ये किसी के साथ भी हो सकता है, जो पहनावे पर ध्यान नहीं देते, नौकरी मिलने के तुरंत बाद मेरी एक प्रेमिका बनी। मेरे कपड़ों के बारे में शिकायत की शुरूआत करने में उसे बहुत ज़्यादा वक़्त नहीं लगा। उसने कहा, ये एक दम बेरंग, नीरस, और पुराने भी। उसने मुझसे जूते पहनने के लिए भी कहा पर मैंने कहा था कि अगर वो भी जूते पहनने के लिए तैयार हो तो मैं पहन लूंगा। खैर जूते का मुद्दा तो सुलझ गया लेकिन कई हफ्ते लगातार बड़बड़ाने के बाद, एक दिन, वो मेरे लिए दो बुश्शर्ट खरीद लाई एक चटख पीली और दूसरी चटख नीले रंग की। दोनों में चैक्स बने हुए थे पर अपने प्यार की बढ़ती जा रही चिड़चिड़ाहट रोकने और शांति बनाये रखने के लिए मजबूरी में मुझे उटपटांग कपडे पहनने पड़े।

लेकिन भाग्य भी बेबसों का साथ देता है, करीब एक साल बाद, वो मुझसे थक गई और मैं वापस अपनी पसंद पर आ गया। मुझे इस एपिसोड की याद इसलिए आ गई क्योंकि लंबे समय से चेन्नई में इस तरह के किसी समारोह में नहीं गया, मैं भूल गया था कि मैं दिल से कितना ज़्यादा चेन्नई का हूँ। जब तक पत्नियाँ, बहनें और बेटियां आ चुकी थीं और खूबसूरत लग रही थीं और पुरुष हमेशा की तरह सामान्य - मुझे बताया गया था - जैसे वे ऑफिस जा रहे हों, ये सच भी था, वास्तव में उनमें से कई ऑफिस ही जा रहे थे क्योंकि यह आयोजन सुबह 8 बजे था।मैं भी बिल्कुल वैसे ही तैयार हुआ था-ग्रे पतलून और एक ऑफ-व्हाइट बुश्शर्ट। ऑफ-व्हाइट क्योंकि - दिल्ली की हवा में धूल और अन्य प्रदूषकों की वजह से, सफेद बुश्शर्ट जल्द ही भूरी हो जाती है जिसे मैं फैशन के लिहाज़ से ऑफ-व्हाइट कहता हूं।

उस विशाल हॉल में महिलाओं और पुरुषों के बीच ज़्यादा फर्क नहीं था, खासकर दिल्ली वाली मेरी नज़रों के लिए। यदि आप उन्हें पीछे से देखें तो कभी-कभी महिलाओं और पुरुषों में अंतर करना मुश्किल हो जाताहै। असल में, मैं कई पुरुषों को जानता हूं जो केवल कुर्ता-पजामा के सेट पर ₹20,000 खर्च करते हैं, वो भी सिर्फ एक या दो बार पहनने के लिए।

लेकिन मुझे लगता है, ऐसा चेन्नई में नहीं है। दरअसल, मुझे वो समय भी याद है जब पुरुष सिर्फ धोती में आया करते थे और शरीर पर कुछ भी नहीं पहना होता था। पर ये हर जगह एयर कंडीशनिंग होने से पहले की बात है। अब चेन्नई मैन ने इस का आगमन स्वीकार कर लिया है। वह अब *जुब्बा* या *चेट्टाई* पहनता है, आमतौर पर सफ़ेद। उसके लिए फैशन की चरम सीमा यही है। ■

LATIM

COLOUR COATED STEEL

Coloured steel that stands the test of time

LATIM's high quality galvanized / galvalume colour coated steel coils available in various designs, thickness, size & colours can be used for various applications - Roofings, Claddings, Crimping, Furnitures, False Ceilings, Shutter Doors, Vehicle Bodies, Decorative Container & Trunks, etc. **Ideal for Interior and Exterior Applications.**

Colour coating Plant at Umbergaon, Gujarat

- **Colour coated roofing sheet in various profiles design available on special request**
- **Available in various thickness, sizes and colours.**

LATIM GROUP

Corporate Office : 401, Navkar Plaza, 4th Floor, Bajaj Road, Vile Parle (West), Mumbai - 400056.
Tel : (022) 26202290, 26203399, 26203434, 26201166

Works : Industrial Plot No. 270, 271, GIDC, Umbergaon, Valsad. Gujarat - 396171

- E-mail : sales@latimsourcing.com
- Web : www.latimprofile.com

Signature Advertising

एक बादल भरे आकाश के नीचे

कोलकाता में एक खत में यह आदमी एक बादल भरे आकाश का आनंद लेते हुए।

चित्र : रोटेरियन राकेश भाटिया

Regn. No. TN/CCN/359/2018-2020
Licensed to post WPP No.TN/PMG(CCR)/WPP-421/2018-2020
Total number of pages in this monthly issue, including cover, 84. Price: ₹35
Registered with Registrar of News Papers for India TNHIN/2001/05271 Rotary Samachar Published on 1st of every month

ADVT

SIGNATURE PROJECTS
OF ROTARY DISTRICT 3012

Rotary District 3012 | BE THE INSPIRATION R.I. THEME 2018-19

Subhash Jain AKS
District Governor 2018-19

ROTARY VARDAN BLOOD BANK

RUN BY :
- RC SAHIBABAD
- RC GHAZIABAD GREATER
- RC GHAZIABAD INDUSTRIAL TOWN

ROTARY PATHLAB & DIAGNOSTIC CENTRE
RUN BY RC DELHI VIKAS

ROTARY CHARITABLE DIALYSIS CENTRE
RUN BY RC DELHI SHAHDRA

ROTARY NOIDA BLOOD BANK
RUN BY RC NOIDA

AKS & Major Donors *Dinner*

Sunday, 9th September 2018
Hotel Radisson Blu, Kaushambi Ghaziabad